www.understandquran.com

UNDERSTAND AL-QURAN ACADEMY

90%* क़ुरआनी अल्फ़ाज़

आओ क़ुरआन समझें – आसान तरीक़े से

कोर्स: 4 - सूरह अल-बक़रा (आयात: 77-105)

इन्शा-अल्लाह, इस कोर्स के बाद आप क़ुरआन मजीद के तक़रीबन **90** फ़ीसद से ज़ायद अल्फाज़ समझने लगेंगे
(*अगर आप सूरतुल बक़रा और उसके बाद वाली सूरतों को पढ़ना जारी रखेंगे)

तालीफ़
डा० अ़ब्दुलअ़ज़ीज़ अ़ब्दुर्रहीम
बानी व डायरेक्टर: अन्डरस्टैण्ड अल-क़ुरआन एकेडमी

www.understandquran.com

इशारात TPI के ज़रिया
(सूरह अल-बक़रा पेज: 11-15)

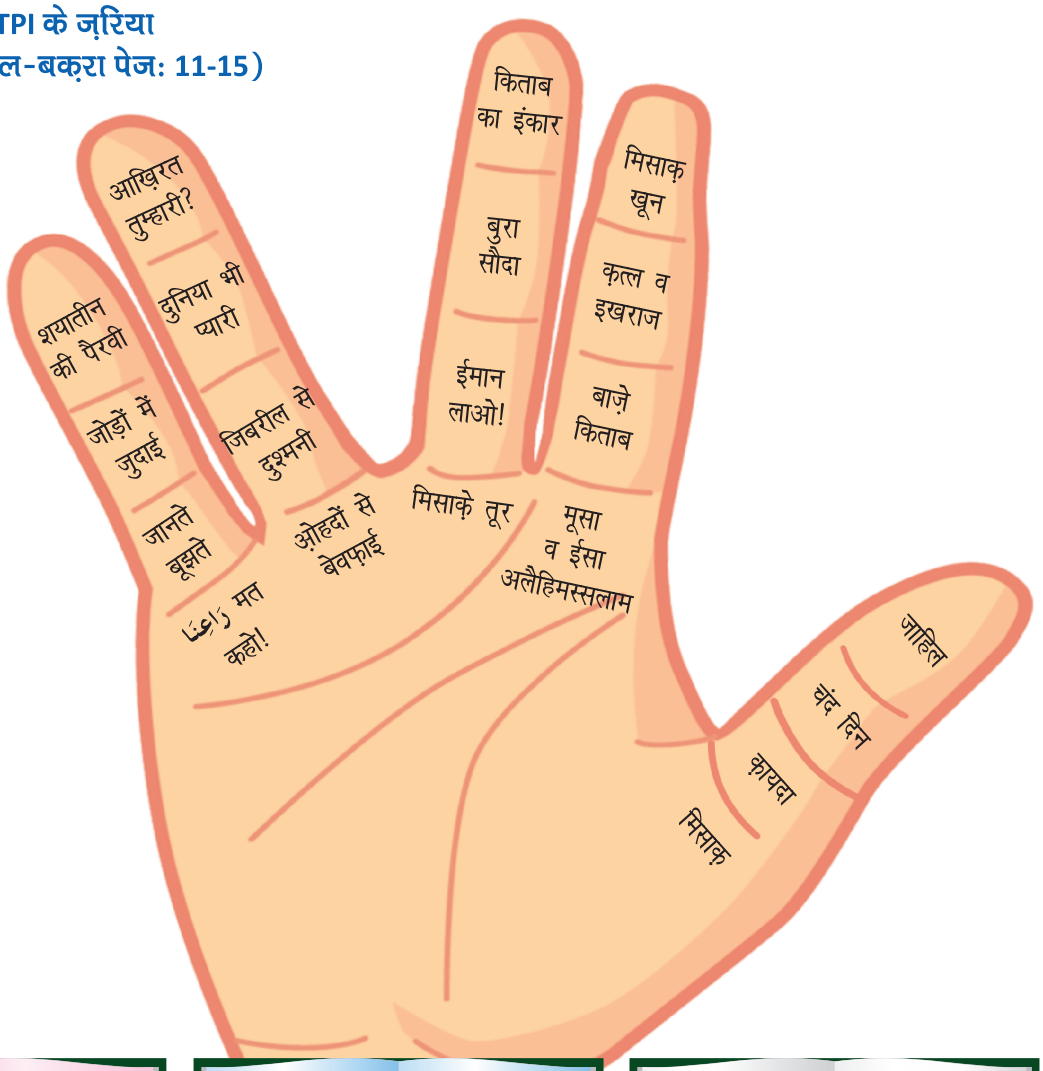

पेज 15	पेज 14	पेज 13	पेज 12	पेज 11 अल-बक़रा

बनी इसराईल का ज़िक्र

जिन्हों ने हिदायत की क़द्र नहीं की।

कुरआन को हमारी ज़िंदगी में लाने के लिए एक सादा तरीक़ा

www.understandquran.com

UNDERSTAND AL-QUR'AN ACADEMY

*90% से ज़ायद
क़ुरआनी अल्फ़ाज़

आओ क़ुरआन समझें

आसान तरीक़े से

कोर्स-4: सूरह अल-बक़रा (आयात: 77-105)

इन्शा अल्लाह, इस कोर्स के बाद आप क़ुरआन मजीद के
90 फ़ीसद से ज़ायद क़ुरआनी अल्फ़ाज़ समझने लगेंगे

इस के अलावा अ़रबी के मज़ीद ग्रामर (सर्फ़ और बुन्यिादी नह्व के क़वायद) भी जान लेंगे

तालीफ़

डा0 अब्दुलअ़ज़ीज़ अब्दुर्रहीम
बानी व डायरेक्टर: अन्डरस्टैण्ड अल-क़ुरआन एकेडमी

www.understandquran.com

© EduSuite Solutions Private Limited

इस किताब के किसी भी हिस्से की बग़ैर इजाज़त कॉपी, तक़सीम और किसी भी वेबसाइट पर अपलोड करना मना है।

किताब आओ क़ुरआन समझें आसान तरीक़े से
कोर्स-4: सूरह अल-बक़रा (77-105) 90 फ़ीसद से ज़ायद क़ुरआनी अल्फ़ाज़

तालीफ़ डा0 अब्दुलअ़ज़ीज़ अब्दुर्रहीम
डायरेक्टर: अन्डरस्टैण्ड अल-क़ुरआन एकेडमी

नाशिर EduSuite Solutions Private Limited

एडीशन मार्च 2021, तादाद: 1000

सफ़हात 120

Publisher
EduSuite Solutions Private Limited
Plot No. 13-6-434/B/41, 2nd Floor, Omnagar,
Langar House, Hyderabad - 500 008.
Telangana - INDIA
Ph.: +91- 9652 430 971 /+91-40-23511371
Website: www.understandquran.com
Email: info@understandquran.com

रिसर्च व डेवलपमेंट टीम
मोहसिन सिद्दीक़ी
मोहम्मद फ़ुरक़ान फ़लाही, आमिर इरशाद फ़ैज़ी
अब्दुलक़ुद्दूस उमरी,
इरशाद आलम नदवी

एडवाइज़रस
ख़ुरशीद अनवर नदवी
फ़ाज़िल दारूलऊलूम नदवतुल-उलमा
कामिल जामिया निज़ामिया

मुआविनीन
डॉक्टर अबदुलक़ादिर फ़ज़लानी
ख़्वाजा निज़ामुद्दीन अहसन, अबदुर्रहीम नईमुद्दीन
मोहम्मद यूनुस जामई

हिंदी टाइपिंग
तूबा मज़हर ज़हरावी

अरबी फॉन्ट डिज़ाइनर
शकील अहमद मरहूम (अल्लाह उनकी क़ब्र को नूर से भर दे),
आयशा फ़ौज़िया

ग्राफ़िक़ डिज़ाइनर
कफ़ील अहमद फ़ैज़ी

क़ुरआनी (अल्फ़ाज़) तादाद व शुमार
तारिक़ अज़ीज़, मुज्तबा शरीफ़ www.corpus.quran.com

www.understandquran.com

بسم الله الرحمن الرحيم

फ़ेहरिस्ते मज़ामीन

सबक़ नम्बर	क़ुरआन	सफ़्हा नम्बर		ग्रामर (क़वाइद)	सफ़्हा नम्बर	
		टेक्स्टबुक	वर्कबुक		टेक्स्टबुक	वर्कबुक
	अहम हिदायात	IV				
	एकेडमी का तआ़रूफ़	V				
	पेशे लफ़्ज़	VI				
11a	तआ़रुफ़, अन-पढ़ और पढ़े लिखों का ह़ाल (अल-बक़राः 77-79)	8	90	तआ़रुफ़ और ज़मायर (मोअन्नस)	52	110
11b	आग सिर्फ़ चंद दिन (अल-बक़राः 80)	12	91	फ़ेअ़ल माज़ी, मुज़ारे, अमर बराए मोअन्नस (3 ह़र्फ़ी अफ़्आ़ल)	54	110
11c	क़ायदा आग और जन्नत का (अल-बक़राः 81-82)	14	92	फ़ेअ़ल माज़ी, मुज़ारे, अमर बराए मोअन्नस (3 मज़ीद फ़ीह अफ़्आ़ल)	55	111
11d	मीसाक़े बनीइसराईल (अल-बक़राः 83)	16	93	दो के लिए सेग़े (ज़मायर और फ़ेअ़ले माज़ी)	56	111
12a	मीसाक़े ख़ुन (अल-बक़राः 84)	18	94	दो के लिए सेग़े فعل مضارع، أمر ونهي، اسم فاعل ومفعول	57	112
12b	क़त्ल व इख़्राज (अल-बक़राः 85)	20	95	फ़अ़ले मजहूल	59	112
12c	बाज़ किताब पर ईमान? (अल-बक़राः 85-86)	22	96	كَرُمَ، حَسِبَ का वज़न	61	113
12d	मूसा व ईसा عليهما السلام और रसूलों से सुलूक? (अल-बक़राः 87-88)	24	97	इस्मे मकान	62	113
13a	किताब आने पर इंकार (अल-बक़राः 89)	26	98	सिफ़त, तफ़्ज़ील, मुबालिग़ा के अल्फ़ाज़	63	114
13b	बुरा सौदा कुफ़्र का (अल-बक़राः 90)	28	99	जमा तक्सीर (1)	64	114
13c	ईमान लाओ (अल-बक़राः 91-92)	30	100	जमा तक्सीर (2)	68	115
13d	मिसाक़, तूर उठा कर (अल-बक़राः 93)	32	101	لَمْ+ مُضَارع तीन ह़र्फ़ी अफ़्आ़ल के साथ	70	115
14a	आख़िरत सिर्फ़ तुम्हारी (अल-बक़राः 94-95)	34	102	لَمْ+ مُضَارع मज़ीद फ़ीह अफ़्आ़ल के साथ	72	116
14b	ज़िंदगी भी प्यारी (अल-बक़राः 96)	36	103	شرطية الفاظ: إِنْ، مَنْ، مَا، तीन ह़र्फ़ी अफ़्आ़ल के साथ	74	116
14c	जिब्रील अ़लैहिस्सलाम से दुश्मनी (अल-बक़राः 97-99)	38	104	شرطية الفاظ: إِنْ، مَنْ، مَا، मज़ीद फ़ीह अफ़्आ़ल के साथ	77	117
14d	अ़हद व किताब को फेंका (अल-बक़राः 100-101)	40	105	फ़ेअ़ल मुज़ारे के साथ "ل" की क़िसमें	79	117
15a	शयातीन की पैरवी (अल-बक़राः 102)	42	106	لن+مضارع तीन ह़र्फ़ी अफ़्आल के साथ	82	118
15b	जोड़ों में जूदाई (अल-बक़राः 102)	44	107	لن+مضارع मज़ीद फ़ीह अफ़्आल के साथ	84	118
15c	जानते बूझते बूरा सौदा (अल-बक़राः 102-103)	46	108	जुमला इस्मिाया (मुज़क्कर)	86	119
15d	رَاعِنَا मत कहो! (अल-बक़राः 104-105)	48	109	जुमला इस्मिया (मोअन्नस)	87	119

www.understandquran.com

अहम हिदायात

इस कोर्स को मुअस्सिर अंदाज़ में इस्तिमाल करने के लिए चंद अहम हिदायात।

- इस बात की बहुत अहमियत के साथ ताकीद की जाती है कि इस कोर्स को पढ़ने से पहले आप हमारे कोर्स-**1** और कोर्स-**2** को मुकम्मल कर लीजिए।
- यह पूरी तरह तआ़मुली **(interactive)** कोर्स है; इस लिए जो कुछ भी आप पढ़ें या सुनें उस की अ़मली मशक़ कीजिए।
- मशक़ के दौरान होने वाली ग़लतियों की वजह से परेशान न हों, इब्तिदा में हर किसी से ग़लती हो ही जाती है।
- जो ज़्यादा मशक़ करेगा वह उतना ही ज़्यादा सीखेगा, चाहे मशक़ के दौरान ग़लतियाँ हुई हों।
- यह सुनहरी क़ायदा याद रखिए:

I listen, I forget, I see, I remember. I practice, I learn. I teach, I master.

- हर सबक़ के बाद ग्रामर भी मौजूद है। ग्रामर का हिस्सा अस्ल अस्बाक़ से बिलावास्ता मुतअ़ल्लिक़ नहीं है क्योंकि इस सूरत में कोर्स पेचीदा हो जाता और बहुत मुम्किन था कि क़ुरआन के अस्बाक़ को शुरूअ़ करने से पहले हमें ग्रामर को अलग से पढ़ाने की ज़रूरत पड़ती। दरअस्ल ग्रामर का हिस्सा असल सबक़ के दौरान पढ़े जाने वाले अल्फ़ाज़ में अ़रबी क़वायद की ततबीक़ को बयकवक़्त मज़बूत करता रहता है। यही वजह है कि चंद अस्बाक़ के मुकम्मल होने पर ख़ुद आप को सूरतों या अज़्कार के पढ़ने के दौरान ग्रामर के फ़वायद नज़र आने लगेंगे।

मुंदरिजा ज़ैल सात होम वर्क्स करना हरगिज़ न भूलिए:

दो तिलावत के

1. कम अज़ कम **5** मिनट मुसह़फ़ (क़ुरआन देख कर तिलावत करना)।
2. कम अज़ कम **5** मिनट बग़ैर देखे अपने ह़ाफ़िज़े से (जो भी याद हो) तिलावत करना।

दो मुतालआ़ (Sudy) के:

3. कम अज़ कम **10** मिनट इस किताब का मुतालआ़ कीजिए। (मुबतदी ह़ज़रात के लिए)
4. कम अज़ कम सिर्फ़ आधा मिनट अल्फ़ाज़ व मआ़नी की शीट का हर नमाज़ के बाद या अपनी सहूलत के मुताबिक़ किसी वक़्त मुतालआ़ कीजिए। और इस कोर्स के मुकम्मल होने तक इस किताबचा को हमेशा अपने साथ रखिए।

दो सुनने और सुनाने के

5. इन आयात की लफ़्ज़ी तर्जमा के साथ कोई रिकार्डिंग सुनिए। आप इसे सफ़र करते हुए कार वग़ैरा में, या घर के कामों को करने के साथ साथ भी सुन सकते हैं। या आप ख़ुद अपनी आवाज़ में इस कोर्स के अस्बाक़ को रिकॉर्ड कर के बार-बार सुन सकते हैं।
6. दिन में कम अज़ कम एक मिनट अपने घर वालों, दोस्तों, क्लास के साथियों के साथ सबक़ के तअ़ल्लुक़ से गुफ़्तगू कीजिए।

और एक इस्तिमाल करने का:

7. रोज़ाना सुन्नत या नफ़्ल नमाज़ों में मुख़्तलिफ़ सूरतों की तिलावत कीजिए, इस का मक़सद यह है कि आप रोज़ाना की नमाज़ों में एक ही सूरह को बार-बार न पढ़ते रहें।

मुख़्तलिफ़ औक़ात में अल्लाह तआ़ला से बार-बार दुआ़ करने की आ़दत डालिए:

1. ख़ुद के लिए दुआ़ (رَبِّ زِدْنِیْ عِلْمًا) और
2. अपने साथियों के लिए दुआ़ कि अल्लाह हमारी और उन की क़ुरआन को सीखने में मदद फ़रमाए।

याद रखिए कि सीखने का सब से बेहतरीन तरीक़ा यह है कि सिखाया जाए, और किसी को सिखाने का बेहतरीन तरीक़ा यह है कि उसे भी टीचर बना दिया जाए। आप ख़ुद भी टीचर बन सकते हैं। आप हमारी वेबसाइट पर जाईए और वहाँ से पी-पी-टी फाइल्स डाउन-लोड कीजिए, वीडीयो देखिए और जिस तरह़ पढ़ाया गया है, बस उसी तरह़ पढ़ाईए। अपनी तरफ़ से कोई शरह़ बढ़ाने से पहले उलमा से चेक कर लीजिए, वर्ना दी हुई शरह़ को ही इस्तिमाल कीजिए, इन्शा अल्लाह यह काफ़ी है और उल्माए किराम ने इस को चेक किया हुआ है।

www.understandquran.com

"अन्डरस्टैन्ड अल-कुरआन एकेडमी" का तआ़रूफ़

www.understandquran.com

एकेडमी के मक़ासिदः (1) कुरआन से दूरी को दूर किया जाए और ऐसी नस्ल की तैयारी में मदद की जाए जो कुरआन को पढ़े, समझे, अ़मल करे और दूसरों तक इस के पैग़ाम को पहुँचाए (2) कुरआन को सब से दिलचस्प आसान मुअस्सिर और रोज़ाना की ज़िंदगी में सब से ज़्यादा काम आने वाली दुनियाँ और आख़िरत की कामयाबी का रास्ता दिखाने वाली किताब के तौर पर पेश किया जाए (3) रसूलुल्लाह ﷺ की मुहब्बत व अ़ज़मत पैदा करने की नियत से अहादीस की बुनियादी तालीम फ़राहम की जाए (4) कुरआन पाक को आसान अंदाज़ में तज्वीद के साथ पढ़ना सिखाया जाए (5) स्कूल्स, मदारिस, मकातिब और आ़म लोगों के लिए ज़रूरी चीज़ें (किताबें, CD, पोस्टर्स वग़ैरा) उलमा की निगरानी में तैयार किए जाएँ और उन्हें एक निसाब के तौर पर पेश किया जाए (6) मशग़ूल और तिजारत पेशा अफ़राद के लिए मुख़्तसर मुद्दती कोर्सेस (शॉर्ट कोर्सेस) मुनअ़क़िद किए जाएँ (7) सीखने सिखाने के आसान और नए तरीक़ों को इस्तेमाल करते हुए कुरआन के सीखने को आसान बनाया जाए।

वाज़ेह़ रहे कि इस का मक़सद कुरआनी ऊलूम के माहिरीन को तैयार करना नहीं है क्योंकि यह काम माशा अल्लाह दीगर मदारिस और इदारे कर रहे हैं बल्कि इस का मक़सद यह है कि आम मुसलमान और स्कूल्स के तलबा कुरआन के बुनियादी पैग़ाम को समझ सकें।

***यह काम क्यों*:** ग़ैर अ़रब मुसलमानों की अक्सरियत कुरआन को नहीं समझती है। आज की नस्ल के लिए कुरआन से तआ़रुफ़ इन्तेहाई ज़रूरी है क्योंकि एक तरफ़ तो बेहयाई का तूफ़ान है जिस में किसी की बात का असर उतना नहीं हो सकता जितना अल्लाह के कलाम का होगा, और दूसरी तरफ़ तक़रीबन हर तरफ़ से दीने इस्लाम, मोह़म्मद ﷺ की ज़ाते अक़दस और कुरआन करीम पर ह़मलों का सिलसिला जारी है, पूरी कोशिश की जा रही है कि मुसलमानों का ईमान कुरआन से ख़त्म हो जाए या कमज़ोर हो जाए और वह अल्लाह व रसूल से ग़ाफ़िल हो जाएँ। इन ह़ालात में हमारे लिए ज़रूरी है कि हम नई नस्ल को कुरआन समझाएँ और उन को बुनियादी ऐतेराज़ात का मुक़ाबला करने के क़ाबिल भी बनाएँ, इन्शा अल्लाह जब वह कुरआन समझेंगे तो अपनी दुनिया व आख़िरत में कामयाब होंगें और दूसरों को भी इस की दावत पेश कर सकेंगे।

मुख़्तसर तारीख़: 1998 में www.understandquran.com बनाई गई। अल्ह़म्दुलिल्लाह उस वक़्त से कुरआन मजीद को आसान और मुअस्सिर तरीक़ों के ज़रिया समझने और समझाने के लिए मुख़्तलिफ़ किताबों की तैयारी या उन के तराजिम पर काम किया जा रहा है। कुरआन फ़हमी का पहला कोर्स (पचास फ़ीसद कुरआनी अल्फ़ाज़) तक़रीबन 25 मुख़्तलिफ़ ममालिक में पढ़ाया जा रहा है और इस का तक़रीबन 20 आ़लमी ज़बानों में तर्जमा भी किया जा चुका है। इस के अ़लावा यह कोर्स पाँच मुल्कों व आ़लमी टीवी चैनल्स पर भी नशर किया जा चुका है। इस वक़्त तक़रीबन 2000 से ज़ायद स्कूल्स में "आओ कुरआन पढ़ें तज्वीद के साथ" और "आओ कुरआन समझें आसान तरीक़े से" के कोर्सेस जारी हैं। अल्ह़म्दुलिल्लाह

अल्लाह के रसूल ﷺ ने फ़रमायाः "بَلِّغُوا عَنِّيْ وَلَوْ اٰيَةً" (पहुँचा दो मेरी तरफ़ से अगरचः एक आयत ही हो) तो आईए हम सब मिल कर इस काम को आगे बढ़ाएँ! आप जहाँ भी हों, कोशिश करें कि इस कोर्स को सीखें और वहाँ की मस्जिद, मोह़ल्ले, स्कूल्स, मदरसे वग़ैरा में इसका तआ़रुफ़ कराएँ और बच्चों और बड़ों को इस अहम काम से जोड़ें। अल्लाह से दुआ़ है कि वह अपनी अ़ज़ीमुश्शान किताब की ख़िदमत में किए गए हमारे इन छोटे मोटे कामों को क़बूल करे, हमें रियाकारी और दूसरे तमाम गुनाहों से बचाए और ग़लतियों से मह़फ़ूज़ रखे। आमीन

رَبَّنَا تَقَبَّلْ مِنَّا اِنَّكَ اَنْتَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ، وَتُبْ عَلَيْنَا اِنَّكَ اَنْتَ التَّوَّابُ الرَّحِيْمُ، وَاغْفِرْ لَنَا،
اِنَّكَ اَنْتَ الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ - وَجَزَاكُمُ اللهُ خَيْرًا۔

www.understandquran.com

पेशे लफ़्ज़

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى رَسُولِ اللّٰهِ. اَمَّا بَعْدُ!

अल्लाह तआ़ला ने हम सब की हिदायत के लिए कुरआन नाज़िल किया है। इस से रहनुमाई उसी वक़्त ह़ासिल की जा सकती है जब हम इस को समझ कर पढ़ें। बड़े ही अफ़सोस की बात है कि हम में से अक्सर लोग कुरआन को समझते नहीं क्योंकि हमें इस तरह़ पढ़ाया ही नहीं गया है। यहाँ तक कि आज भी आ़म तौर पर हमारे स्कूलों में कुरआन को समझा कर पढ़ाया नहीं जाता। इस की एक अहम वजह यह हो सकती है कि इस मक़सद के लिए आसान और मुनासिब किताबों की कमी है।

इन्हीं वुजूहात की बिना पर "अन्डरस्टैन्ड अल-कुरआन एकेडमी" के तह़त ख़िदमत कर रहे उलमा व माहिरीने तदरीस की टीम ने कुरआन मजीद को बतौर निसाब पेश करने की जानिब क़दम उठाया है जो बड़ों और बच्चों दोनों के लिए यकसाँ मुफ़ीद है। इस सिलसिले की पहली किताब "आओ कुरआन और नमाज़ समझें-आसान तरीक़े से" आप को तक़रीबन **50** फ़ीसद कुरआनी अल्फ़ाज़ के मआ़नी सिखाती है।

इस से पहले इसी सिलसिले की दूसरी कड़ी "आओ कुरआन समझें-आसान तरीक़े से" (सूरह अल-बक़रा आयतः **1-37**)" और तीसरी किताब "आओ कुरआन समझें-आसान तरीक़े से" (सूरह अल-बक़रा आयतः **38-76**)" मंज़रे आ़म पर आ चुकी है। इन दोनों किताबों को मुकम्मल तौर पर पढ़ लेना आप को तक़रीबन **90** फ़ीसद कुरआनी अल्फ़ाज़ समझने के क़ाबिल बना देता है (बशर्ते कि आप सूरह अल-बक़रा ही को सीखना जारी रखें)

इसी सिलसिले की यह चौथी किताब "आओ कुरआन समझें-आसान तरीक़े से" (सूरह अल-बक़रा आयतः **77-105**)" आप के हाथों में है। इस किताब के मुकम्मल होने पर आप तक़रीबन **90** फ़ीसद कुअरानी अल्फ़ाज़ समझने लग जाएंगे (बशर्ते कि आप सूरह अल-बक़रा ही को सीखना जारी रखें), इस के अलावा इल्मे सर्फ़ के मज़ीद अस्बाक़ भी सीखेंगे और नह्व की बुन्यिादी अस्बाक़ भी।

इस किताब की चंद नुमायाँ खुसूसीयात

- कुरआन मजीद के मज़ामीन को समझने और याद रखने में सहूलत के लिए हर सफ़्हे को इशारात **(Pointers)** के तह़त तक़सीम कर दिया गया है, इन इशारात की मदद से तलबा व तालिबात मज़ामीने कुरआन को अपने ज़ेहनों में बा-आसानी महफ़ूज़ रख सकते हैं। एक सबक़ में एक इशारा पढ़ाया जाए तो बेहतर है
- हर सबक़ में एक ह़दीस भी शामिल की गई है, ताकि तलबा में रसूलुल्लाह ﷺ की अह़ादीस की अ़ज़मत भी पैदा हो और वह उन पर अ़मल करने वाले बनें।
- अल्फ़ाज़ के मआ़नी को याद करने के लिए फ़ेक़रों **(phrases)** का इस्तिमाल किया गया है। नई ज़बान सीखने के लिए यह एक नया और मोअस्सिर तरीक़ा है।
- कुरआनी आयात के तर्जमे में इस बात की रिआ़यत की गई है कि वह लफ़्ज़ी तर्जमा भी रहे और रवाँ तर्जमे की ज़रूरत भी पूरी कर दे। इस मक़सद के पेशे नज़र कई मुस्तनद व मोतबर तराजिमे कुरआन से इस्तिफ़ादा किया गया है।
- अ़रबी ग्रामर की मशक़ की ग़र्ज़ से आयात में आने वाले नए अस्मा व अफ़आ़ल को हर सबक़ में मुस्तक़िल ज़िक्र किया गया है, उस्ताज़ की ज़िम्मेदारी है कि वह हर इस्म और फ़ेअ़ल की तलबा से **(TPI)** के साथ मशक़ करवाए, ताकि अफ़आ़ल के अबवाब और उन की मुख़्तलिफ़ शक्लें उन के ज़ेहनों में पुख़्ता हो जाएँ।
- अ़रबी अफ़आ़ल मुख़्तलिफ़ क़िस्म के होते हैं। इस से पहले की दो किताबों में तीन ह़र्फ़ी अफ़आ़ल (सह़ीह़ और मोअ़तल) सिखाए गए। ग्रामर के तह़त आप इस किताब में सर्फ़ की मज़ीद कुछ अस्बाक़ और नह्व का तआ़रूफ़ पढ़ेंगे। नह्व का यह ह़िस्सा अ़रबी जुम्लों की बनावट समझने में आप के लिए काफ़ी मददगार होगा।
- सीखने का अ़मल बेहतर हो और तलबा की दरसगाह में मौजूदगी का अंदाज़ा हो सके इस लिए हर सबक़ के साथ वर्क-बुक का ह़िस्सा रखा गया है।

अल्लाह से दुआ़ है कि वह हमें ग़लतियों से महफ़ूज़ रखे और अगर हो गई हों तो मुआ़फ़ फ़रमाए, अगर आप इस में कोई ग़लती देखें तो बराहे करम ज़रूर बताएँ ताकि अगले ऐडीशन में उस की तसह़ीह़ हो सके।

अ़ब्दुलअ़ज़ीज़ अ़ब्दुर्रह़ीम
info@understandquran.com
March, 2021

www.understandquran.com

क़ुरआन

www.understandquran.com

कुरआन सफ़्हा 11a

तआ़रूफ़, अन-पढ़ और पढ़े लिखों का हाल

(अल-बकराः77:79)

कोर्स के मक़ासिद

1. कुरआन मजीद के अगले पाँच सफ़्हात पढ़ना (सूरह अल-बक़रा, आयात **77-105**) यानी पहले पारे का तीसरा पाव हिस्सा।
2. इस कोर्स के ख़त्म पर कुरआन मजीद के **90** फ़ीसद अल्फ़ाज़ को सीख लेना (बशर्ते कि सूरह अल-बक़रा जारी रहे)
3. इशारों और फ़ेक़रों के ज़रिया नए अल्फ़ाज़ व मआ़नी सीखना
4. कुरआन को ज़िंदगी में लाने का तरीक़ा समझना
5. सर्फ़ यानी अल्फ़ाज़ बनाने के बक़ीया अहम क़वायद और बुनियादी नह्व (अल्फ़ाज़ से जुमले को बनाने के क़वायद सीखना
6. **350** से ज़्यादा कुरआनी मज़मून से मुतअ़ल्लिक़ अ़रबी बोल-चाल के जुमले सीखना

कुरआन फ़हमी के दौरान पेश आने वाले दो चैलेंजस और उन का हलः

1. अल्फ़ाज़ के मआ़नीः उनको इशारात और फ़ेक़रों के ज़रिया याद किया जा सकता है।
2. ग्रामरः इसको **TPI** और अ़रबी बोल-चाल के ज़रिया सीखा जा सकता है।

इशारात और उन के फ़ायदेः

आ़म तौर पर कुरआन के जो नुस्ख़े प्रिंट होते हैं उन में हर पारे में **20** सफ़्हात होते हैं। हर पारा **4** हिस्सों में तक़सीम किया गया है इस लिए हर पाव पारे में **5** सफ़्हात हैं हम इस कोर्स में शुरूअ़ के **5** सफ़्हात यानी पहला पाव पारा सीखेंगे।

इस कोर्स में हर सफ़्हे को **4** हिस्सों में तक़सीम किया गया है। हर हिस्सा एक इशारे के तौर पर पेश किया गया है। हर इशारे में एक से ज़ायद उनवानात और मज़ामीन हो सकते हैं। इशारात के कई फ़ायदे हैं, मसलनः

- इशारात की मदद से मज़मून का पता चलता है जिन में नए अल्फ़ाज़ इस्तिमाल हुए हैं।
- इशारात एक ज़ंजीर का किरदार अदा करते हैं जिनकी मदद से अल्फ़ाज़ के मआ़नी को याद करना और ज़रूरत पड़ने पर उन्हें दोबारा ज़ेहन में लाना आसान होता है, ज़ंजीर गोया मआ़नी को पकड़ कर रखती है।
- इन की मदद से आप पूरे सफ़्हा पर मौजूद मज़ामीन को ज़ेहन में ला सकते हैं।
- कुरआन मजीद को हिफ़्ज़ करने में इशारात बहुत मददगार होते हैं।

फ़ेक़रों (Phrases) के फ़ायदे

- फ़ेक़रे वह ज़ंजीर देते हैं जिस से नए अल्फ़ाज़ के मआ़नी को पकड़ कर रखा जा सकता है।
- आयात के मज़ामीन को याद रखने में मददगार बनते हैं।
- अल्फ़ाज़ के मुक़ाबले में फ़ेक़रे बात को बेहतर समझाते हैं। मसलन صَمَد: बेनेयाज़। اللهُ الصَّمَد अल्लाह बेनेयाज़ है।
- सिर्फ़ अल्फ़ाज़ के मआ़नी याद करने के मुक़ाबले में फ़ेक़रों को और उनके मआ़नी को याद करना ज़्यादा मोअस्सिर, मुफ़ीद, दिलचस्प, और क़ाबिले अ़मल तरीक़ा है।

फ़ेक़रों को याद करने का फ़ार्मूला (R-5s-10-Loud):

जब भी आप किसी फ़ेक़रे को पढ़ें, तो इस फ़ार्मूले को इस्तिमाल करें: **R-5s-10-Loud**

- **R:Relex:** यानी आराम से पढ़िए, अगर आप मुख़्तिलफ़ ख़्यालात में घिरे हों या किसी तनाव में हों तो गहरी साँस लीजीए ताकि ज़ेहन इधर उधर न लगा रहे।
- **5s:** ह़वासे ख़मसा **(five senses)** को इस्तिमाल कीजीए। सुनना, देखना, सूँघना, चखना, छूना, महसूस करना। अफ़्आ़ल की ह़रकतों का और अस्मा की शक्लों का तसव्वुर कीजिए।
- **10 –** कम अज़ कम दस सेकण्ड इस काम को कीजिए।
- **Loud –** बुलंद आवाज़ से कहिए।

www.understandquran.com

अ़रबी बोल-चालः इस प्रेक्टिस के कई फ़ायदे हैंः

1. इस कोर्स में अ़रबी बोल-चाल के सारे जुमले कुरआनी माहौ़ल से जूड़े होंगे, इस तरह़ कुरआन को समझना आसान होगा।
2. जुमलों की प्रैक्टिस से फ़ेअ़ल के मुख़्तलिफ़ सेग़े अच्छी तरह़ ज़ेहन नशीन हो जाएँगे।
3. टीचर और तलबा के दरमियान और आपस में प्रैक्टिस के ज़रिया क्लास का माहौ़ल active बना रहेगा।
4. ग्रामर सीखने में दिलचस्पी बनी रहेगी।

हिदायत और अंजाम

اَوَلَا يَعْلَمُوْنَ	اَنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ	مَا يُسِرُّوْنَ	وَمَا يُعْلِنُوْنَ (77)
क्या नहीं वह जानते	कि अल्लाह जानता है	जो वह छुपाते हैं	और जो वह ज़ाहिर करते हैं।

وَمِنْهُمْ	اُمِّيُّوْنَ	لَا يَعْلَمُوْنَ الْكِتٰبَ	اِلَّآ اَمَانِيَّ	وَاِنْ هُمْ
और उन में से कुछ	उन पढ़ हैं	वह नहीं जानते किताब को	सिवाए आरज़ूओं के	और नहीं हैं वह

اِلَّا يَظُنُّوْنَ (78)	فَوَيْلٌ	لِّلَّذِيْنَ	يَكْتُبُوْنَ الْكِتٰبَ	بِاَيْدِيْهِمْ
मगर गुमान से काम लेते।	सो ख़राबी है	उन के लिए जो	लिखते हैं किताब	अपने हाथों से,

ثُمَّ يَقُوْلُوْنَ	هٰذَا مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ	لِيَشْتَرُوْا بِهٖ	ثَمَنًا قَلِيْلًا	فَوَيْلٌ
फिर वह कहते हैं	यह अल्लाह के पास से है;	ताकि वह ह़ासिल करें उस से	क़ीमत थोड़ी,	सो ख़राबी है

لَّهُمْ	مِّمَّا كَتَبَتْ اَيْدِيْهِمْ	وَوَيْلٌ لَّهُمْ	مِّمَّا يَكْسِبُوْنَ (79)
उन के लिए	उस से जो लिखा उन के हाथों ने	और ख़राबी है उन के लिए	उस से जो वह कमाते हैं

मुख़्तसर शरह़

- اَوَلَا يَعْلَمُوْنَ...: यहाँ अल्लाह तआ़ला इसी बात को ज़िक्र फ़रमा रहा है कि किस तरह़ बनीइसराईल रसूलुल्लाह ﷺ की आमद के तअ़ल्लुक़ से अपनी किताबों में मौजूद पेशीन-गोईयों को छुपाया करते थे। जो कुछ वह छुपा रहे हैं या ज़ाहिर कर रहे हैं, बल्कि जो कुछ वह कर रहे हैं अल्लाह उन सब को जानता है।
- وَمِنْهُمْ اُمِّيُّوْنَ...: फिर अल्लाह तआ़ला ने दो ग्रुपों "اُمِّي" यानी उन-पढ़ और "उलमा" मैं से एक ग्रुप के बारे में गुफ़्तगू की है कि यह उम्मी किताब से वाक़िफ़ नहीं हैं या शायद उन्हें किताब में मौजूद तफ़सीलात की ज़रा भी फ़िक्र नहीं है। उन का मज़हब पूरा का पूरा बे-बुनियाद ख़्यालात पर मबनी है, जैसे
  - आग हमें नहीं छुएगी
  - हम अल्लाह के बेटे और उसके चहेते हैं
  - सिर्फ़ यहूद ही जन्नत में दाख़िल होंगे
- जब हिदायत के बुनियादी सर-चश्मों यानी अल्लाह की किताब और उसके रसूल की तालीमात से इंसानों का रिश्ता ख़त्म हो जाता है तो फिर इस क़िस्म की बातें आ़म हो जाती हैं। आज के मुसलमानों की सूरतेह़ाल भी इससे किसी ह़द तक मिलती जुलती है।
- فَوَيْلٌ لِّلَّذِيْنَ...: गुज़िश्ता आयत में अल्लाह तआ़ला ने "उम्मीयों" का ज़िक्र फ़रमाया था। अब दूसरे ग्रुप "उलमा" के बारे में ब्यान किया जा रहा है। उन्होंने भी बहुत सारे बड़े बड़े गुनाहों का इर्तिकाब किया थाः
  - किताब में तबदीली कर के उसमें अपनी जानिब से कमी ज़्यादती करना
  - और फिर लोगों को बोलना कि यह (जो उन्होंने बढ़ाया है) अल्लाह की तरफ़ से ही है
  - यह सब ह़रकतें दुनिया के फ़ायदे ह़ासिल करने के लिए करना

www.understandquran.com

- فَوَيْلٌ لَّهُمْ مِّمَّا كَتَبَتْ...: उन लोगों को कई सज़ाएँ मिलेंगी। एक सज़ा तो इस बात की कि उन्होंने अल्लाह की किताब में तबदीली की और दूसरी सज़ा इस बात पर कि अल्लाह की किताब में कमी ज़्यादती कर के उन्होंने दुनिया का फ़ायदा उठाया।
- उम्मते मुस्लिमा में भी इस क़िस्म के लोगों को देखकर तअ़ज्जुब मत कीजिए!
- जब कभी आप किसी नामालूम शख़्स को इस्लाम के बारे में बात करते सुनें तो उसकी बातों की क़ुरआन व ह़दीस से तसदीक़ कर लें।
- अगर किसी बात के बारे में आपको मुकम्मल इल्म न हो तो उसे इस तरह़ कह कर पेश मत कीजिए कि अल्लाह ने या रसूलुल्लाह ﷺ ने ऐसा फ़रमाया है। ऐसी कोई बात कहने से पहले उसकी अच्छी तरह़ तसदीक़ कर लीजिए।

ह़दीसः ह़ज़रत अबदुल्लाह बिन अम्र बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हु रिवायत करते हैं कि आप ﷺ फ़रमाते थे कि अल्लाह इल्म को इस तरह़ नहीं उठा लेगा कि उसको बंदों से छीन ले; बल्कि वह ''बड़े'' उलमा को मौत दे कर इल्म को उठाएगा, यहाँ तक कि जब कोई आ़लिम बाक़ी नहीं रहेगा तो लोग जाहिलों को सरदार बना लेंग, उन से सवालात किए जाएंगे और वह बग़ैर इल्म के जवाब देंगे; चुनांचः वह ख़ुद भी गुमराह होंगे और दूसरे लोगों को भी गुमराह करेंगे (बुख़ारीः 100)

- इस ह़दीस से हमें यह बात पता चलती है कि अगर हमें क़ुरआन व ह़दीस के तअ़ल्लुक़ से कोई बात पूछना हो तो आ़वाम से पूछने के बजाए उलमाए दीन से पूछना चाहिए।

अस्बाक़, दुआ़ और प्लानः इन आयात से कई अस्बाक़, दुआ़एँ और प्लान्स बनाए जा सकते हैं। नीचे बतौर मिसाल सिर्फ़ चंद का ज़िक्र है।

- अल्लाह दिलों की बातों को भी जानता है, चाहे वह छुपी हुई हों या ज़ाहिर हों।
- अन-पढ़ लोग सिर्फ़ तमन्नाओं और आरज़ूओं में ज़िंदगी गुज़ारते हैं जिनका किताब से कोई तअ़ल्लुक़ नहीं होता।
- जो लोग दुनियवी फ़ायदे की ख़ातिर अल्लाह तआ़ला के कलाम को तब्दील करते हैं उनके लिए सख़्त तरीन सज़ाए हैं

दुआ़ः ऐ अल्लाह! क़ुरआन मजीद सीखने में मेरी मदद फ़रमा और मुझे उन लोगों में से न बना जो आपके अह़कामात पर अ़मल करने के बजाए तमन्नाओं और आरज़ूओं में पड़े रहते हैं।

प्लानः इन्शा अल्लाह कोई भी बात सुनने या कहने से पहले मैं यह चेक करूँगा कि क्या वह बात क़ुरआन व ह़दीस से साबित है या नहीं।

www.understandquran.com

अस्मा और अफ़्आ़लः मशक़ की आसानी के लिए इन आयात में पहले सिर्फ़ तीन ह़र्फ़ी सह़ीह़ अफ़्आ़ल को तलाश कीजिए और उनकी छः चाबियों की मशक़ कीजिए, फिर उन ही आयात में शुरूअ़ से आख़िर तक कम्ज़ोर हूरूफ़ वाले अफ़्आ़ल को तलाश कीजिए और उनकी छः चाबियों की मशक़ कीजिए। फिर आख़िर में उन्हीं आयात में शुरूअ़ से आख़िर तक मज़ीद फ़ीह अफ़्आ़ल को तलाश कर के उनकी चाबियों की मशक़ कीजिए।

अफ़्आ़लः हर फ़ेअ़ल के तह़त दिए गए तीन अफ़्आ़ल और तीन अस्मा की TPI के साथ मशक़ कीजिए

मआ़नी	काम का नाम	اسم مفعول	اسم فاعل	فعل امر	فعل مضارع	فعل ماضِ	मादा व कोड	तकरार
जानना	عِلْم	مَعْلُوْم	عَالِم	اِعْلَمْ	يَعْلَمُ	عَلِمَ	ع ل م سـ	518
लिखना	كِتَابَة	مَكْتُوْب	كَاتِب	اُكْتُبْ	يَكْتُبُ	كَتَبَ	ك ت ب ذ	57
कमाना	كَسْب	مَكْسُوْب	كَاسِب	اِكْسِبْ	يَكْسِبُ	كَسَبَ	ك س ب ضـ	62
गुमान करना	ظَنّ	مَظْنُوْن	ظَانّ	ظُنَّ	يَظُنُّ	ظَنَّ	ظ ن ن ظن	68
कहना	قَوْل	مَقُوْل	قَائِل	قُلْ	يَقُوْلُ	قَالَ	ق و ل قا	1719
कम होना	قَلّ	–	قَلِيْل	قِلَّ	يَقِلُّ	قَلَّ	ق ل ل ضل	72
छुपाना	إِسْرَار	مُسَرّ	مُسِرّ	أَسْرِرْ	يُسِرُّ	أَسَرَّ	س ر ر أسـ+	20
ज़ाहिर करना	إِعْلَان	مُعْلَن	مُعْلِن	أَعْلِنْ	يُعْلِنُ	أَعْلَنَ	ع ل ن أسـ+	12
ख़रीदना	اِشْتِرَاء	مُشْتَرًى	مُشْتَرٍ	اِشْتَرِ	يَشْتَرِيْ	اِشْتَرٰى	ش ر ي اِخـ+	21

अस्मा

मआ़नी	जमा	वाह़िद
अन-पढ़	أُمِّيُّوْن، أُمِّيِّيْن	أُمِّيّ
किताब	كُتُب	كِتَاب
ख़ाहिश	أَمَانِيّ	أُمْنِيَّة
हाथ	أَيْدِي	يَد
क़ीमत	أَثْمَان	ثَمَن

www.understandquran.com

आग सिर्फ़ चंद दिन (अल-बक़राः80)

وَقَالُوْا

और उन्होंने कहाः

لَنْ تَمَسَّنَا النَّارُ	اِلَّآ اَيَّامًا مَّعْدُوْدَةً ؕ	قُلْ	اَتَّخَذْتُمْ	عِنْدَ اللّٰهِ
हरगिज़ नहीं छुएगी हमें आग	सिवाए चंद दिन,	कह दोः	क्या तुमने लिया है	अल्लाह के पास से

عَهْدًا	فَلَنْ يُّخْلِفَ اللّٰهُ	عَهْدَهٗٓ	اَمْ تَقُوْلُوْنَ	عَلَى اللّٰهِ
कोई अ़ह्द	कि हरगिज़ न ख़िलाफ़ करेगा अल्लाह	अपने अ़ह्द के,	या तुम कहते हो	अल्लाह पर

مَا لَا تَعْلَمُوْنَ (80)

जो तुम नहीं जानते।

मुख़्तसर शरह़

- وَقَالُوْا لَنْ تَمَسَّنَا النَّارُ...: बनीइसराईल का दावा था कि अगर वह जहन्नम में दाख़िल हो भी जाएँ तो बस चंद दिनों के लिए जाएंगे। क्यों? इस लिए कि उनका यह ख़्याल था कि वह अल्लाह की महबूब क़ौम हैं।
- قُلْ اَتَّخَذْتُمْ...: क्या तुमने अल्लाह से कोई अ़ह्द ले रखा है? क्या सुबूत के तौर पर इस तरह़ की कोई बात तुम्हें अपनी किताब में मिलती है?
- قَالَ: ''उस ने कहा'', قَالَ عَلٰى: ''उसने (किसी के) ख़िलाफ़ कहा''।
- कुरआन के ब्यान के मुताबिक़ अल्लाह के बारे में झूट बोलना एक बड़ा संगीन जुर्म है। (7:33)
- आप को बहुत सारे लोग कहते हुए मिलेंगे कि इस्लाम में यह सह़ीह़ है और यह ग़लत, यह काम करना चाहिए और यह काम नहीं करना चाहिए। वह इस अंदाज़ से बात करेंगे गोया वह इस्लाम के बारे में अच्छी तरह़ जानते हैं; ह़ालाँकि उन्हें इस्लाम के बारे में न ही कोई इल्म होता है और न ही उनके पास कोई दलील होती है।
- अगर कोई शख़्स किसी जगह खड़ा हो और रास्ता तलाश कर रहा हो तो क्या आप उसे बेग़ैर मालूमात के रास्ता बता देंगे या किसी की भी सुनी सुनाई बात की बुनियाद पर आप उसे रास्ता बताएंगे?
- अगर कोई शख़्स इस्लाम के बारे में कुछ पूछे जिस के बारे में आप को इल्म न हो, ऐसी सूरत में आप साफ़ कह दीजीए कि मुझे उस का इलम नहीं है। उसे मश्वरा दीजिए कि वह किसी आ़लिम से पूछ ले। ''मुझे नहीं मालूम है'' कहने में कोई बुराई नहीं है।
- इमाम मालिक बन अनस रह़िमहुल्लाह एक बहुत बड़े आ़लिम गुज़रे हैं, एक मर्तबा उनके पास एक शख़्स बड़ा लंबा सफ़र कर के आया और उन से तक़रीबन **48** सवाल पूछे, इमाम मालिक रह़िमहुल्लाह ने उन में से सिर्फ़ **16** सवालों का जवाब दिया और बाक़ी के जवाब में फ़रमाया कि मुझे उन के जवाब का इल्म नहीं है।
- अगर किसी भरोसेमंद आ़लिम या किताब के ह़वाले से आप सवाल का जवाब जानते हों तो आप उसके बारे में बता दें और साथ में यह भी कहीं कि اَللّٰهُ أَعْلَمُ (अल्लाह बेहतर जानने वाला है)।

ह़दीसः ह़ज़रत शद्दाद बिन औस रज़ियल्लाहु अन्हू से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमायाः ''अक़्लमंद वह है जो अपने नफ़्स का मुह़ासिबा करे और मौत के बाद की ज़िंदगी के लिए अ़मल करे, और आजिज़ व बेवक़ूफ़ वह है जो अपने नफ़्स को ख़ाहिशात पर लगा दे और रह़मते इलाही की आरज़ू रखे''। (तिरमिज़ीः **2459**)

- रसूलुल्लाह ﷺ ने यह भी फ़रमाया कि जिसका अ़मल उसे पीछे कर दे तो उस का ख़ानदान (नसब) उस के काम न आएगा। (मुस्लिमः**2699**)
- इन अह़ादीस से यह बात वाज़ेह होती है कि अगर हम कामयाब होना चाहते हैं तो हमें अच्छे काम करना चाहिए और बुरे कामों से दूर रहना चाहिए।

www.understandquran.com

- हम सब ह़ज़रत आदम अलैहिस-सलाम की औलाद हैं। लेकिन हम यह नहीं कह सकते कि चूँकि हमारे बाप नबी थे इस लिए हमें आग नहीं छुएगी। या यह कि हम सीधा जन्नत में जाएंगे, चाहे हम कितने ही ग़लत काम करें।

अस्बाक़, दुआ और प्लानः इन आयात से कई अस्बाक़, दुआएँ और प्लान्स बनाए जा सकते हैं। नीचे बतौर मिसाल सिर्फ़ चंद का ज़िक्र है।

- हमें कभी भी अल्लाह के अह़कामात को मामूली नहीं समझना चाहिए।
- बग़ैर सह़ीह़ इल्म के ऐसा नहीं कहना चाहिए कि ''अल्लाह ने या उस के रसूल ﷺ ने ऐसा फ़रमाया है''

दुआः ऐ अल्लाह! अच्छे काम करने और बुरे कामों से बचने में मेरी मदद फ़रमा।

प्लानः इन्शा अल्लाह! में हमेशा क़ुरआन व ह़दीस का मुतालआ़ जारी रखूँगा ताकि किसी तरह़ की ग़लत बातों की वजह से बहक ना जाऊँ।

अस्मा और अफ़्आ़लः मशक़ की आसानी के लिए इन आयात में पहले सिर्फ़ तीन ह़र्फ़ी सह़ीह़ अफ़्आ़ल को तलाश कीजिए और उनकी छः चाबियों की मशक़ कीजिए, फिर उन ही आयात में शुरूअ़ से आख़िर तक कम्ज़ोर हूरूफ़ वाले अफ़्आ़ल को तलाश कीजिए और उनकी छः चाबियों की मशक़ कीजिए। फिर आख़िर में उन्हीं आयात में शुरूअ़ से आख़िर तक मज़ीद फ़ीह अफ़्आ़ल को तलाश कर के उनकी चाबियों की मशक़ कीजिए।

अफ़्आ़लः हर फ़ेअ़ल के तह़त दिए गए तीन अफ़्आ़ल और तीन अस्मा की **TPI** के साथ मशक़ कीजिए

मआ़नी	काम का नाम	اسم مفعول	اسم فاعل	فعل امر	فعل مضارع	فعل ماضٍ	माद्दा व कोड	तकरार
अ़ह्द लेना	عَهْد	مَعْهُوْد	عَاهِد	اِعْهَدْ	يَعْهَدُ	عَهِدَ	ع ه د / سـ	35
जानना	عِلْم	مَعْلُوْم	عَالِم	اِعْلَمْ	يَعْلَمُ	عَلِمَ	ع ل م / سـ	518
कहना	قَوْل	مَقُوْل	قَائِل	قُلْ	يَقُوْلُ	قَالَ	ق و ل / قا	1719
छूना	مَسّ	مَمْسُوْس	مَاسّ	مَسَّ	يَمَسُّ	مَسَّ	م س س / مسـ	58
गिनना	عَدّ	مَعْدُوْد	عَادّ	عُدَّ	يَعُدُّ	عَدَّ	ع د د / ظنـ	17
लेना	اِتّخَاذ	مُتَّخَذ	مُتَّخِذ	اِتَّخِذْ	يَتَّخِذُ	اِتَّخَذَ	أ خ ذ / اِخـ+	128
खिलाफ़ करना	إِخْلَاف	مُخْلَف	مُخْلِف	أَخْلِفْ	يُخْلِفُ	أَخْلَفَ	خ ل ف / أسـ+	15

अस्मा

मआ़नी	जमा	वाह़िद
दिन	أَيَّام	يَوْم
अ़ह्द	عُهُوْد	عَهْد

www.understandquran.com

क़ायदा आग और जन्नत का (अल-बक़रा:81-82)

خَطِيْٓـَٔتُهٗ	وَّاَحَاطَتْ بِهٖ	مَنْ كَسَبَ سَيِّئَةً	بَلٰى
उस की बुराई ने	और घेर लिया उस को	जिसने कमाई कोई बुराई	क्यों नहीं,

وَالَّذِيْنَ	خٰلِدُوْنَ (81)	هُمْ فِيْهَا	اَصْحٰبُ النَّارِ	فَاُولٰٓئِكَ
और जो लोग	हमेशा रहेंगे।	वह उस में	आग वाले हैं,	पस यही लोग

هُمْ	اَصْحٰبُ الْجَنَّةِ	اُولٰٓئِكَ	وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ	اٰمَنُوْا
वह	जन्नत वाले हैं,	यही लोग	और उन्होंने अच्छे अ़मल किए,	ईमान लाए

خٰلِدُوْنَ (82)	فِيْهَا
हमेशा रहेंगे।	उस में

मुख़्तसर शरह

- بَلٰى مَنْ كَسَبَ سَيِّئَةً...: अल्लाह तआ़ला का क़ानून इंसाफ़ पर मबनी है और वह यह है कि बुरे आमाल जैसे शिर्क, कुफ़्र, वग़ैरा का बदला हमेशा के लिए जहन्नम है।
- बुरे काम करने वाले लोग बुराई का नतीजा जानते हैं फिर भी वह बुराई करते हैं। क्यों? इस लिए कि शैतान उन्हें उनके गुनाहों के अंजाम से ग़ाफ़िल कर देता है।

ह़दीसः रसूलुल्लपह ﷺ ने हमें इस बात की जानिब तवज्जाकह दिलाई है कि छोटे से छोटे गुनाह से भी लापरवाही न बरती जाए, चनांचः आप ﷺ ने फ़रमाया कि छोटे और मामूली गुनाहों से बचो! क्योंकि छोटे गुनाहों की मिसाल उन लोगों की तरह़ है जो किसी वादी के निचले ह़िस्से में पड़ाव डालें और एक शख़्स कुछ लकड़ियाँ लाए और (दूसरा) शख़्स कुछ (और) लकड़ियाँ लाए और इस तरह़ इंतिज़ाम कर के वह (लकड़ियाँ जमा कर के उन को जला कर) अपना खाना तैयार करें। कुछ गुनाह बज़ाहिर ऐसे ही छोटे होते हैं लेकिन जब वह सब मिल जाते हैं और इंसान से उन के बारे में पूछ ताछ होती है तो वह उसे बर्बाद कर देते हैं। (मस्नद अह़मद **5/33**, सहल बिन साद रज़ियल्लाहु अन्हु ने इस ह़दीस को रिवायत किया है)

- وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا...: यह क़ानून भी इंसाफ़ वाला है कि ईमान और नेक-आमाल का बदला हमेशा की जन्नत है।
- ईमान कुरआन व सुन्नत के मुताबिक इन छः चीज़ों पर ईमान लाना हैः
  ❶ अल्लाह पर ❷ फ़रिश्तों पर ❸ आसमानी किताबों पर ❹ रसूलों पर ❺ क़्यामत पर ❻ क़दर (तक़दीर पर
- नेक आमाल कुरआन व सुन्नत के मुताबिक़ यह चीज़ें नेक-आमाल में शामिल हैं:
  - **इबादात**: नमाज़, रोज़ा, ज़कात और ह़ज।
  - **दिल की इबादतेंः** अक़ीदा, इख़्लास, तक़्वा, अल्लाह की मुह़ब्बत और उस पर भरोसा, अल्लाह के तअ़ल्लुक़ से अच्छा गुमान, हर वक़्त अल्लाह की याद और दिल में उस का डर वग़ैरा।
  - **ज़बान की इबादातः** यानी ज़िक्र, तिलावत, ख़ैरख़ाही, अच्छी बात करना, लोगों की रहनुमाई वग़ैरा।
  - **अख़्लाक़ः** जैसे सच बोलना, अमानतदारी का ख़्याल रखना, वादा पूरा करना, इंसाफ़ पसंद होना, सब्र करना, नरमी बरतना वग़ैरा।
  - **मुआ़मिलातः** ह़लाल कमाना और ह़राम से बचना।
  - **मुआ़शिरतः** माँ बाप, घर के अफ़राद, रिश्तेदारों, पड़ोसीयों, कम्ज़ोर लोगों और आम लोगों के साथ अच्छा सुलूक करना।

www.understandquran.com

- أَمَر بِالْمَعْرُوف وَنَهْي عَنِ الْمُنْكَر: अच्छाई का हुक्म देना और बुराई से रोकना।
- دَعْوَة: लोगों को अच्छाई की तरफ़ बुलाना।

अस्बाक़, दुआ़ और प्लानः इन आयात से कई अस्बाक़, दुआ़एँ और प्लान्स बनाए जा सकते हैं। नीचे बतौर मिसाल सिर्फ़ चंद का ज़िक्र है।

- बुरे आमाल जैसे शिर्क, कुफ़्र, वग़ैरा का बदला हमेशा की जहन्नम है।
- ईमान और नेक-आमाल का बदला हमेशा की जन्नत है।

दुआ़ः ऐ अल्लाह! हर छोटे बड़े गुनाह से बचने में मेरी मदद फ़रमा, और इस बात से मेरी हिफ़ाज़त फ़रमा कि मैं किसी भी नेकी को मामूली समझूँ।

प्लानः इन्शा अल्लाह! में हर छोटे बड़े गुनाह से दूर रहूँगा।

अस्मा और अफ़्आ़लः मशक़ की आसानी के लिए इन आयात में पहले सिर्फ़ तीन हर्फ़ी सहीह़ अफ़्आ़ल को तलाश कीजिए और उनकी छः चाबियों की मशक़ कीजिए, फिर उन ही आयात में शुरूअ़ से आख़िर तक कम्ज़ोर हूरूफ़ वाले अफ़्आ़ल को तलाश कीजिए और उनकी छः चाबियों की मशक़ कीजिए। फिर आख़िर में उन्ही आयात में शुरूअ़ से आख़िर तक मज़ीद फ़ीः अफ़्आ़ल को तलाश कर के उनकी चाबियों की मशक़ कीजिए।

अफ़्आ़लः हर फ़ेअ़ल के तह़त दिए गए तीन अफ़्आ़ल और तीन अस्मा की TPI के साथ मशक़ कीजिए

मआ़नी	काम का नाम	اسم مفعول	اسم فاعل	فعل امر	فعل مضارع	فعل ماضٍ	माद्दा व कोड	तकरार
कमाना	كَسْب	مَكْسُوْب	كَاسِب	اِكْسِبْ	يَكْسِبُ	كَسَبَ	ك س ب / ض	62
काम करना	عَمَل	مَعْمُوْل	عَامِل	اِعْمَلْ	يَعْمَلُ	عَمِلَ	ع م ل / س	319
हमेशा रहना	خُلْد	–	خَالِد	اُخْلُدْ	يَخْلُدُ	خَلَدَ	خ ل د / ذ	83
घेरना	إِحَاطَة	مُحَاط	مُحِيْط	أَحِطْ	يُحِيْطُ	أَحَاطَ	ح و ط / أسـ+	28
ईमान लाना	إِيْمَان	مُؤْمَن	مُؤْمِن	اٰمِنْ	يُؤْمِنُ	اٰمَنَ	أ م ن / أسـ+	818

अस्मा

मआ़नी	जमा	वाह़िद
बुराई	سَيِّئَات	سَيِّئَة
बुराई	خَطِيْئَات	خَطِيْئَة
वाला, साथी	أَصْحَاب	صَاحِب
बाग़	جَنَّات	جَنَّة

www.understandquran.com

मीसाक़े बनीइसराईल (अल-बक़राः83)

وَاِذْ اَخَذْنَا مِيْثَاقَ	بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ
और जब हमने लिया पुख़्ता अ़ह्द	बनीइसराईल (से)

لَا تَعْبُدُوْنَ	اِلَّا اللّٰهَ ؕ	وَبِالْوَالِدَيْنِ	اِحْسَانًا
(कि) तुम इबादत नहीं करोगे	मगर अल्लाह की,	और माँ बाप से	नेक सुलूक करना

وَّذِى الْقُرْبٰى	وَالْيَتٰمٰى	وَالْمَسٰكِيْنِ	وَقُوْلُوْا	لِلنَّاسِ
और क़राबत दारों	और यतीमों	और मिस्कीनों से,	और तुम कहो	लोगों से

حُسْنًا	وَّاَقِيْمُوا	الصَّلٰوةَ	وَاٰتُوا	الزَّكٰوةَ ؕ	ثُمَّ
अच्छी बात	और तुम क़ायम करो	नमाज़	और तुम दो	ज़कात,	फिर

تَوَلَّيْتُمْ	اِلَّا	قَلِيْلًا	مِّنْكُمْ	وَاَنْتُمْ	مُّعْرِضُوْنَ 83
तुम फिर गए	मगर	थोड़े	तुम में से	और तुम	फिर जाने वाले हो।

मुख़्तसर शरह

- وَاِذْ اَخَذْنَا مِيْثَاقَ...: अल्लाह बनीइसराईल को याद दिला रहा है कि वह अल्लाह की ना-फ़रमानी करने और ह़क़ को क़ुबूल करने से इंकार करने के आ़दी हो चुके हैं। उन्होंने अल्लाह के साथ अ़ह्द व पैमान तो किया लेकिन फिर उसकी ख़िलाफ़वरज़ी कर बैठे।
- यहाँ उस वक़्त के मदीना में आबाद मुसलमानों के लिए एक पैग़ाम भी है कि यहूद की जानिब से रसूलुल्लाह ﷺ की नुबुवत का इंकार करने पर उन्हें कोई तअ़ज्जुब नहीं होना चाहिए क्योंकि ह़क़ को क़बूल न करने के तअ़ल्लुक़ से यहूद पहले से यह करते रहे हैं।
- इस में हमारे लिए यह पैग़ाम है कि हमें अल्लाह की ना-फ़रमानी और ह़क़ को ठुकराने से बचना चाहिए।
- इस आयत में ब्यान किए गए आठ ह़िस्सों के तह़त दुआ़, एह़तिसाब और प्लान के फ़ार्मूले को ज़िंदगी में लाईए और इस पैग़ाम को हर एक तक पहुंचाईएः
  1. अल्लाह के सिवा किसी की इबादत मत कीजिए।
  2. वालिदैन के साथ अच्छा सुलूक कीजिए
  3. रिश्तेदारों के साथ अच्छा बर्ताव कीजिए
  4. यतीमों के साथ अच्छी तरह़ से पेश आईए।
  5. मिस्कीनों और ज़रूरतमंदों के साथ हुस्ने सुलूक कीजिए।
  6. लोगों के साथ अच्छे अंदाज़ में बात कीजिए, चाहे कोई भी हो।
  7. नमाज़ क़ायम कीजिए, यानी जमाअ़त के साथ, वक़्त पर और नमाज़ के आदाब का ख़्याल रखते हुए नमाज़ पढ़िए।
  8. ज़कात अदा कीजिए।
- अगर हम अल्लाह की हिदायात पर अ़मल करने लगें तो हमारा मुआ़शिरा कितना अच्छा हो जाएगा हम इबादात में, अख़लाक़ में, मुआ़मिलात में बल्कि ज़िंदगी के हर पहलू में अच्छे और बेहतर हो जाएंगे।

ह़दीसः ह़ज़रत अबू बकरा रज़ियल्लाहु अन्हु रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमायाः क्या मैं तुम्हें सबसे बड़े गुनाह की ख़बर न दूँ? ''सह़ाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम ने अ़र्ज़ कियाः या रसूलुल्लाह क्यों नहीं, (ज़रूर ख़बर दीजीए) नबी करीम ﷺ ने फ़रमायाः ''अल्लाह के साथ शिर्क करना और वालिदैन की ना-फ़रमानी करना''। (बुख़ारीः6273)

www.understandquran.com

अस्बाक़, दुआ और प्लानः इन आयात से कई अस्बाक़, दुआएँ और प्लान्स बनाए जा सकते हैं। नीचे बतौर मिसाल सिर्फ़ चंद का ज़िक्र है।

- अल्लाह तआ़ला का सिर्फ़ एक दीन है और सारे अन्बिया उसी दीन को ल`कर आए, यानी इस्लाम।
- बनीइसराईल को भी इन्हीं आठ बुनियादी चीज़ों पर अ़मल करने का हुक्म दिया गया था जिन का हुक्म हम मुसलमानों को दिया गया है।

दुआ़ः ऐ अल्लाह! इन आठ चीज़ों में से हर एक चीज़ में बेहतर बनने में मेरी मदद फ़रमा!

प्लानः इन्शा अल्लाह! मैं प्लान बनाऊँगा कि इन आठ चीज़ों को कैसे ज़िंदगी में लाया जा सकता है, ख़ास तौर से उन चीज़ों में जिनमें में कमज़ोर हूँ।

अस्मा और अफ़्आ़लः मशक़ की आसानी के लिए इन आयात में पहले सिर्फ़ तीन ह़र्फ़ी सह़ीह़ अफ़्आ़ल को तलाश कीजिए और उनकी छः चाबियों की मशक़ कीजिए, फिर उन ही आयात में शुरूअ़ से आख़िर तक कम्ज़ोर हूरूफ़ वाले अफ़्आ़ल को तलाश कीजिए और उनकी छः चाबियों की मशक़ कीजिए। फिर आख़िर में उन्ही आयात में शुरूअ़ से आख़िर तक मज़ीद फ़ीः अफ़्आ़ल को तलाश कर के उनकी चाबियों की मशक़ कीजिए।

अफ़्आ़लः हर फ़ेअ़ल के तह़त दिए गए तीन अफ़्आ़ल और तीन अस्मा की **TPI** के साथ मशक़ कीजिए

मआ़नी	काम का नाम	اسم مفعول	اسم فاعل	فعل امر	فعل مضارع	فعل ماضِ	माद्दा व कोड	तकरार
इबादत करना	عِبَادَة	مَعْبُوْد	عَابِد	اُعْبُدْ	يَعْبُدُ	عَبَدَ	ع ب د / ذ	143
अच्छा होना	حُسْن	–	حَسَن	اُحْسُنْ	يَحْسُنُ	حَسُنَ	ح س ن / ک	66
लेना	أَخْذ	مَأْخُوْذ	اٰخِذ	خُذْ	يَأْخُذُ	أَخَذَ	أ خ ذ / ذ	135
कहना	قَوْل	مَقُوْل	قَائِل	قُلْ	يَقُوْلُ	قَالَ	ق وْ ل / قا	1719
कम होना	قَلّ	–	قَلِيْل	قِلَّ	يَقِلُّ	قَلَّ	ق ل ل / ضل	72
नेक सुलूक करना	إِحْسَان	مُحْسَن	مُحْسِن	أَحْسِنْ	يُحْسِنُ	أَحْسَنَ	ح س ن / أسـ+	74
क़ायम करना	إِقَامَة	مُقَام	مُقِيْم	أَقِمْ	يُقِيْمُ	أَقَامَ	ق و م / أسـ+	71
देना	إِيْتَاء	مُؤْتًى	مُؤْتٍ	اٰتِ	يُؤْتِيْ	اٰتٰى	أ ت ي / أسـ+	274
फिरना	تَوَلٍّ	مُتَوَلًّى	مُتَوَلٍّ	تَوَلَّ	يَتَوَلّٰى	تَوَلّٰى	و ل ي / تد+	78
एराज़ करना	إِعْرَاض	مُعْرَض	مُعْرِض	أَعْرِضْ	يُعْرِضُ	أَعْرَضَ	ع ر ض / أسـ+	53

अस्मा

मआ़नी	जमा	वाह़िद
बाप	وَالِدَيْن	وَالِد
यतीम	يَتَامٰى	يَتِيْم
मिस्कीन	مَسَاكِيْن	مِسْكِيْن
नमाज़	صَلَوَات	صَلَاة

www.understandquran.com

मीसाक़े खुन (अल-बक़राः84)

وَاِذْ اَخَذْنَا	مِيْثَاقَكُمْ	لَا تَسْفِكُوْنَ	دِمَآءَكُمْ	وَلَا تُخْرِجُوْنَ
और जब हम ने लिया	पुख़्ता वादा तुम से	(कि) न बहाओगे तुम	अपने ख़ून (आपस में)	और न निकालोगे

اَنْفُسَكُمْ	مِّنْ دِيَارِكُمْ	ثُمَّ	اَقْرَرْتُمْ	وَاَنْتُمْ	تَشْهَدُوْنَ (84)
अपने आप को	अपने घरों से,	फिर	तुम ने इक़रार किया	और तुम	गवाह हो।

मुख़्तसर शरह

- وَاِذْ اَخَذْنَا مِيْثَاقَكُمْ...: अल्लाह तआ़ला ने बनीइसराईल से यह वा़दा या अ़ह्द लिया था कि वह लोगों को क़त्ल नहीं करेंगे न ही वह उन को उन के घरों से निकालेंगे। ग़ौर कीजिए कि अल्लाह तआ़ला ने हर इंसान के इंसानी हुक़ूक़ की कितनी अहमियत दी है। ख़ास तौर से उसे ज़िंदा रहने के और जायदाद रखने के ह़क़ को। अल्लाह तआ़ला फ़रमाता हैः
  - हमने पोख़्ता अ़ह्द लिया है।
  - तुम ने इस का इक़रार भी किया है।
  - तुम लोग इस के गवाह थे, यानी तुम्हारी ग़ैर-मौजूदगी में यह अ़ह्द नहीं लिया गया था।
- لَا تَسْفِكُوْنَ دِمَآءَكُمْ...: अपना ख़ून यानी आपस में एक दूसरे का ख़ून; क्योंकि आपस में एक दूसरे को तकलीफ़ पहुँचाना गोया ख़ुद अपने आपको तकलीफ़ पहुँचाना है।
- وَلَا تُخْرِجُوْنَ اَنْفُسَكُمْ...: अपने आप को मत निकालो, यानी तुम में से कोई किसी को न निकाले। जब किसी को उस के घर से निकाल दिया जाता है तो वह ख़ुद को ज़लील और रुसवा महसूस करता है। वह जहाँ कहीं जाएगा अजनबी ही रहेगा और बहुत मुम्किन है कि उसे सख़्त तरीन तकालीफ़ का सामना करना पड़े।
- यह हम मुसलमानों के लिए भी याददिहानी है कि अ़ह्द को कभी नहीं तोड़ना और ग़लत काम नहीं करना।

ह़दीसः ह़ज़रत नोमान बन बशीर रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत हैकि रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमायाः मोमिनों की मिसाल उन की दोस्ती और इत्तिह़ाद और शफ़क़त में ऐसी है जैसे एक बदन, कि बदन में जब कोई ह़िस्सा दर्द करता है तो सारा बदन इस में शरीक हो जाता है, नींद न आने और बुख़ार की वजह से। (मुस्लिमः **2586**)

अस्बाक़, दुआ़ और प्लानः इन आयात से कई अस्बाक़, दुआ़एँ और प्लान्स बनाए जा सकते हैं। नीचे बतौर मिसाल सिर्फ़ चंद का ज़िक्र है।

- अल्लाह तआ़ला ने बनीइसराईल से यह अ़ह्द लिया था कि वह न लोगों का क़त्ल करेंगे और न उन्हें उन के घरों से निकालेंगे।
- अल्लाह तआ़ला ने इंसानी हुक़ूक़ को ख़ास तौर पर अहमियत दी है।
- आपस में एक दूसरे को तकलीफ़ पहुँचाना ख़ूद को तकलीफ़ पहुँचाना है। गोया अल्लाह तआ़ला ईमान वालों को एक जिस्म की तरह़ देखना चाहता है।

दुआ़ः ऐ अल्लाह तेरे साथ किए गए वादों को तोड़ने से हमारी ह़िफ़ाज़त फ़रमा और ज़िंदगी के हर गोशे में तेरी इताअ़त करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमा।

प्लानः इन्शा अल्लाह मैं हर इंसान के जान व माल का हर मुम्किन ख़्याल रखूँगा।

www.understandquran.com

अस्मा और अफ़्आ़लः इस सबक़ की आयात में आने वाले कुछ अस्मा और अफ़्आ़ल नीचे दिए गए है।

अफ़्आ़लः हर फ़ेअ़ल के तह़त दिए गए तीन अफ़्आ़ल और तीन अस्मा की **TPI** के साथ मशक़ कीजिए

मआ़नी	काम का नाम	اسم مفعول	اسم فاعل	فعل امر	فعل مضارع	فعل ماضٍ	माद्दा व कोड	तकरार
लेना	أَخْذ	مَأْخُوْذ	اٰخِذ	خُذْ	يَأْخُذُ	أَخَذَ	أ خ ذ / ذ	135
बहाना	سَفْك	مَسْفُوْك	سَافِك	اِسْفِكْ	يَسْفِكُ	سَفَكَ	س ف ك / ضـ	2
गवाही देना	شَهَادَة	مَشْهُوْد	شَاهِد	اِشْهَدْ	يَشْهَدُ	شَهِدَ	ش ه د / سـ	90
निकालना	إِخْرَاج	مُخْرَج	مُخْرِج	أَخْرِجْ	يُخْرِجُ	أَخْرَجَ	خ ر ج / أسـ+	112
इक़रार करना	إِقْرَار	مُقَرّ	مُقِرّ	أَقْرِرْ	يُقِرُّ	أَقَرَّ	ق ر ر / أسـ+	4

अस्मा

मआ़नी	जमा	वाह़िद
पोख़्ता वादा	مَوَاثِيْق	مِيْثَاق
ख़ून	دِمَاء	دَم
जान	أَنْفُس	نَفْس
घर	دِيَار	دَار

www.understandquran.com

क़त्ल व इख़्राज (अल-बक़राः85)

ثُمَّ	اَنۡتُمۡ	هٰٓؤُلَآءِ	تَقۡتُلُوۡنَ اَنۡفُسَكُمۡ	وَتُخۡرِجُوۡنَ فَرِيۡقًا	مِّنۡكُمۡ
फिर	तुम (ही)	वह लोग हो	(कि) तुम क़त्ल करते हो अपनों को	और तुम निकालते हो एक फ़रीक़ को	अपने में से

مِّنۡ دِيَارِهِمۡ	تَظٰهَرُوۡنَ عَلَيۡهِمۡ	بِالۡاِثۡمِ	وَالۡعُدۡوَانِ
उन के घरों से,	तुम चढ़ाई करते हो उन पर	गुनाह से	और सर्कशी (से)

وَاِنۡ يَّاۡتُوۡكُمۡ	اُسٰرٰى	تُفٰدُوۡهُمۡ	وَهُوَ	مُحَرَّمٌ عَلَيۡكُمۡ	اِخۡرَاجُهُمۡ
और अगर वह आएँ तुम्हारे पास	क़ैदी (हो कर)	(तो) तुम बदला दे कर छुड़ाते हो उन्हें	हालाँकि वह	ह़राम किया गया है तुम पर	निकालना उनका,

मुख़्तसर शरह़

- ثُمَّ اَنۡتُمۡ هٰٓؤُلَآءِ...: बनीइसराईल की तारीख़ में इस तरह़ के वाक़ेआ़त होते रहे हैं। खुद मदीना में भी यहूद के तीन क़बीलों का रवैय्या इसी तरह़ का था। बनू क़ोरैज़ा मदीना में मौजूद एक अ़रब क़बीला ''औस'' के साथ था तो बनू नज़ीर दूसरे अ़रब क़बीले ''ख़ज़रज'' के साथ थे।
- تَظٰهَرُوۡنَ عَلَيۡهِمۡ...: जंग के मौक़े पर हर क़बीला अपने मददगार क़बीले की ह़िमायत करता था और उन्हें इस बात की कोई फ़िक्र नहीं होती थी कि उन के मद्दे मुक़ाबिल क़बीले में भी यहूद हैं।
- وَاِنۡ يَّاۡتُوۡكُمۡ اُسٰرٰى...: जंग ख़त्म होने के बाद यहूद दूसरे क़बीले के यहूदीयों को फ़िदया दे कर छुड़ा लेते और कहते कि यह तो अल्लाह का हुक्म है।
- تُفٰدُوۡهُمۡ وَهُوَ مُحَرَّمٌ...: जबकि उन्हें लड़ाई की शुरूआ़त ही नहीं करना चाहिए था और न ही उनको उन के घरों से निकालना चाहिए था।
- इस में हम मुसलमानों के लिए भी एक याद-दिहानी है। बहुत ही बदक़िस्मती की बात है कि इन आयतों के पढ़ने वाले बहुत सारे मुसलमानों के दरमियान आज जंग और ख़ूनख़राबा हो रहा है। अल्लाह तआ़ला हर क़िस्म की बुराई से बचने में हमारी मदद फ़रमा।

ह़दीसः ह़ज़रत जाबिर बिन अबदुल्लाह अंसारी रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया ''ज़ुल्म से बचो क्योंकि ज़ुल्म क़यामत के रोज़ तारीकीयाँ बन कर सामने आएगा। (मुस्लिमः **2578**)

अस्बाक़, दुआ़ और प्लानः इन आयात से कई अस्बाक़, दुआ़एँ और प्लान्स बनाए जा सकते हैं। नीचे बतौर मिसाल सिर्फ़ चंद का ज़िक्र है।

- अल्लाह तआ़ला के अ़हकाम की ख़िलाफ़ वरज़ी मत कीजिए।
- इस्लाम के किसी भी ह़िस्से को नज़रअंदाज़ मत कीजिए।

दुआ़ः ऐ अल्लाह मुझे तेरे ग़ज़ब से बचा, और हर एक के हुक़ूक़ अदा करने में मेरी मदद फ़रमा।

प्लानः इन्शा अल्लाह न ही मैं किसी को गाली दूँगा और न ही किसी को तकलीफ़ पहुँचाने का ख़्याल दिल में लाऊँगा।

www.understandquran.com

अस्मा और अफ़्आ़लः इस सबक़ की आयात में आने वाले कुछ अस्मा और अफ़्आ़ल नीचे दिए गए है।

अफ़्आ़लः हर फ़ेअ़ल के तह़त दिए गए तीन अफ़्आ़ल और तीन अस्मा की **TPI** के साथ मशक़ कीजिए

मआ़नी	काम का नाम	اسم مفعول	اسم فاعل	فعل امر	فعل مضارع	فعل ماضٍ	माद्दा व कोड	तकरार
क़त्ल करना	قَتْل	مَقْتُوْل	قَاتِل	اُقْتُلْ	يَقْتُلُ	قَتَلَ	ق ت ل ز	93
ज़ुलम करना	عُدْوَان	مَعْدُوّ	عَادٍ	اُعْدُ	يَعْدُوْ	عَدَا	ع د و دع	20
आना	إِتْيَان	مَأْتِيّ	اٰتٍ	اِئْتِ	يَأْتِيْ	أَتٰى	أ ت ي هد	275
निकालना	إِخْرَاج	مُخْرَج	مُخْرِج	أَخْرِجْ	يُخْرِجُ	أَخْرَجَ	خ ر ج أس+	112
एक दूसरे की मदद करना	تَظَاهُر	مُتَظَاهَر	مُتَظَاهِر	تَظَاهَرْ	يَتَظَاهَرُ	تَظَاهَرَ	ظ ه ر تدا+	3
छुड़ाना	مُفَادَاة	مُفَادًى	مُفَادٍ	فَادِ	يُفَادِيْ	فَادٰى	ف د ي حا+	1
ह़राम करना	تَحْرِيْم	مُحَرَّم	مُحَرِّم	حَرِّمْ	يُحَرِّمُ	حَرَّمَ	ح ر م عل+	44

अस्मा

मआ़नी	जमा	वाह़िद
जान	أَنْفُس	نَفْس
जमाअ़त	فُرَقَاء	فَرِيْق
घर	دِيَار	دَار
गुनाह	اٰثَام	إِثْم
क़ैदी	أُسَارٰى	أَسِيْر

www.understandquran.com

कुरआन सफ़्हा 12c — बाज़ किताब पर ईमान? (अल-बक़राः85-86)

اَفَتُؤْمِنُوْنَ	بِبَعْضِ الْكِتٰبِ	وَتَكْفُرُوْنَ بِبَعْضٍ ۚ	فَمَا جَزَآءُ
क्या फिर तुम ईमान लाते हो	बाज़ हिस्से पर किताब के	और तुम इंकार करते हो बाज़ हिस्से का,	पस क्या सज़ा है

مَنْ يَّفْعَلُ	ذٰلِكَ	مِنْكُمْ	اِلَّا خِزْيٌ	فِى الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۚ
उस की जो करे	यह	तुम में से	सिवाए रुसवाई के	दुनियावी ज़िंदगी में,

وَيَوْمَ الْقِيٰمَةِ	يُرَدُّوْنَ	اِلٰٓى اَشَدِّ الْعَذَابِ ؕ	وَمَا اللّٰهُ	بِغَافِلٍ
और क़यामत के दिन	वह लौटाए जाएंगे	सख़्त अज़ाब की तरफ़,	और नहीं है अल्लाह	बे-ख़बर

عَمَّا تَعْمَلُوْنَ (85)	اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ	اشْتَرَوُا	الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا	بِالْاٰخِرَةِ ۠
उस से जो तुम करते हो।	यही लोग हैं जिन्होंने	ख़रीद ली	दुनियावी ज़िंदगी	आख़िरत के बदले,

فَلَا يُخَفَّفُ	عَنْهُمُ	الْعَذَابُ	وَلَا هُمْ	يُنْصَرُوْنَ (86) ۚ
फिर न हल्का किया जाएगा	उन से	अज़ाब	और न वह	मदद किए जाएंगे।

मुख़्तसर शरह

- اَفَتُؤْمِنُوْنَ بِبَعْضِ الْكِتٰبِ...: इस आयत के शुरूअ में अल्लाह तआला ने बनीइसराईल की आपसी लड़ाईयों का ज़िक्र किया और यह बताया कि वह किस तरह क़ैदीयों को छुड़ाने के लिए तौरात का इस्तिमाल करते थे। यानी वह अपनी ख़ाहिशात के मुताबिक़ तौरात पर अ़मल करते थे।
- उन्होंने किताब के कुछ हिस्सों पर अ़मल किया और उन हिस्सों को छोड़ दिया जिन पर अ़मल करने में उन के ख़्याल के मुताबिक़ उन का कोई दुनियावी फ़ायदा नहीं था।
- इस तरह के लोगों के लिए दोहरा अज़ाब है इस दुनिया में ज़िल्लत व रूस्वाई और आख़िरत में दर्दनाक अज़ाब।
- हम को अल्लाह के किसी भी हुक्म का कोई हिस्सा नहीं छोड़ना चाहिए। मसलन ऐसा न हो कि सर्दी की वजह से हम फ़ज्र की नमाज़ छोड़ दें और बक़िया नमाज़ें एहतिमाम से पढ़ें।
- इस दुनिया की ज़िंदगी बहुत ही मुख़्तसर और आ़रिज़ी है। कोई नहीं जानता कि वह कब मरेगा और कैसे मरेगा। हमारा हाल यह है कि हम एक वक़्त में एक से ज़्यादा खाने से लुतफ़ अंदोज़ नहीं हो सकते, एक वक़्त में एक से ज़ायद लिबास नहीं पहन सकते, और न ही एक वक़्त में एक से ज़ायद कमरों का इस्तिमाल कर सकते हैं। दुनिया में हम गिनती के कुछ साल गुज़ारते हैं, हमेशा नहीं रह सकते। इस लिए यह बहुत ही हिमाक़त की बात होगी कि दुनिया की ख़ातिर अल्लाह के अह़कामात को नज़र अंदाज़ कर दिया जाए।

ह़दीसः रसूलुल्लाह ﷺ के एक फ़रमान के मुताबिक़ (जिसे ह़ज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु ने नक़ल किया है) दो काम ऐसे हैं कि उनकी सज़ा इसी दुनिया में दी जाती हैः ज़ुल्म और वालिदैन की ना फ़रमानी। (सह़ीह़ अल-जामे 2196)

अस्मा और अफ़्आ़लः इस सबक़ की आयात में आने वाले कुछ अस्मा और अफ़्आ़ल नीचे दिए गए है।

- अल्लाह के दीन की मुकम्मल इताअ़त कीजिए और किसी भी हिस्से को मत छोड़िए।
- याद रखिए कि उन लोगों के लिए दोहरा अज़ाब है जो दीन पर अपनी पसंद के मुताबिक़ अ़मल करते हैं।
- अल्लाह के अह़काम को नज़रअंदाज़ करने वालों को ख़ास तन्बीह कि अल्लाह सब कुछ देख रहा है।

दुआ़ः ऐ अल्लाह हमें इस बात से बचा कि हम सिर्फ़ उन्हीं अह़कामात को मानें जो हमारे लिए आसान हैं और बाक़ी को छोड़ दें।

प्लानः इन्शा अल्लाह मैं इस आयत में ब्यान किए गए दोहरे अज़ाब को याद रखूँगा ताकि अपने नफ़्स की ख़ाहिशात पर क़ाबू रख सकूँ

www.understandquran.com

अस्मा और अफ़्आ़लः इस सबक़ की आयात में आने वाले कुछ अस्मा और अफ़्आ़ल नीचे दिए गए है।

अफ़्आ़लः हर फ़ेअ़ल के तह़त दिए गए तीन अफ़्आ़ल और तीन अस्मा की TPI के साथ मशक़ कीजिए

मआ़नी	काम का नाम	اسم مفعول	اسم فاعل	فعل امر	فعل مضارع	فعل ماضٍ	माद्दा व कोड	तकरार
कुफ़्र करना	كُفْر	مَكْفُوْر	كَافِر	اُكْفُرْ	يَكْفُرُ	كَفَرَ	ك ف ر / ذ	465
करना	فِعْل	مَفْعُوْل	فَاعِل	اِفْعَلْ	يَفْعَلُ	فَعَلَ	ف ع ل / ف	105
बे-परवाह होना	غَفْلَة	مَغْفُوْل	غَافِل	اُغْفُلْ	يَغْفُلُ	غَفَلَ	غ ف ل / ذ	34
काम करना	عَمَل	مَعْمُوْل	عَامِل	اِعْمَلْ	يَعْمَلُ	عَمِلَ	ع م ل / س	319
मदद करना	نَصْر	مَنْصُوْر	نَاصِر	اُنْصُرْ	يَنْصُرُ	نَصَرَ	ن ص ر / ذ	94
बदला देना	جَزَاء	مَجْزِيّ	جَازٍ	اِجْزِ	يَجْزِيْ	جَزٰى	ج ز ي / هد	116
लौटाना	رَدّ	مَرْدُوْد	رَادّ	رُدَّ	يَرُدُّ	رَدَّ	ر د د / ظذ	44
ईमान लाना	إِيْمَان	مُؤْمَن	مُؤْمِن	اٰمِنْ	يُؤْمِنُ	اٰمَنَ	أ م ن / أس+	818
ख़रीदना	اِشْتِرَاء	مُشْتَرًى	مُشْتَرٍ	اِشْتَرِ	يَشْتَرِيْ	اِشْتَرٰى	ش ر ي / اِخ+	21
हल्का करना	تَخْفِيْف	مُخَفَّف	مُخَفِّف	خَفِّفْ	يُخَفِّفُ	خَفَّفَ	خ ف ف / عا+	9

अस्मा

मआ़नी	जमा	वाह़िद
दिन	أَيَّام	يَوْم
रूस्वाई	مَخْزَاة	خِزْي
सख़्त	أَشَدّ ↑	شَدِيْد

www.understandquran.com

मूसा व ईसा عليهما السلام और रसूलों से सुलूक? (अल-बक़रा:87-88)

بِالرُّسُلِ	مِنْ بَعْدِهٖ	وَقَفَّيْنَا	الْكِتٰبَ	اٰتَيْنَا مُوْسَى	وَلَقَدْ
कई रसूल	उसके बाद	और हम ने पै-दर-पै भेजे	किताब	हम ने दी मूसा अ़लैहिस्सलाम को	और अलबत्ता तहक़ीक़

بِرُوْحِ الْقُدُسِ	وَاَيَّدْنٰهُ	الْبَيِّنٰتِ	عِيْسَى ابْنَ مَرْيَمَ	وَاٰتَيْنَا
रूहुल-कुदुस (जिबरील) के ज़रिए,	और हम ने मदद की उस की	खुली निशानियाँ	मरियम के बेटे ईसा अ़लैहिस्सलाम को	और हम ने दी

اسْتَكْبَرْتُمْ	لَا تَهْوٰى اَنْفُسُكُمُ	بِمَا	جَآءَكُمْ رَسُوْلٌ	اَفَكُلَّمَا
(तो) तुम ने तकब्बुर किया	न चाहते थे तुम्हारे नफ़्स	उस के साथ जिसे	आया तुम्हारे पास कोई रसूल	क्या फिर जब भी

غُلْفٌ	قُلُوْبُنَا	وَقَالُوْا	وَفَرِيْقًا تَقْتُلُوْنَ (87)	فَفَرِيْقًا كَذَّبْتُمْ
पर्दे में हैं,	हमारे दिल	और उन्होंने कहा	एक गिरोह को तुम क़त्ल करने लगे।	फिर एक गिरोह को तुमने झुठलाया और

يُؤْمِنُوْنَ (88)	فَقَلِيْلًا مَّا	بِكُفْرِهِمْ	لَّعَنَهُمُ اللّٰهُ	بَلْ
ईमान लाते हैं।	चुनांचः कम लोग ही	उनके कुफ़्र के सबब,	लानत की उन पर अल्लाह ने	बल्कि

मुख़्तसर शरह

- गुज़िश्ता आयात में अल्लाह ने बनीइसराईल के ह़ज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम के साथ बुरे सुलूक का ज़िक्र किया है। बनीइसराईल का यह बुरा रवैय्या ह़ज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम के बाद दूसरे अन्बियाए किराम जैसे ह़ज़रत दाऊद, ह़ज़रत सुलैमान, ह़ज़रत जक़रीया, ह़ज़रत यह़या अलैहिमिस्सलाम वग़ैरा के साथ भी जारी रहा।
- ह़ज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम के बाद ह़ज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम का ख़ास तौर पर ज़िक्र किया गया। क्यों? इस लिए कि ह़ज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम को बनी इसराईल की जानिब ज़बरदस्त मोजज़ात दे कर भेजा गया था, जैसे अल्लाह के हुक्म से मुर्दा को दोबारा ज़िंदा कर देना, बीमार को अच्छा कर देना, वग़ैरा।
- رُوْحُ الْقُدُسِ: यानी मुकद्दस रूह़। यह ख़िताब ह़ज़रत जिबरील अ़लैहिस्सलाम को एज़ाज़ के तौर पर दिया गया है।
- यूँ तो हर नबी की मदद ह़ज़रत जिबरील अ़लैहिस्सलाम ही के ज़रिए की जाती है लेकिन ह़ज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम का क़िस्सा ज़रा अलग था। उन्हें बनीइसराईल ही में से उन के दुश्मनों ने हर तरफ़ से घेर लिया था जो उन को क़त्ल कर देना चाहते थे।
- बनीइसराईल अपनी ख़्वहिशात के मुताबिक़ अह़काम चाहते थे, न कि वह अह़काम जो अन्बियाए किराम उन्हें अल्लाह के पास से ला कर पहुँचाते थे। बनीइसराईल में बग़ावत व सर्कशी का जज़्बा इतना भरा हुआ था कि वह नबियों को झुटलाने बल्कि उन को क़त्ल कर देने में भी बिल्कुल नहीं हिचकिचाते थे।
- बनीइसराईल ने कहा: ''हमारे दिल पर्दे में हैं''। यानी यह कि हम अपने अ़क़ीदे में बहुत मज़बूत हैं, और कोई भी और किसी की बात भी हमारे अ़क़ीदे को हिला नहीं सकती।
- अल्लाह तआ़ला उन्के इंकार की असल वजह ब्यान फ़रमा रहा है कि दरअस्ल अल्लाह ने उन पर लानत भेजी है। और लानत इस लिए भेजी है कि उन्होंने ह़क़ को ठुकरा दिया इसी लिए अब वह अल्लाह की रह़मत से दूर हैं।
- तसव्वुर कीजिए कि जब अल्लाह किसी पर लानत भेजे तो वह लानत कितनी भयानक होगी। अस्तग़फ़िरूल्लाह!

www.understandquran.com

ह़दीसः ज़्याद बिन इलाक़ा अपने चचा से नक़ल करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ यह दुआ पढ़ा करते थेः

اَللّٰهُمَّ إِنِّيْ أَعُوْذُ بِكَ مِنْ مُنْكَرَاتِ الأَخْلَاقِ وَالْأَعْمَالِ وَالْأَهْوَاءِ.

ऐ अल्लाह! मैं तुझ से बुरी आ़दतों, बुरे कामों और बुरी ख़्वाहिशों से पनाह माँगता हूँ। (तिरमिज़ी 3591)

अस्बाक़, दुआ़ और प्लानः इन आयात से कई अस्बाक़, दुआ़एँ और प्लान्स बनाए जा सकते हैं। नीचे बतौर मिसाल सिर्फ़ चंद का ज़िक्र है।

- बनीइसराईल ने ह़ज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम, ह़ज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम और दीगर अम्बियाए के किराम साथ निहायत बदतमीज़ी का रवैय्या रखा और उन के पैग़ाम को ठुकरा दिया।
- उन्होंने ह़ज़रत मोह़म्मद ﷺ की दावत को भी ठुकरा दिया, चुनांचः अल्लाह तआ़ला ने उन्हें अपनी रह़मत से दूर कर दिया।
- यह अल्लाह का करम और उसका फ़ज़्ल है कि उस ने रसूल भेजे ताकि लोग गुमराह न हों।
- ह़ज़रत जिब्रील अ़लैहिस्सलाम अल्लाह के एक मुअ़ज़्ज़ज़ फ़रिश्ते हैं जो अम्बियाए किराम के पास अल्लाह की वह्य लाने का काम करते हैं। उन्हें ''रूहुल-कुदुस'' भी कहा जाता है।

दुआ़ः ऐ अल्लाह हमारे दिलों को तेरी हिदायत क़ुबूल करने वाला बना। हमें रसूल ﷺ की सच्ची पैरवी करने वाला बना।
प्लानः इन्शा अल्लाह! मैं अच्छे और नेक लोगों से मश्वरा लूँगा और उन की बात को तवज्जोह और ख़ामोशी से सुनूँगा। अगर ग़ुस्सा आए तो भी हट धर्मी नहीं करूँगा।

अस्मा और अफ़्आ़लः इस सबक़ की आयात में आने वाले कुछ अस्मा और अफ़्आ़ल नीचे दिए गए है।

अफ़्आ़लः हर फ़ेअ़ल के तह़त दिए गए तीन अफ़्आ़ल और तीन अस्मा की TPI के साथ मश्क़ कीजिए

मआ़नी	काम का नाम	اسم مفعول	اسم فاعل	فعل امر	فعل مضارع	فعل ماضٍ	माद्दा व कोड	तकरार
क़त्ल करना	قَتْل	مَقْتُوْل	قَاتِل	اُقْتُلْ	يَقْتُلُ	قَتَلَ	ق ت ل / ذ	93
लानत करना	لَعْن	مَلْعُوْن	لَاعِن	اِلْعَنْ	يَلْعَنُ	لَعَنَ	ل ع ن / ف	27
कुफ़्र करना	كُفْر	مَكْفُوْر	كَافِر	اُكْفُرْ	يَكْفُرُ	كَفَرَ	ك ف ر / ذ	465
आना	جَيْئَة	–	جَاءٍ	جِئْ	يَجِيْءُ	جَاءَ	ج ي أ / زا	277
ख़ाहिश करना	هَوًى	مَهْوِيّ	هَوٍ	اِهْوَ	يَهْوٰى	هَوِيَ	ه و ي / رضـ	13
कहना	قَوْل	مَقُوْل	قَائِل	قُلْ	يَقُوْلُ	قَالَ	ق و ل / قا	1719
कम होना	قَلّ	–	قَلِيْل	قِلَّ	يَقِلُّ	قَلَّ	ق ل ل / ضلـ	72
देना	إِيْتَاء	مُؤْتًى	مُؤْتٍ	اٰتِ	يُؤْتِيْ	اٰتٰى	أ ت ي / أسـ+	274
लगातार भेजना	تَقْفِيَة	مُقَفًّى	مُقَفٍّ	قَفِّ	يُقَفِّيْ	قَفّٰى	ق ف و / علـ+	4
क़ुवत देना	تَأْيِيْد	مُؤَيَّد	مُؤَيِّد	أَيِّدْ	يُؤَيِّدُ	أَيَّدَ	أ ي د / علـ+	9
तकब्बुर करना	اِسْتِكْبَار	مُسْتَكْبَر	مُسْتَكْبِر	اِسْتَكْبِرْ	يَسْتَكْبِرُ	اِسْتَكْبَرَ	ك ب ر / اِسـ+	48
झुटलाना	تَكْذِيْب	مُكَذَّب	مُكَذِّب	كَذِّبْ	يُكَذِّبُ	كَذَّبَ	ك ذ ب / علـ+	198
ईमान लाना	إِيْمَان	مُؤْمَن	مُؤْمِن	اٰمِنْ	يُؤْمِنُ	اٰمَنَ	أ م ن / أسـ+	818

अस्मा

मआ़नी	जमा	वाह़िद
किताब	كُتُب	كِتَاب
रसूल	رُسُل	رَسُوْل
वाज़ेह़ दलील	بَيِّنَات	بَيِّنَة
जान	أَنْفُس	نَفْس
दिल	قُلُوْب	قَلْب
ग़िलाफ़, पर्दा	غُلُف	أَغْلَف

www.understandquran.com

कुरआन सफ़्हा 13a किताब आने पर इंकार (अल-बक़राः89)

وَلَمَّا	جَآءَهُمْ كِتٰبٌ	مِّنْ عِنْدِ اللّٰهِ	مُصَدِّقٌ	لِّمَا	مَعَهُمْ
और जब	आई उन के पास किताब	उलल्लाह के पास से	तसदीक़ करने वाली	उस की जो	उन के पास है

وَكَانُوْا	مِنْ قَبْلُ	يَسْتَفْتِحُوْنَ	عَلَى الَّذِيْنَ	كَفَرُوْا ۚ	فَلَمَّا
और वह थे	उस से पहले	फ़तह माँगते	उन के ख़िलाफ़ जिन्होंने	कुफ़्र किया,	फिर जब

جَآءَهُمْ	مَّا عَرَفُوْا	كَفَرُوْا بِهٖ ۚ	فَلَعْنَةُ اللّٰهِ	عَلَى الْكٰفِرِيْنَ (89)
आया उन के पास वह (हक़)	जिसे वह पहचानते थे	(तो) उन्होंने कुफ़्र किया उस के साथ,	सो लानत हो अल्लाह की	काफ़िरों पर।

मुख़्तसर शरह

- मदीना के यहूदी उस नबी की आमद के इंतिज़ार में थे जिस का ज़िक्र उनकी किताबों में मौजूद था। जब भी उन्हें मदीना के मुशरिकों के हाथों शिकस्त होती तो वह अल्लाह से दुआ करते थे कि वह उस नबी को जल्द से जल्द भेज दे; ताकि उस के साथ मिल कर दूसरों को शिकस्त दे सकें। खुद मदीना में रहने वाले लोग भी यहूदियों के तअ़ल्लुक़ से इन बातों को जान चुके थे।
- मदीना के यहूदी इस बात को न सिर्फ़ जान चुके थे बल्कि वह आपस में यह कहते थे कि हज़रत मोहम्मद ﷺ एक सच्चे नबी हैं और यह वही हैं जिन का ज़िक्र उन की किताबों में मौजूद है।
- सिर्फ़ इल्म का होना काफ़ी नहीं है बल्कि उस इल्म पर अ़मल भी होना चाहिए। जब हमें सच्चाई का इल्म हो जाए तो फिर उसे फ़ौरन क़बूल कर लेना चाहिए
- उन्होंने रसूलुल्लाह ﷺ का इंकार क्यों किया था इस की तफ़सील अगली आयात में आ रही है।

हदीसः रसूलुल्लाह ﷺ की एक अहलिया हज़रत सफ़िया रज़ियल्लाहु अन्हा एक यहूदी आ़लिम की बेटी और दूसरे की भांजी थीं। वह फ़रमाती हैं कि जब रसूलुल्लाह ﷺ हिजरत फ़रमा कर मदीना तशरीफ़ लाए तो मेरे वालिद और चचा रसूलुल्लाह ﷺ को देखने गए। जब वह लोग घर लौटे तो मैंने उन्हें यह गुफ़्तगु करते हुए सुनाः

चचाः क्या यह हक़ीक़त में वही नबी है जिस के बारे में हमारी किताबों में पेशीन गोईयाँ मौजूद हैं?

वालिदः हाँ खुदा की क़सम! यह वही है।

चचाः क्या तुम को यक़ीन है?

वालिदः हाँ, बिल्कुल!

चचाः तो फिर अब तुम्हारा क्या इरादा है?

वालिदः मैं अपनी हद तक उस की भरपूर मुख़ालिफ़त करूँगा और उसे अपने मिशन में कामयाब नहीं होने दूँगा।

(सीरत इब्ने हिशामः जिल्द **2**)

अस्बाक़, दुआ और प्लानः इन आयात से कई अस्बाक़, दुआएँ और प्लान्स बनाए जा सकते हैं। नीचे बतौर मिसाल सिर्फ़ चंद का ज़िक्र है।

- बनीइसराईल अल्लाह तआ़ला से एक नबी की दुआ माँग रहे थे। उन्हें उस नबी की आमद के बारे में और उस की निशानियों के बारे में इल्म हो चुका था।
- जब वह नबी यानी हज़रत मोहम्मद ﷺ तशरीफ़ लाए तो बनीइसराईल ने जान-बूझ कर उनका इंकार कर दिया।
- अल्लाह की लानत हो काफ़िरों पर, यानी अल्लाह ने उन्हें अपनी रहमत से दूर कर दिया। तसव्वुर कीजिए कि क़यामत के रोज़ ऐसे लोगों की क्या हालत होगी और वह कैसा महसूस कर रहे होंगे!

www.understandquran.com

दुआ: ऐ अल्लाह मुझे ऐसा बना दीजिए कि मैं ह़क़ को जान लेने के बाद उस का इंकार न करूँ।
प्लान: इन्शा अल्लाह मैं इस बात को याद रखूँगा कि अल्लाह तआ़ला ने ह़क़ का इंकार करने वालों पर लानत भेजी है ताकि में कभी ह़क़ का इंकार न करूँ।

अस्मा और अफ़्आ़ल: इस सबक़ की आयात में आने वाले कुछ अस्मा और अफ़्आ़ल नीचे दिए गए है।

अफ़्आ़ल: हर फ़ेअ़ल के तह़त दिए गए तीन अफ़्आ़ल और तीन अस्मा की **TPI** के साथ मशक़ कीजिए

मआ़नी	काम का नाम	اسم مفعول	اسم فاعل	فعل امر	فعل مضارع	فعل ماضٍ	माद्दा व कोड	तकरार
कुफ़्र करना	كُفْر	مَكْفُوْر	كَافِر	اُكْفُرْ	يَكْفُرُ	كَفَرَ	ك ف ر ذ	465
पहचानना	عِرْفَان	مَعْرُوْف	عَارِف	اِعْرِفْ	يَعْرِفُ	عَرَفَ	ع ر ف ض	59
आना	جَيْئَة	–	جَاءٍ	جِئْ	يَجِيْءُ	جَاءَ	ج ي أ زا	277
होना	كَوْن	–	كَائِن	كُنْ	يَكُوْنُ	كَانَ	ك و ن قا	1358
तसदीक़ करना	تَصْدِيْق	مُصَدَّق	مُصَدِّق	صَدِّقْ	يُصَدِّقُ	صَدَّقَ	ص د ق عا+	31
फ़तह़ माँगना	اِسْتِفْتَاح	مُسْتَفْتَح	مُسْتَفْتِح	اِسْتَفْتِحْ	يَسْتَفْتِحُ	اِسْتَفْتَحَ	ف ت ح اِس+	3

अस्मा

मआ़नी	जमा	वाह़िद
किताब	كُتُب	كِتَاب

www.understandquran.com

कुरआन सफ़्हा 13b — बुरा सौदा कुफ़्र का (अल-बक़रा:90)

بِئْسَمَا اشْتَرَوْا بِهٖٓ اَنْفُسَهُمْ اَنْ يَّكْفُرُوْا بِمَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ بَغْيًا

(इस) ज़िद से	नाज़िल किया अल्लाह ने	उस से जो	कि वह मुनकिर हुए	अपने आप को	उस के बदले	(कि) बेच डाला उन्होंने	बुरी है वह चीज़

اَنْ يُّنَزِّلَ اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖ عَلٰى مَنْ يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖ ۚ

कि नाज़िल करता है अल्लाह	अपने फ़ज़्ल से	जिस के ऊपर चाहे	अपने बंदों में से,

فَبَآءُوْ بِغَضَبٍ عَلٰى غَضَبٍ ۭ وَلِلْكٰفِرِيْنَ عَذَابٌ مُّهِيْنٌ ﴿90﴾

सो वह कमा लाए	ग़ज़ब पर ग़ज़ब,	और काफ़िरों के लिए	रुस्वा करने वाला अ़ज़ाब है।

मुख़्तसर शरह

- जिन लोगों ने कुफ़्र किया दरअसल उन्होंने अपने आप को बेच दिया यानी उन्होंने अपनी ज़िंदगी को कुफ़्र के ह़वाले कर दिया। रसूलुल्लाह ﷺ का साथ देने के बजाए कुफ़्र का साथ दिया।
- उन्होंने अपने आप को क्यों बेच दिया? इस लिए कि उन के दिलों में कीना, ह़सद, बुग़्ज़ और सर्कशी के ज़ज़्बात थे। उन्होंने ह़ज़रत मोह़म्मद ﷺ का इंकार सिर्फ़ इस लिए कर दिया क्योंकि आप ﷺ बनीइसराईल में से नहीं थे। शायद अल्लाह को उन से मश्वरा करना चाहिए था कि वह किस को अपना नबी बनाए असल बात यह थी अल्लाह के अह़काम पर अ़मल करने के बजाए वह लोग अपनी ख़ाहिशात की पैरवी करते थे।
- مِنْ عِبَادِهٖ: अल्लाह तआ़ला अपने बंदों में से जिस पर चाहता है अपना फ़ज़्ल नाज़िल फ़रमाता है।
- غَضَبٍ عَلٰى غَضَبٍ: उन के कुफ़्र व सर्कशी की वजह से उन पर अल्लाह का ग़ज़ब पर ग़ज़ब नाज़िल हुआ।
- مُّهِيْنٌ: अल्लाह तआ़ला उनको सिर्फ़ सज़ा दे कर नहीं बल्कि ज़िल्लत भरी सज़ा दे कर उन की सर्कशी को कुचलेगा। और यह सज़ा सिर्फ़ और सिर्फ़ उन के कुफ़्र की वजह से होगी। (وَلِلْكَافِرِيْنَ)

ह़दीस: ह़ज़रत ज़ुबैर बिन अ़व्वाम रज़ियल्लहु अन्हु रिवायत करते हैं कि रसूल अकरम ﷺ ने इरशाद फ़रमाया: ''तुम्हारे अंदर तुमसे पहली उम्मतों का एक मर्ज़ घुस आया है, और वह ह़सद और बुग़्ज़ की बीमारी है जो मूंडने वाली है। मैं यह नहीं कहता कि सर के बाल मूंडने वाली है; बल्कि दीन मूंडने वाली है। क़सम है उस ज़ात की जिस के हाथ में मेरी जान है! तुम लोग जन्नत में नहीं दाख़िल होगे जब तक कि ईमान न लाओ, और मोमिन नहीं हो सकते यहाँ तक कि आपस में मुह़ब्बत न करने लगो, और क्या मैं तुम्हें ऐसी बात न बता दूँ जिस से तुम्हारे दरमियान मुह़ब्बत क़ायम हो? तुम आपस में सलाम को फैलाव''। (तिरमिज़ी:2510)

अस्बाक़, दुआ और प्लान: इन आयात से कई अस्बाक़, दुआएँ और प्लान्स बनाए जा सकते हैं। नीचे बतौर मिसाल सिर्फ़ चंद का ज़िक्र है।

- जिन लोगों ने नबी का इंकार किया उन्होंने अपने आप को बेच दिया, अपने आप को कुफ़्र के ह़वाले कर दिया, और यह ह़सद और ज़िद की वजह से किया।
- ऐसे लोगों पर अल्लाह का ग़ज़ब पर ग़ज़ब होगा।
- इन लोगों को सिर्फ़ सज़ा ही नहीं मिलेगी, बल्कि ज़लील व रूसवा करने वाली सज़ा मिलेगी

दुआ: ऐ अल्लाह! इस बात से मेरी हिफ़ाज़त फ़रमा कि मेरे दिल में तेरे किसी हुक्म के बारे में सर्कशी का जज़्बा पैदा हो। ऐ अल्लाह बुग़्ज़ व दुशमनी से मुझे बचा ले।

प्लान: इन्शा अल्लाह मैं हमेशा अल्लाह की ह़िक्मत, उसकी क़ुदरत, उसके इंआ़मात को और उसकी रुस्वा करने वाली सज़ाओं को याद रखूँगा, ख़ास तौर पर उस वक़्त जब मेरे दिल में अल्लाह की ना-फ़रमानी के वस्वसे आएँ।

www.understandquran.com

अस्मा और अफ़्आ़लः इस सबक़ की आयात में आने वाले कुछ अस्मा और अफ़्आ़ल नीचे दिए गए है।

अफ़्आ़लः हर फ़ेअ़ल के तह़त दिए गए तीन अफ़्आ़ल और तीन अस्मा की TPI के साथ मशक़ कीजिए

मआ़नी	काम का नाम	اسم مفعول	اسم فاعل	فعل امر	فعل مضارع	فعل ماضٍ	माद्दा व कोड	तकरार
कुफ़्र करना	كُفْر	مَكْفُوْر	كَافِر	اُكْفُرْ	يَكْفُرُ	كَفَرَ	ك ف ر ذ	465
नाराज़ होना	غَضَب	مَغْضُوْب	غَاضِب	اِغْضَبْ	يَغْضَبُ	غَضِبَ	غ ض ب سـ	23
ह़सद करना	بَغْي	مَبْغِيّ	بَاغٍ	اِبْغِ	يَبْغِيْ	بَغٰى	ب غ ي هد	22
चाहना	شَيْئ	مَشِيْء	شَاءٍ	شَأْ	يَشَاءُ	شَاءَ	ش ي أ خا	236
फिरना	بَوَاء	–	باءٍ	بُؤْ	يَبُوْءُ	بَاءَ	ب و أ قا	6
ख़रीदना	اِشْتِرَاء	مُشْتَرًى	مُشْتَرٍ	اِشْتَرِ	يَشْتَرِيْ	اِشْتَرٰى	ش ر ي اِخ+	21
उतारना	إِنْزَال	مُنْزَل	مُنْزِل	أَنْزِلْ	يُنْزِلُ	أَنْزَلَ	ن ز ل أسـ+	190
उतारना	تَنْزِيْل	مُنَزَّل	مُنَزِّل	نَزِّلْ	يُنَزِّلُ	نَزَّلَ	ن ز ل علـ+	79
रूसवा करना	إِهَانَة	مُهَان	مُهِيْن	أَهِنْ	يُهِيْنُ	أَهَانَ	ه و ن أسـ+	16

अस्मा

मआ़नी	जमा	वाह़िद
जान	أَنْفُس	نَفْس
एह़सान	أَفْضَال	فَضْل

www.understandquran.com

कुरआन सफ़्हा 13c — ईमान लाओ (अल-बक़राः91-92)

وَاِذَا قِيۡلَ لَهُمۡ اٰمِنُوۡا بِمَآ اَنۡزَلَ اللّٰهُ قَالُوۡا

(तो) वह कहते हैं:	नाज़िल किया अल्लाह ने	उस पर जो	तुम ईमान लाओ	और जब कहा जाता है उन से:

نُؤۡمِنُ بِمَآ اُنۡزِلَ عَلَيۡنَا وَيَكۡفُرُوۡنَ بِمَا وَرَآءَهٗ ۗ وَهُوَ

हम ईमान लाते हैं	उस पर जो	नाज़िल किया गया हम पर	और वह इंकार करते हैं	उस से जो उसके इलावा है;	हालाँकि वह

الۡحَقُّ مُصَدِّقًا لِّمَا مَعَهُمۡ ؕ قُلۡ فَلِمَ تَقۡتُلُوۡنَ

हक़ है	तस्दीक़ करने वाला	उस की जो उनके पास है,	कह दीजिए:	सो क्यों तुम क़त्ल करते रहे

اَنۡۢبِيَآءَ اللّٰهِ مِنۡ قَبۡلُ اِنۡ كُنۡتُمۡ مُّؤۡمِنِيۡنَ ﴿91﴾ وَلَقَدۡ جَآءَكُمۡ

अल्लाह के नबियों को	इस से पहले	अगर तुम मोमिन हो।	और अलबत्ता तहक़ीक़	आए तुम्हारे पास

مُّوۡسٰى بِالۡبَيِّنٰتِ ثُمَّ اتَّخَذۡتُمُ الۡعِجۡلَ مِنۡۢ بَعۡدِهٖ وَاَنۡتُمۡ

मूसा अ़लैहिस्सलाम	खुली निशानियों के साथ,	फिर तुमने बना लिया	बछड़े को (माबूद)	इस के बाद	और तुम

ظٰلِمُوۡنَ ﴿92﴾

ज़ालिम हो।

मुख़्तसर शरह़

- जब भी बनीइसराईल को कुरआन पर ईमान लाने के लिए कहा जाता तो वह कहते कि हम तो सिर्फ़ तौरात पर ईमान लाते हैं और दूसरी तमाम चीज़ों का इंकार करते हैं।
- अगर वह तौरात पर सच्चा ईमान रखते तो कुरआन पर भी ईमान लाते, क्योंकि:
  1. तौरात में बताया गया है कि ह़ज़रत मोह़म्मद ﷺ आने वाले हैं। आप ﷺ की आमद और कुरआन इस बात का सबूत है कि तौरात सच्ची किताब है।
  2. कुरआन तौरात के सच्चे होने की तसदीक़ करता है कि तौरात भी अल्लाह ही की किताब है।
- यहाँ कुरआन अ़क़ीदे के बारे में उन के खोखले दावे को बे-नक़ाब कर रहा है कि उन की ह़क़ीक़त तो यह है कि उन्होंने अल्लाह के नबियों को क़त्ल किया है। मूसा अ़लैहिस्सलाम उन के सब से बड़े मोह़सिन थे जिनके ज़रिया उन को निजात मिली और उन के ज़रिया उन्होंने कई मोजज़े देखे। लेकिन इन सब के बावजूद उन्होंने बछड़े की पूजा की और हारून अ़लैहिस्सलाम के रोकने पर उन को क़त्ल करने पर तैयार हो गए।
- अल्लाह तआ़ला उन से सवाल कर रहा है कि क्या तुम्हारा ईमान कहता है कि तुम नबियों को क़त्ल करो या बछड़े की इबादत करो? सच तो यह है कि तुम ज़ालिमों में से हो।

ह़दीसः ह़ज़रत उमर रज़ियल्लहु अन्हु एक तवील ह़दीस में नक़ल करते हैं कि फिर उस शख़्स (ह़ज़रत जिब्रील अ़लैहिस्सलाम) ने कहा: मुझको बताईए ईमान क्या है? आप ﷺ ने फ़रमायाः "ईमान यह है कि तुम अल्लाह पर, उस के फ़रिश्तों पर, उस की किताबों पर, उस के रसूलों पर और आख़िरत के दिन पर ईमान लाओ, और इस बात पर ईमान लाओ कि तक़दीर में जो है -बुरा और अच्छा- सब अल्लाह पाक की तरफ़ से है। (मुस्लिमः 8)

www.understandquran.com

अस्बाक़, दुआ़ और प्लान: इन आयात से कई अस्बाक़, दुआ़एँ और प्लान्स बनाए जा सकते हैं। नीचे बतौर मिसाल सिर्फ़ चंद का ज़िक्र है।

- यहूदीयों ने नबी करीम ﷺ की दावत का यह कहते हुए इंकार कर दिया कि वह सिर्फ़ उसी पर ईमान लाएंगे जो उन पर (तौरात में) नाज़िल किया गया है।
- अल्लाह तआ़ला उन के अपने दावे में सच्चे न होने को ज़ाहिर करते हुए फ़रमा रहा है कि अगर तुम तौरात के सच्चे मानने वाले होते तो तुम नबियों को क़त्ल नहीं करते और न ही एक बछड़े की इबादत करते।

दुआ़: ऐ अल्लाह कुरआन पर पुख़्ता ईमान रखने में और उस पर इख़्लास के साथ अ़मल करने में मेरी मदद फ़रमा।
प्लान: इन्शा अल्लाह मैं ह़क़ बात को कुबूल करूँगा चाहे कहने वाला कोई भी हो।

अस्मा और अफ़्आ़ल: इस सबक़ की आयात में आने वाले कुछ अस्मा और अफ़्आ़ल नीचे दिए गए है।

अफ़्आ़ल: हर फ़ेअ़ल के तह़त दिए गए तीन अफ़्आ़ल और तीन अस्मा की TPI के साथ मशक़ कीजिए

मआ़नी	काम का नाम	اسم مفعول	اسم فاعل	فعل امر	فعل مضارع	فعل ماضٍ	माद्दा व कोड	तकरार
कुफ़्र करना	كُفْر	مَكْفُوْر	كَافِر	اُكْفُرْ	يَكْفُرُ	كَفَرَ	ك ف ر / ذ	465
क़त्ल करना	قَتْل	مَقْتُوْل	قَاتِل	اُقْتُلْ	يَقْتُلُ	قَتَلَ	ق ت ل / ذ	93
ज़ुल्म करना	ظُلْم	مَظْلُوْم	ظَالِم	اِظْلِمْ	يَظْلِمُ	ظَلَمَ	ظ ل م / ضـ	266
कहना	قَوْل	مَقُوْل	قَائِل	قُلْ	يَقُوْلُ	قَالَ	ق و ل / قا	1719
साबित होना	حَقّ	–	حَقِيْق	اِحْقِقْ	يَحِقُّ	حَقَّ	ح ق ق / ضل	270
होना	كَوْن	–	كَائِن	كُنْ	يَكُوْنُ	كَانَ	ك و ن / قا	1358
आना	مَجِيْئَة	–	جَاءٍ	جِئْ	يَجِيْءُ	جَاءَ	ج ي أ / زا	277
ईमान लाना	إِيْمَان	مُؤْمَن	مُؤْمِن	اٰمِنْ	يُؤْمِنُ	اٰمَنَ	أ م ن / أسـ+	818
नाज़िल करना	إِنْزَال	مُنْزَل	مُنْزِل	أَنْزِلْ	يُنْزِلُ	أَنْزَلَ	ن ز ل / أسـ+	190
तसदीक़ करना	تَصْدِيْق	مُصَدَّق	مُصَدِّق	صَدِّقْ	يُصَدِّقُ	صَدَّقَ	ص د ق / علـ+	31
बनाना	اِتِّخَاذ	مُتَّخَذ	مُتَّخِذ	اِتَّخِذْ	يَتَّخِذُ	اِتَّخَذَ	أ خ ذ / اِخـ+	128

अस्मा

मआ़नी	जमा	वाह़िद
नबी	أَنْبِيَاء	نَبِيّ
वाज़ेह़ दलील	بَيِّنَات	بَيِّنَة
बछड़ा	عُجُوْل	عِجْل

www.understandquran.com

मिसाक़, तूर उठा कर (अल-बक़राः93)

وَاِذْ اَخَذْنَا	مِيْثَاقَكُمْ	وَرَفَعْنَا	فَوْقَكُمُ
और जब हम ने लिया	तुम से पुख़्ता अ़ह्द	और हम ने बुलंद किया	तुम्हारे ऊपर

الطُّوْرَ ؕ	خُذُوْا	مَآ اٰتَيْنٰكُمْ	بِقُوَّةٍ	وَّاسْمَعُوْا ؕ	قَالُوْا	سَمِعْنَا
कोह तूर को,	पकड़ो	जो हम ने दिया तुम्हें	मज़बूती से	और सुनो,	उन्होंने कहाः	हम ने सुना

وَعَصَيْنَا ۗ	وَاُشْرِبُوْا	فِىْ قُلُوْبِهِمُ	الْعِجْلَ	بِكُفْرِهِمْ ؕ
और हम ने ना-फ़रमानी की।	और रचा दिया गया	उन के दिलों में	बछड़ा	उन के कुफ़्र के सबब

قُلْ	بِئْسَمَا	يَاْمُرُكُمْ بِهٖٓ	اِيْمَانُكُمْ	اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ (93)
कह दीजिएः	क्या ही बुरा है जो	तुम्हें हुक्म देता है इस का	तुम्हारा ईमान	अगर तुम मोमिन हो।

मुख़्तसर शरह़

- وَاِذْ اَخَذْنَا مِيْثَاقَكُمْ...: बनीइसराईल तौरात को क़बूल करने में सुस्त और ग़ैर संजीदा थे। उन्हें डराने की ख़ातिर अल्लाह तआ़ला ने उन पर कोहे तूर उठाया था। और यह उन पर ईमान को मुसल्लत करने के लिए नहीं था बल्कि इस लिए था कि वह पहले ही ह़ज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम पर ईमान ला चूके थे। अब उनकी भलाई के लिए अल्लाह तआ़ला ने उन पर अपनी ताक़त का मुज़ाहिरा किया ताकि वह अपने अ़ह्द को याद रखें।
- बनीइसराईल पर कोहे तूर को उठाने से यह बात पता चलती है कि अपनी किताब पर अ़मल के सिलसिले में अल्लाह तआ़ला कितना संजीदा है।
- خُذُوْا مَا اٰتَيْنٰكُمْ...: जो कुछ हम ने तुम को दिया है उसे मज़बूती से पकड़ो! उन्हें तौरात को मज़बूती से पकड़ने यानी उस के हुक़ूक़ अदा करने, जैसे तिलावत करने, समझने, अ़मल करने और उस की तब्लीग़ करने का हुक्म दिया गया था। बिल्कुल यही बात आज कुरआन मजीद के तअ़ल्लुक़ से है।
- कुछ लम्ह़ों के लिए अपनी आँखों को बंद कर के तसव्वुर कीजिए कि वह मंज़र कितना भयानक रहा होगा इतना सब होने के बावजूद भी बनीइसराईल ने जवाब दिया कि हम सुनते हैं और हम ना-फ़रमानी करते हैं वह कितने नाफ़रमान और सरकश लोग थे यह तो अल्लाह का रह़म व करम था कि उस ने उन्हें बर्बाद नहीं कर दिया।
- قَالُوْا سَمِعْنَا وَعَصَيْنَا...: इस के दूसरे माअ़ना यह हैं कि उन का "سَمِعْنَا", कहना यह सिर्फ़ उन की ज़ुबान पर था; मगर उन के दिलों में "عَصَيْنَا" था। और यही वह चीज़ थी जो उन के कामों से ज़ाहिर हो रही थी। क्या हम भी उसी तरह़ के काम कर रहे हैं? हम कुरआन पर ईमान रखने का दावा करते हैं लेकिन हमारे मआ़शी मुआ़मिलात और मुआ़शरती रस्म-व-रिवाज जैसे शादियाँ वग़ैरा कैसे हैं? क्या हम इन में भी इस्लाम पर अ़मल करते हैं?
- وَاُشْرِبُوْا: "उन्हें पिला दी गई"।जब इंसान पानी पीता है तो यह पानी उस के खून की नालियों में फैल जाता है। वह लोग बछड़े की मुह़ब्बत पिला दिए गए थे यानी वह उस के बहुत दिलदादह हो गए थे।
- उनके कुफ़्र और शिर्क और ना-फ़रमानियों की वजह से उन्हें बछड़े की मुहब्बत में छोड़ दिया गया। इस में एक अहम सबक़ यह है कि एक गुनाह दूसरे गुनाह की तरफ़ ले जाता है, और इस तरह़ आख़िर कार ऐसे लोगों को अल्लाह अपनी रह़मत से दूर कर देता है।

ह़दीसः ह़ज़रत ज़ैद बिन अरक़म रज़ियल्लाहु अन्हु रिवायत करते हैं कि एक दिन रसूलुल्लाह ﷺ हम लोगों के दरमियान मक्का और मदीना के बीच एक पानी वाली जगह जिसे (ख़ुम) कहते हैं ख़ुतबा देने के लिए खड़े हुए, आप ﷺ ने अल्लाह की ह़म्द व सना ब्यान की और वाज़ व नसीह़त करने के बाद फ़रमाया कि ऐ लोगो! में भी इंसान हूँ क़रीब है कि मेरे परवरदिगार का

www.understandquran.com

भेजा हुआ फ़रिश्ता (मौत का फ़रिश्ता) आए और में उसकी दावत को क़बूल करूँ, अलबत्ता में तुम में दो बड़ी बड़ी चीज़ें छोड़े जाता हूँ, पहले तो अल्लाह की किताब इस में हिदायत है और नूर है, तो अल्लाह की किताब को थामे रहो और उस को मज़बूत पकड़े रहो। ग़र्ज़ यह कि आप ﷺ ने अल्लाह की किताब की जानिब खूब रग़बत दिलाई। (मुस्लिमः **2408**)

अस्बाक़, दुआ और प्लानः इन आयात से कई अस्बाक़, दुआएँ और प्लान्स बनाए जा सकते हैं। नीचे बतौर मिसाल सिर्फ़ चंद का ज़िक्र है।

- अल्लाह तआ़ला ने उसकी किताब के हुक़ूक़ अदा करने के बारे में बहुत अहमीयत दी है।
- गुनाह के बाद तौबा न करना दूसरे गुनाह पर उभारता है।
- सुनना अ़मल की जानिब पहला क़दम है, इस लिए क़ुरआन को और उसके माअ़नी व मफ़हूम को तवज्जोह से सुनना चाहिए; ताकि हम उसे समझ कर अल्लाह के अह़काम की इताअ़त करें।

दुआः ऐ अल्लाह! हमें तौफ़ीक़ दे कि हम हमेशा तेरी इताअ़त-व-फ़रमाँबर्दारी करें।

प्लानः इन्शा अल्लाह मैं हमेशा क़ुरआन से जुड़े रहने की और उसके तमाम हुक़ूक़ अदा करने की कोशिश करूँगा।

अस्मा और अफ़्आ़लः इस सबक़ की आयात में आने वाले कुछ अस्मा और अफ़्आ़ल नीचे दिए गए है।

अफ़्आ़लः हर फ़ेअ़ल के तह़त दिए गए तीन अफ़्आ़ल और तीन अस्मा की **TPI** के साथ मशक़ कीजिए

माअ़नी	काम का नाम	اسم مفعول	اسم فاعل	فعل امر	فعل مضارع	فعل ماضِ	माद्दा व कोड	तकरार
लेना	أَخْذ	مَأْخُوْذ	اٰخِذ	خُذْ	يَأْخُذُ	أَخَذَ	أ خ ذ / ذ	135
बुलंद करना	رَفْع	مَرْفُوْع	رَافِع	اِرْفَعْ	يَرْفَعُ	رَفَعَ	ر ف ع / ف	28
सुनना	سَمْع	مَسْمُوْع	سَامِع	اِسْمَعْ	يَسْمَعُ	سَمِعَ	س م ع / سـ	147
कुफ़्र करना	كُفْر	مَكْفُوْر	كَافِر	اُكْفُرْ	يَكْفُرُ	كَفَرَ	ك ف ر / ذ	465
हुक्म देना	أَمْر	مَأْمُوْر	اٰمِر	مُرْ	يَأْمُرُ	أَمَرَ	أ م ر / ذ	231
ताक़त होना	قُوَّة	مَقْوِيّ	قَوِيّ	اِقْوَ	يَقْوٰى	قَوِيَ	ق و ى / رضـ	40
कहना	قَوْل	مَقُوْل	قَائِل	قُلْ	يَقُوْلُ	قَالَ	ق و ل / قا	1719
ना-फ़रमानी करना	مَعْصِيَة	مَعْصِيّ	عَاصٍ	اِعْصِ	يَعْصِيْ	عَصٰى	ع ص ي / هد	32
देना	إِيْتَاء	مُؤْتًى	مُؤْتٍ	اٰتِ	يُؤْتِيْ	اٰتٰى	أ ت ي / أسـ+	274
पिलाना	إِشْرَاب	مُشْرَب	مُشْرِب	أَشْرِبْ	يُشْرِبُ	أَشْرَبَ	ش ر ب / أسـ+	1
ईमान लाना	إِيْمَان	مُؤْمَن	مُؤْمِن	اٰمِنْ	يُؤْمِنُ	اٰمَنَ	أ م ن / أسـ+	818

अस्मा

माअ़नी	जमा	वाह़िद
पुख़्ता अ़ह्द	مَوَاثِيْق	مِيْثَاق
दिल	قُلُوْب	قَلْب
बछड़ा	عُجُوْل	عِجْل

www.understandquran.com

कुरआन सफ़्हा 14a — आख़िरत सिर्फ़ तुम्हारी (अल-बक़राः94-95)

قُلْ	اِنْ كَانَتْ	لَكُمُ	الدَّارُ الْاٰخِرَةُ	عِنْدَ اللّٰهِ	خَالِصَةً
कह दें	अगर है	तुम्हारे लिए	आख़िरत का घर	अल्लाह के पास	ख़ास तौर पर

مِّنْ دُوْنِ النَّاسِ	فَتَمَنَّوُا	الْمَوْتَ	اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ (94)
दूसरे लोगों के सिवा,	तो तुम तमन्ना करो	मौत की	अगर तुम सच्चे हो।

وَلَنْ يَّتَمَنَّوْهُ	اَبَدًا	بِمَا	قَدَّمَتْ	اَيْدِيْهِمْ	وَاللّٰهُ	عَلِيْمٌ
और वह हरगिज़ तमन्ना न करेंगे उसकी	कभी	उस के सबब जो	आगे भेजा	उन के हाथों ने,	और अल्लाह	जानने वाला है

بِالظّٰلِمِيْنَ (95)
ज़ालिमों को।

मुख़्तसर शरह

- यहूद कहा करते थे कि वह अल्लाह तआ़ला के चहेते हैं, आख़िरत का घर यानी जन्नत सिर्फ़ उन के लिए है, जहन्नम की आग उन को नहीं छुएगी, वग़ैरा वग़ैरा।
- अल्लाह ने उन्हें यह चैलेंज किया कि अगर आख़िरत सिर्फ़ तुम्हारी है तो ज़रा मौत की तमन्ना करो! इस तरह़ अल्लाह ने उन के खोखले दावों को मुसलमानों के सामने बे-नक़ाब कर दिया कि वह ऐसा हरगिज़ नहीं करेंगे।
- यहूद में इतनी हिम्मत न थी कि वह नबी के सामने मौत की तमन्ना करें। वह अच्छी तरह़ जानते थे कि जन्नत सिर्फ़ उन्हीं के लिए नहीं है। दूसरे यह कि उन्होंने नेक काम नहीं किए थे। तीसरे यह कि वह इस दुनिया में ज़्यादा से ज़्यादा रहना चाहते थे। चौथे यह कि वह जानते थे कि जो कुछ नबी करीम ﷺ कह रहे हैं वह सच है, इस लिए अगर वह मौत की तमन्ना करेंगे तो वह वहीं मर जाएंगे।
- जो शख़्स कसरत से गुनाह करता रहता है (بِمَا قَدَّمَتْ اَيْدِيْهِمْ), वह मौत को भूल जाता है यहाँ तक कि वह यह बिलकुल पसंद नहीं करता कि उसे मौत के तअ़ल्लुक़ से नसीह़त व याद-दिहानी की जाए।
- हम यह दावा नहीं कर सकते कि हम यक़ीनी तौर पर जन्नत में जाएंगे। हम तो अल्लाह से उसके रह़म व करम की भीक माँगते हैं कि वह हमें अपने फ़ज़्ल से जन्नत में दाख़िल कर दे।

ह़दीसः ह़ज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमायाः "जो अल्लाह तआ़ला से तीन बार जन्नत माँगता है तो जन्नत कहती हैः ऐ अल्लाहः इसे जन्नत में दाख़िल कर दे। और जो तीन मर्तबा जहन्नम से पनाह माँगता है तो जहन्नम कहती हैः ऐ अल्लाह इस को जहन्नम से निजात दे"। (तिरमिज़ीः **2572**)

अस्बाक़, दुआ और प्लानः इन आयात से कई अस्बाक़, दुआएँ और प्लान्स बनाए जा सकते हैं। नीचे बतौर मिसाल सिर्फ़ चंद का ज़िक्र है।

- यहूद का अ़क़ीदा था कि जन्नत सिर्फ़ उन्हीं लोगों के लिए ख़ास है और किसी के लिए नहीं।
- अल्लाह ने उन के इस अ़क़ीदे को चैलेंज करते हुए कहा कि अगर ऐसा ही है तो ज़रा मौत की तमन्ना करो।
- अपने दिलों में वह यह बात जान चुके थे कि उन्होंने ह़ज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम और ह़ज़रत मोह़म्मद ﷺ जैसे सच्चे रसूलों का इंकार कर दिया है। वह यह भी जानते थे कि इस तरह़ कर के उन्होंने बहुत बड़ा गुनाह किया हैः इसी लिए वह मौत की तमन्ना करने की ह़िम्मत नहीं कर सके।

दुआ़ः ऐ अल्लाह! हमें जन्नत अ़ता फ़रमा और हमें आग से महफ़ूज़ फ़रमा।

प्लानः इन्शा अल्लाह मैं रोज़ाना कम-अज़-कम **3** बार जन्नत के लिए दुआ़ करूँगा और जहन्नम से पनाह माँगूंगा।

www.understandquran.com

अस्मा और अफ़्आ़लः इस सबक़ की आयात में आने वाले कुछ अस्मा और अफ़्आ़ल नीचे दिए गए है।

अफ़्आ़लः हर फ़ेअ़ल के तह़त दिए गए तीन अफ़्आ़ल और तीन अस्मा की **TPI** के साथ मशक़ कीजिए

मआ़नी	काम का नाम	اسم مفعول	اسم فاعل	فعل امر	فعل مضارع	فعل ماضِ	माद्दा व कोड	तकरार
ख़ालिस होना	خُلُوْص	–	خالِص	اُخْلُصْ	يَخْلُصُ	خَلَصَ	خ ل ص ز	8
सच्चा होना	صِدْق	مَصْدُوْق	صَادِق	اُصْدُقْ	يَصْدُقُ	صَدَقَ	ص د ق ز	90
जुल्म करना	ظُلْم	مَظْلُوْم	ظَالِم	اِظْلِمْ	يَظْلِمُ	ظَلَمَ	ظ ل م ض	266
कहना	قَوْل	مَقُوْل	قَابِل	قُلْ	يَقُوْلُ	قَالَ	ق و ل قا	1719
होना	كَوْن	–	كَائِن	كُنْ	يَكُوْنُ	كَانَ	ك و ن قا	1358
मरना	مَوْت	–	مَيِّت	مُتْ	يَمُوْتُ	مَاتَ	م و ت قا	115
तमन्ना करना	تَمَنٍّ	مُتَمَنًّى	مُتَمَنٍّ	تَمَنَّ	يَتَمَنّٰى	تَمَنّٰى	م ن ي تد+	9
पेश करना	تَقْدِيْم	مُقَدَّم	مُقَدِّم	قَدِّمْ	يُقَدِّمُ	قَدَّمَ	ق د م عل+	27

अस्मा

मआ़नी	जमा	वाह़िद
घर	دِيَار	دَار
मौत	أَمْوَات	مَوْت
हाथ	أَيْدِي	يَد

कुरआन सफ़्हा 14b — ज़िंदगी भी प्यारी (अल-बक़राः96)

मुतालआ के बाद: तब्लीग़, दुआ, तसव्वुर एहसास, प्लान, एहतिसाब

عَلٰى حَيٰوةٍ ۛ	النَّاسِ	اَحْرَصَ	وَلَتَجِدَنَّهُمْ
ज़िंदगी पर	सब लोगों से	ज़्यादा ह़रीस	और अलबत्ता तुम ज़रूर पाओगे उन्हें

اَلْفَ سَنَةٍ ۚ	يُعَمَّرُ	لَوْ	اَحَدُهُمْ	يَوَدُّ	الَّذِيْنَ اَشْرَكُوْا ۛ	وَمِنَ
हज़ार साल	वह उम्र दिया जाए	काश	उनका हर एक	चाहता है	जिन्होंने शिर्क क्या,	और उन से (भी ज़्यादा)

بَصِيْرٌۢ	وَاللّٰهُ	اَنْ يُّعَمَّرَ ؕ	مِنَ الْعَذَابِ	بِمُزَحْزِحِهٖ	وَمَا هُوَ
देखने वाला है	और अल्लाह	यह कि वह उम्र दिया जाए,	अ़ज़ाब से	उसे दूर करने वाला	और नहीं है वह

بِمَا يَعْمَلُوْنَ ﴿96﴾ ع
जो वह करते हैं।

मुख़्तसर शरह़

- वह लोग ज़िंदा रहने की ख़ाहिश रखते हैं, चाहे उस की क़ीमत के तौर पर उन्हें अपनी इ़ज़्ज़त ही क्यों न देना पड़े।
- बा-इ़ज़्ज़त ज़िंदगी हमें भी गुज़ारना चाहिए, मगर कैसे? अल्लाह की इताअ़त कर के, उसी से मदद माँग कर, उसी से सवाल कर के, उसी के सामने झुक कर और उसके नबी ﷺ की पैरवी कर के।
- हमें अल्लाह के सिवा दूसरों से माँग कर अपने आप को ज़लील नहीं करना चाहिए, न ही अल्लाह के सिवा किसी से डरना चाहिए। इस लिए कि ज़िंदगी और मौत, रिज़्क़ और इ़ज़्ज़त वग़ैरह सब कुछ सिर्फ़ और सिर्फ़ अल्लाह ही के हाथ में है।
- وَمَا هُوَ بِمُزَحْزِحِهٖ...: एक बुरा और गुनहगार शख़्स चाहे कितना ही जी ले, एक न एक दिन उस को मौत आएगी और वह अपने करतूतों की सज़ा पाएगा। अल्लाह तआ़ला हर चीज़ देख रहा है और फ़रिश्ते हर एक काम का ह़िसाब रख रहे हैं।

ह़दीसः ह़ज़रत उबादा बिन सामित रज़ियल्लाहु अन्हु रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमायाः "जो शख़्स अल्लाह से मिलना पसंद करता है अल्लाह भी उस से मिलने को पसंद फ़रमाता है ।और जो शख़्स अल्लाह से मिलने को पसंद नहीं करता है अल्लाह भी उस से मिलने को पसंद नहीं फरमाता है"। (बुख़ारीः **6507**)

अस्बाक़, दुआ़ और प्लानः
इन आयात से कई अस्बाक़, दुआएँ और प्लान्स बनाए जा सकते हैं। नीचे बतौर मिसाल सिर्फ़ चंद का ज़िक्र है।

- जो लोग आख़िरत को नहीं चाहते वह दुनियावी ज़िंदगी के लालची होते हैं फिर चाहे इस ज़िंदगी में उसकी कोई इ़ज़्ज़त न हो।
- बुराईयों से भरी लम्बी ज़िंदगी भी किसी को सज़ा से नहीं बचा सकती।
- ऐसी ज़िंदगी गुज़ारना चाहिए जो नेक आमाल से भरी हो।

दुआ़ः ऐ अल्लाह! हमें ऐसी ज़िंदगी अ़ता फ़रमा जो नेक आमाल से भरी हुई हो।
प्लानः मैं अपनी ज़िंदगी को जितना हो सके नेक कामों में इस्तिमाल करने की कोशिश करूँगा।

www.understandquran.com

www.understandquran.com

अस्मा और अफ़्आ़लः इस सबक़ की आयात में आने वाले कुछ अस्मा और अफ़्आ़ल नीचे दिए गए है।

अफ़्आ़लः हर फ़ेअ़ल के तह़त दिए गए तीन अफ़्आ़ल और तीन अस्मा की **TPI** के साथ मशक़ कीजिए

मआ़नी	काम का नाम	اسم مفعول	اسم فاعل	فعل امر	فعل مضارع	فعل ماضِ	माद्दा व कोड	तकरार
देखना	بَصَر	–	بَصِيْر	اُبْصُرْ	يَبْصُرُ	بَصُرَ	ب ص ر / ک	66
काम करना	عَمَل	مَعْمُوْل	عَامِل	اِعْمَلْ	يَعْمَلُ	عَمِلَ	ع م ل / س	319
पाना	وُجُوْد	مَوْجُوْد	وَاجِد	جِدْ	يَجِدُ	وَجَدَ	و ج د / وع	107
दिल से चाहना	مَوَدَّة	مَوْدُوْد	وَادّ	وَدَّ	يَوَدُّ	وَدَّ	و د د / مس	25
शिर्क करना	إِشْرَاك	مُشْرَك	مُشْرِك	أَشْرِكْ	يُشْرِكُ	أَشْرَكَ	ش ر ك / أس+	120
उम्र देना	تَعْمِيْر	مُعَمَّر	مُعَمِّر	عَمِّر	يُعَمِّرُ	عَمَّرَ	ع م ر / عل+	6

अस्मा

मआ़नी	जमा	वाह़िद
लालची	حَرِيْص أَحْرَص↑	
हज़ार	آلَاف	أَلْف

www.understandquran.com

जिब्रील अ़लैहिस्सलाम से दुश्मनी (अल-बक़रा:97-99)

قُلْ	مَنْ كَانَ	عَدُوًّا	لِّجِبْرِيْلَ	فَاِنَّهٗ	نَزَّلَهٗ
कह दीजिए:	जो कोई हो	दुश्मन	जिबरील का	तो बे-शक उसने	यह नाज़िल किया

عَلٰى قَلْبِكَ	بِاِذْنِ اللّٰهِ	مُصَدِّقًا	لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ	وَهُدًى
तेरे दिल पर	अल्लाह के हुक्म से,	तसदीक़ करने वाला है	उस की जो इस से पहले है	और हिदायत

وَّبُشْرٰى	لِلْمُؤْمِنِيْنَ (97)	مَنْ كَانَ	عَدُوًّا	لِّلّٰهِ	وَمَلٰٓئِكَتِهٖ
और खुशख़बरी है	ईमान वालों के लिए।	जो कोई हो	दुश्मन	अल्लाह का	और उस के फ़रिश्तों का

وَرُسُلِهٖ	وَجِبْرِيْلَ وَمِيْكٰلَ	فَاِنَّ اللّٰهَ	عَدُوٌّ	لِّلْكٰفِرِيْنَ (98)
और उस के रसूलों का	और जिबरील और मीकाईल का	तो बेशक अल्लाह	दुश्मन है	काफ़िरों का।

وَلَقَدْ	اَنْزَلْنَآ اِلَيْكَ	اٰيٰتٍۢ بَيِّنٰتٍ ۚ	وَمَا	يَكْفُرُ بِهَآ
औरा अल्बत्ता	हमने उतारी आपकी तरफ़	वाज़ेह़ निशानीयाँ,	और नहीं	इंकार करते हैं इन का

اِلَّا الْفٰسِقُوْنَ (99)
मगर ना-फ़रमान लोग।

मुख़्तसर शरह़

- ह़ज़रत जिब्रील अ़लैहिस्सलाम तमाम नबियों के पास वह्य लाते थे, जो तमाम इंसानियत के लिए हिदायत का पैग़ाम होती थी। यहाँ तक कि तौरात भी जिब्रील अ़लैहिस्सलाम ही लाए थे तो फिर बनीइसराईल की उन से दुश्मनी कैसी?
- चूँकि आप ﷺ के पास भी वह्य जिब्रील अ़लैहिस्सलाम ही लाए थे इस लिए बनीइसराईल उन से नाराज़ हो गए और कहने लगे यह फ़रिश्ता हमारा दुश्मन है।
- यहाँ क़ुरआन के बारे में चार बातें बताई गई हैं कि जिब्रील अ़लैहिस्सलाम इस को अल्लाह के हुक्म से लाए हैं, यह क़ुरआन पिछली किताबों की तसदीक़ करता है, यह तमाम इंसानियत के लिए हिदायत है और यह कि इस में ईमान वालों के लिए खुशख़बरी है। बग़ैर ईमान वाला इन तमाम फ़ायदों से मह़रूम रहेगा।
- مَنْ كَانَ...: अगर कोई आप को आप के वालिद की तरफ़ से क़ीमती तोह़फ़े ला कर देता रहे तो आप उस का शुक्रिया अदा करेंगे और उसकी तारीफ़ करेंगे। जिब्रील अ़लैहिस्सलाम अल्लाह के हुक्म से अल्लाह के पास से हमारे लिए बहुत ही क़ीमती तोह़फ़ा ले कर आए इस लिए हमें जिब्रील अ़लैहिस्सलाम और दीगर तमाम फ़रिश्तों से मुह़ब्बत और उन की इ़ज़्ज़त करना चाहिए।
- मीकाल अ़लैहिस्सलाम भी एक फ़रिश्ते हैं जो बारिश के ज़िम्मेदार हैं। बारिश हमारी बड़ी ज़रूरत और खेती बाड़ी का ज़रिया है। बारिश हो तो कभी किसी वक़्त हमें चाहिए कि कम-अज़-कम एक-बार हम मीकाल अ़लैहिस्सलाम को याद करें और उन के लिए मुह़ब्बत का इज़हार करें और अल्लाह का शुक्र अदा करें कि उसने मीकाल अ़लैहिस्सलाम के ज़रिया हमारे लिए बारिश के इंतिज़ामात किए।
- जिब्रील और मीकाल अलैहिमस्सलाम दोनों फ़रिश्ते हैं और वह अल्लाह की ना-फ़रमानी नहीं करते। दर-हक़ीक़त फ़रिश्ते हमारे लिए दुआएँ करते हैं, हमारी ह़िफ़ाज़त करते हैं और हमेशा अल्लाह की इताअ़त करते रहते हैं। हमें तमाम फ़रिश्तों से मुह़ब्बत करना चाहिए।

www.understandquran.com

- وَلَقَدْ أَنْزَلْنَآ: क़ुरआन की आयतें अपने पैग़ाम के लिहाज़ से निहायत वाज़ेह़ हैं और उन में इस बात का सुबूत मौजूद है कि यह आयात अल्लाह ही की तरफ़ से हैं।

ह़दीसः ह़ज़रत अबुहोरैराह रज़ियल्लाहु अन्हु ब्यान करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमायाः बेशक अल्लाह जब किसी बंदे से मुह़ब्बत करता है तो जिब्रील अ़लैहिस्सलाम को बुलाता है और फ़रमाता है मैं फ़ुलाँ बंदे से मुह़ब्बत करता हूँ तो तुम भी उस से मुह़ब्बत करो, फिर जिब्रील अलैहिमस्सलाम उस से मुह़ब्बत करते हैं और आसमान में ऐलान करते हैं कि अल्लाह फ़ुलाँ से मुह़ब्बत करता है तुम भी उस से मुह़ब्बत करो, चुनांचः आसमान वाले फ़रिश्ते उस से मुह़ब्बत करते हैं, फिर ज़मीन वालों के दिलों में वह मक़बूल हो जाता है। और जब अल्लाह किसी बंदे को नापसंद करता है तो जिब्रील अ़लैहिस्सलाम को बुलाता है और फ़रमाता है मैं फ़ुलाँ को नापसंद करता हूँ तो तुम भी उसे न पसंद करो, चुनांचः वह उसे ना पसंद करते हैं और आसमान में ऐलान कर देते हैं कि फ़ुलाँ बंदे को अल्लाह पसंद नहीं करता है इस लिए तुम भी उसे ना पसंद करो, इस तरह़ वह सब उस को ना पसंद करने लगते हैं और फिर ज़मीन वालों के दिलों में उसके लिए नफ़रत डाल दी जाती है। (मुस्लिमः **2637**)

अस्बाक़, दुआ़ और प्लानः इन आयात से कई अस्बाक़, दुआ़एँ और प्लान्स बनाए जा सकते हैं। नीचे बतौर मिसाल सिर्फ़ चंद का ज़िक्र है।

- क़ुरआन मजीद ह़ज़रत मोह़म्मद ﷺ के दिल पर उतारा गया। दिल इंसान की ह़क़ीक़ी ज़िंदगी का मरकज़ होता है।
- क़ुरआन मजीद पर ईमान रखने वालों के लिए हिदायत व खुशख़बरी है।
- जो लोग अल्लाह के फ़रिश्तों और उस के नेक बंदों के दुश्मन होते हैं, अल्लाह भी उनके साथ दुश्मनी का मुआ़मिला फ़रमाता है।
- क़ुरआन की आयतें अपने पैग़ाम को पेश करने में बिल्कुल खुली और वाज़ेह़ हैं। इन आयात से हिदायत हर उस इंसान को मिलती है जो मुख़लिस हो।

दुआ़ः ऐ अल्लाह! हमारी मदद फ़रमा कि हम आप से मुह़ब्बत करें। फ़रिश्तों की मौजूदगी को याद रखने में और उन से मुह़ब्बत रखने में हमारी मदद फ़रमा, तमाम अम्बियाए किराम से मुहब्बत करने में हमारी मदद फ़रमा।

प्लानः इंशा अल्लाह! में उन फ़रिश्तों की एक लिस्ट बनाऊँगा जो हमारे साथ होते हैं, हमारे पास आते रहते हैं, हमारी ह़िफ़ाज़त में लगे हैं या हमारे लिए दुआ़ करते रहते हैं।

अस्मा और अफ़्आ़लः इस सबक़ की आयात में आने वाले कुछ अस्मा और अफ़्आ़ल नीचे दिए गए है।

अफ़्आ़लः हर फ़ेअ़ल के तह़त दिए गए तीन अफ़्आ़ल और तीन अस्मा की TPI के साथ मशक़ कीजिए

मआ़नी	काम का नाम	اسم مفعول	اسم فاعل	فعل امر	فعل مضارع	فعل ماضٍ	माद्दा व कोड	तकरार
इजाज़त देना	إِذْن	مَأْذُوْن	اٰذِن	اِئْذَنْ	يَأْذَنُ	أَذِنَ	أ ذ ن / سـ	60
ना-फ़रमानी करना	فِسْق	–	فَاسِق	اُفْسُقْ	يَفْسُقُ	فَسَقَ	ف س ق / ذ	54
उतारना	تَنْزِيْل	مُنَزَّل	مُنَزِّل	نَزِّلْ	يُنَزِّلُ	نَزَّلَ	ن ز ل / عل+	79
तसदीक़ करना	تَصْدِيْق	مُصَدَّق	مُصَدِّق	صَدِّقْ	يُصَدِّقُ	صَدَّقَ	ص د ق / عل+	31
ईमान लाना	إِيْمَان	مُؤْمَن	مُؤْمِن	اٰمِنْ	يُؤْمِنُ	اٰمَنَ	أ م ن / أسـ+	818
उतारना	إِنْزَال	مُنْزَل	مُنْزِل	أَنْزِلْ	يُنْزِلُ	أَنْزَلَ	ن ز ل / أسـ+	190

अस्मा

मआ़नी	जमा	वाह़िद
दुश्मन	أَعْدَاء	عَدُوّ
दिल	قُلُوْب	قَلْب
फ़रिश्ते	مَلَائِكَة	مَلَك
रसूल	رُسُل	رَسُوْل
आयत	اٰيَات	اٰيَة
वाज़ेह़ दलील	بَيِّنَات	بَيِّنَة

www.understandquran.com

अ़हद व किताब को फेंका (अल–बक़रा:100-101)

مِّنْهُمْ ؕ	فَرِيْقٌ	نَّبَذَهٗ	عَهْدًا	عٰهَدُوْا	اَوَ كُلَّمَا
उन में से,	एक फ़रीक़ ने	(तो) तोड़ दिया उस को	कोई अ़ह्द	उन्होंने अ़ह्द क्या	क्या जब भी

مِّنْ عِنْدِ اللّٰهِ	رَسُوْلٌ	وَلَمَّا جَآءَهُمْ	لَا يُؤْمِنُوْنَ (100)	بَلْ اَكْثَرُهُمْ
अल्लाह की तरफ़ से	एक रसूल	और जब आया उन के पास	ईमान नहीं रखते।	बल्कि अक्सर उन के

اُوْتُوا	مِّنَ الَّذِيْنَ	نَبَذَ فَرِيْقٌ	لِّمَا مَعَهُمْ	مُصَدِّقٌ
दिए गए थे	उन लोगों में से जो	(तो) फेंक दिया एक फ़रीक़ ने	उस की जो उन के पास है	तसदीक़ करने वाला

لَا يَعْلَمُوْنَ (101)	كَاَنَّهُمْ	وَرَآءَ ظُهُوْرِهِمْ	كِتٰبَ اللّٰهِ	الْكِتٰبَ ۙ
जानते ही नहीं।	गोया कि वह	अपनी पीठों के पीछे,	अल्लाह की किताब को	किताब,

मुख़्तसर शरह्

- اَوَ كُلَّمَا...: उन्हें तौरात पर अ़मल करना चाहिए था। लेकिन अगर कोई ईमान ही न रखता हो तो आप उस से इस बात की उम्मीद नहीं रख सकते कि वह अपने अ़ह्द को पूरा करेगा।
- وَلَمَّا جَآءَهُمْ...: रसूल ﷺ की आमद का ज़िक्र उन की किताब तौरात में मौजूद था, लेकिन अपनी आ़दत के मुताबिक़ उन्होंने किताब को नज़र अंदाज़ कर दिया और नबी का इंकार कर बैठे।
- وَرَآءَ ظُهُوْرِهِمْ...: पीठ के पीछे फेंका। मतलब यह है कि वह उस को पढ़ना, समझना तो दूर की बात, उस को देखना भी नहीं चाहते। सामने, दाएँ, बाएँ रखते तो हो सकता है कि वह बाद में उठा ले। इस का दूसरा मतलब यह है कि किताब की उन के पास कोई क़ीमत नहीं थी, इस लिए उस ने गोया उस की इहानत की।
- इस इंकार की वजह यह नहीं थी कि कुरआन के अह्काम वाज़ेह नहीं थे; बल्कि यह उन की सर्कशी थी। इसी लिए अल्लाह तआ़ला हमें बता रहा है कि गुमराही का शिकार मत हो जाना। ज़रा उन की तारीख़ पर निगाह डालो और देखो कि कई दूसरे पैग़म्बरों के साथ उन्होंने यही बर्ताव किया है।
- कुरआन मजीद एक उम्मी (जिन को पढ़ना लिखना न आता हो) नबी पर नाज़िल किया गया, फिर भी वह इतना वाज़ेह है कि समझा जाए और इस के मुताबिक़ ज़िंदगी गुज़ारी जाए। इस के पैग़ाम इस की सच्चाई की खुली दलील है। ह़त्ता कि आज भी कई साइंसी और तारीख़ी ह़क़ायक़ इस बात को साबित करते हैं कि कुरआन अल्लाह तआ़ला के पास से नाज़िल हुआ है।

ह़दीस: ह़ज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ जब ख़ुतबा देते तो फ़रमाते कि उस शख़्स का ईमान (मुकम्मल) नहीं जिस में अमानतदारी न हो, और उस शख़्स में दीन (मुकम्मल) नहीं जो अपने अ़ह्द को पूरा न करे। (मस्नद अह़मद: 19/367)

अस्बाक़, दुआ़ और प्लान: इन आयात से कई अस्बाक़, दुआ़एँ और प्लान्स बनाए जा सकते हैं। नीचे बतौर मिसाल सिर्फ़ चंद का ज़िक्र है।

- यहूद की एक जमाअ़त ने ह़ज़रत मोह़म्मद ﷺ का इंकार किया क्योंकि वह मुख़लिस नहीं थे।
- हमें अल्लाह के साथ किए हुए वादे को पूरा करना चाहिए, यानी सिर्फ़ उसी की इबादत करना चाहिए, उसी की इताअ़त करना चाहिए, उस के पैग़म्बरों पर ईमान ला कर उन की इत्तिबा करना चाहिए।
- अल्लाह तआ़ला ने किताबें तिलावत करने, समझने और उन पर अ़मल करने के लिए नाज़िल फ़रमाई है।

www.understandquran.com

दुआ: ऐ अल्लाह! अपने वादों और अ़ह्द को पूरा करने में हमारी मदद फ़रमा।

प्लान: इन्शा अल्लाह! मैं अपने वादों को पूरा करने की बेहतर से बेहतर कोशिश करूँगा।

अस्मा और अफ़्आ़ल: इस सबक़ की आयात में आने वाले कुछ अस्मा और अफ़्आ़ल नीचे दिए गए है।

अफ़्आ़ल: हर फ़ेअ़ल के तह़त दिए गए तीन अफ़्आ़ल और तीन अस्मा की TPI के साथ मशक़ कीजिए

मआ़नी	काम का नाम	اسم مفعول	اسم فاعل	فعل امر	فعل مضارع	فعل ماضٍ	माद्दा व कोड	तकरार
अ़ह्द करना	عَهْد	مَعْهُوْد	عَاهِد	اِعْهَدْ	يَعْهَدُ	عَهِدَ	ع ه د / سـ	35
फेंकना	نَبْذ	مَنْبُوْذ	نَابِذ	اِنْبِذْ	يَنْبِذُ	نَبَذَ	ن ب ذ / ض	10
जानना	عِلْم	مَعْلُوْم	عَالِم	اِعْلَمْ	يَعْلَمُ	عَلِمَ	ع ل م / سـ	518
आना	جَيْئَة	–	جَاءٍ	جِئْ	يَجِيْءُ	جَاءَ	ج ي أ / زا	277
मुआ़हिदा करना	مُعَاهَدَة	مُعَاهَد	مُعَاهِد	عَاهِدْ	يُعَاهِدُ	عَاهَدَ	ع ه د / حا+	11
ईमान लाना	إِيْمَان	مُؤْمَن	مُؤْمِن	اٰمِنْ	يُؤْمِنُ	اٰمَنَ	أ م ن / أسـ+	818
तसदीक़ करना	تَصْدِيْق	مُصَدَّق	مُصَدِّق	صَدِّقْ	يُصَدِّقُ	صَدَّقَ	ص د ق / عل+	31
देना	إِيْتَاء	مُؤْتًى	مُؤْتٍ	اٰتِ	يُؤْتِيْ	اٰتٰى	أ ت ي / أسـ+	274

अस्मा

मआ़नी	जमा	वाह़िद
अ़ह्द	عُهُوْد	عَهْد
जमाअ़त	فُرَقَاء	فَرِيْق
किताब	كُتُب	كِتَاب
पीठ	ظُهُوْر	ظَهْر

www.understandquran.com

शयातीन की पैरवी (अल-बक़राः102)

وَاتَّبَعُوْا	مَا	تَتْلُوا الشَّيٰطِيْنُ	عَلٰى مُلْكِ	سُلَيْمٰنَ ۚ
सुलैमान अ़लैहिस्सलाम की	बादशाहत में	पढ़ते थे शयातीन	उस की जो	और उन्होंने पैरवी की

وَمَا كَفَرَ	سُلَيْمٰنُ	وَلٰكِنَّ الشَّيٰطِيْنَ	كَفَرُوْا	يُعَلِّمُوْنَ النَّاسَ	
और नहीं कुफ़्र किया	सुलैमान अ़लैहिस्सलाम ने	और लेकिन शैतानों ने	कुफ़्र किया,	वह सिखाते थे	लोगों को

السِّحْرَ ۚ	وَمَآ اُنْزِلَ	عَلَى الْمَلَكَيْنِ	بِبَابِلَ	هَارُوْتَ	وَمَارُوْتَ ۭ
जादू,	और जो नाज़िल किया गया	दो फ़रिश्तों पर	बाबिल में	हारूत	और मारूत (पर),

وَمَا يُعَلِّمٰنِ	مِنْ اَحَدٍ	حَتّٰى	يَقُوْلَآ	اِنَّمَا نَحْنُ	فِتْنَةٌ
और नहीं सिखाते वह दोनों (फ़रिश्ते)	किसी को	यहाँ तक कि	वह दोनों कह देते	(कि) हम तो सिर्फ़	आज़माईश हैं;

فَلَا تَكْفُرْ ۭ
पस तू कुफ़्र न कर,

मुख़्तसर शरह

- ब्यान किया जाता है कि ह़ज़रत सुलैमान अ़लैहिस्सलाम के दौर में जादू बहुत आ़म हो चुका था। चुनांचः सुलैमान अ़लैहिस्सलाम ने जादू से मुतअ़ल्लिक़ तमाम किताबों को जमा करवाया और उन्हें दफ़्न करवा दिया। लेकिन बुरे लोगों ने यह अफ़्वाह फैला दी कि सुलैमान अ़लैहिस्सलाम जादू की वजह से इतने बड़े ह़ाकिम बन गए हैं। यही नहीं बल्कि बुरे लोगों ने अ़वाम से यह भी कहा कि हम तुम को भी जादू सिखा कर अ़ज़ीम और बड़ा बना देंगे।
- लोग पहले ही अल्लाह की किताब से ग़ाफ़िल हो कर मुँह मोड़ चुके थे जैसा कि पिछली आयत में ब्यान किया गया और अब उन का रुख जादू के करने कराने की तरफ़ हो गया था।
- وَمَا كَفَرَ سُلَيْمٰنُ...: "सुलैमान ने कुफ़्र नहीं किया, बल्कि शयातीन ने किया", इस से पता चलता है कि जादू करना कुफ़्र है।
- وَمَا يُعَلِّمٰنِ مِنْ اَحَدٍ...: उन लोगों की जानिब फ़रिश्ते उन की आज़माईश की ग़र्ज़ से भेजे गए थे। वह फ़रिश्ते किसी को उस वक़्त तक जादू नहीं सिखाते जब तक वह उसे यह न कह देते कि हम तो तुम्हारे दरमियान सिर्फ़ तुम्हारी आज़माईश के लिए हैं।
- फ़रिश्ते नेक लोगों के लिए दुआ़ करते हैं और उन की मदद करते हैं। शयातीन बुरे वस्वसे डालते हैं और बुरे लोगों की मदद करते हैं।

ह़दीसः ह़ज़रत अबुहोरैराह रज़ियल्लाहु अन्हु रिवायत करते हैं कि नबी करीम ﷺ ने फ़रमायाः सात हलाक करने वाले गुनाहों से बचो। सह़ाबा ने अ़र्ज़ कियाः या रसूलुल्लाह! वह क्या-क्या हैं? आप ﷺ ने फ़रमाया अल्लाह के साथ शिर्क करना, जादू करना, नाह़क़ किसी की जान लेना जो अल्लाह ने ह़राम किया है, सूद खाना, यतीम का माल खाना, जंग के दिन पीठ फेरना और पाक दामन ग़ाफ़िल मोमिन औ़रतों पर तोहमत लगाना। (बुख़ारी 6857)

www.understandquran.com

अस्बाक़, दुआ और प्लानः इन आयात से कई अस्बाक़, दुआएँ और प्लान्स बनाए जा सकते हैं। नीचे बतौर मिसाल सिर्फ़ चंद का ज़िक्र है।

- जब कोई मुआशिरा अल्लाह की किताब से दूर हो जाता है तो फिर लोग ख़ानदानों को उजाड़ देते हैं, चाहे उसके लिए जादू ही क्यों न इस्तिमाल करना पड़े।
- जादू सीखना या करना ह़राम है।
- फ़रिश्ते नेक लोगों के लिए दुआएँ करते हैं और उन की मदद करते हैं। शयातीन बुरे वस्वसे डालते हैं और बुरे लोगों की मदद करते हैं।
- हमारे लिए ज़िंदगी की मुख़्तलिफ़ चीज़ों में आज़माईश है। हमें अल्लाह तआ़ला से इस्लाम पर साबित क़दमी की दुआ करते रहना चाहिए।

दुआ़ः ऐ अल्लाह! जिन कामों को आपने ह़राम क़रार दिया है हमें उन से दूर रखिए। ऐ अल्लाह! जो आज़माईशें आपने हमारे लिए मुक़द्दर फ़रमाई हैं हमें उन में कामयाब फ़रमा।

प्लान इन्शा अल्लाह! जिन चीज़ों से रोका गया है में उन से दूर रहूँगा और मैं कोई ख़राब बात नहीं सीखूँगा।

अस्मा और अफ़्आ़लः इस सबक़ की आयात में आने वाले कुछ अस्मा और अफ़्आ़ल नीचे दिए गए है।

अफ़्आ़लः हर फ़ेअ़ल के तह़त दिए गए तीन अफ़्आ़ल और तीन अस्मा की **TPI** के साथ मशक़ कीजिए

मआ़नी	काम का नाम	اسم مفعول	اسم فاعل	فعل امر	فعل مضارع	فعل ماضٍ	माद्दा व कोड	तकरार
मालिक होना	مُلْك	مَمْلُوْك	مَالِك	اِمْلِكْ	يَمْلِكُ	مَلَكَ	م ل ك / ض	97
इंकार करना	كُفْر	مَكْفُوْر	كَافِر	اُكْفُرْ	يَكْفُرُ	كَفَرَ	ك ف ر / ن	465
जादू करना	سِحْر	مَسْحُوْر	سَاحِر	اِسْحَرْ	يَسْحَرُ	سَحَرَ	س ح ر / ف	49
आज़माना	فِتْنَة	مَفْتُوْن	فَاتِن	اِفْتِنْ	يَفْتِنُ	فَتَنَ	ف ت ن / ض	59
तिलावत करना/ पढ़ना	تِلَاوَة	مَتْلُوّ	تَالٍ	اُتْلُ	يَتْلُوْ	تَلَا	ت ل و / دء	63
कहना	قَوْل	مَقُوْل	قَائِل	قُلْ	يَقُوْلُ	قَالَ	ق و ل / قا	1719
पैरवी करना	اِتِّبَاع	مُتَّبَع	مُتَّبِع	اِتَّبِعْ	يَتَّبِعُ	اِتَّبَعَ	ت ب ع / اِخ+	140
सिखाना	تَعْلِيْم	مُعَلَّم	مُعَلِّم	عَلِّمْ	يُعَلِّمُ	عَلَّمَ	ع ل م / عل+	42
नाज़िल करना	إِنْزَال	مُنْزَل	مُنْزِل	أَنْزِلْ	يُنْزِلُ	أَنْزَلَ	ن ز ل / أس+	190

अस्मा

मआ़नी	जमा	वाह़िद
शैतान	شَيَاطِيْن	شَيْطَان
जादू	أَسْحَار	سِحْر
फ़रिश्ता	مَلَكَيْن[2]	مَلَك
आज़माईश	فِتَن	فِتْنَة

www.understandquran.com

जोड़ों में जूदाई (अल-बक़राः102)

فَيَتَعَلَّمُوْنَ مِنْهُمَا مَا يُفَرِّقُوْنَ بِهٖ بَيْنَ الْمَرْءِ

और वह सीखते थे	उन दोनों से	वह (इल्म) जो	(कि) वह जुदाई डालते थे	उसके ज़रिए	दरमियान	मर्द

وَزَوْجِهٖ ؕ وَمَا هُمْ بِضَآرِّيْنَ بِهٖ مِنْ اَحَدٍ اِلَّا بِاِذْنِ اللّٰهِ ؕ

और उस की बीवी के,	और नहीं हैं वह	नुक़सान पहुँचाने वाले	उस (जादू) के साथ	किसी को	मगर	अल्लाह के हुक्म से,

وَيَتَعَلَّمُوْنَ مَا يَضُرُّهُمْ وَلَا يَنْفَعُهُمْ ؕ

और वह सीखते हैं	जो नुक़्सान पहुचाँए उन्हें	और न नफ़ा दे उन्हें,

मुख़्तसर शरह

- فَيَتَعَلَّمُوْنَ مِنْهُمَا...: फ़रिश्तों की जानिब से तन्बीह के बावजूद सुलैमान अ़लैहिस्सलाम के ज़माने में मौजूद बनीइसराईल ने इस बात को पसंद किया कि वह मियाँ बीवी में जुदाई डालने के तरीक़े सीखें। यह चीज़ बताती है कि उन का मुआ़शिरा किस क़दर पस्ती का शिकार हो चुका था।
- जब किसी मुआ़शिरा का बुनियादी ढाँचा यानी ख़ानदान ही टूट-फूट जाए और जब लोग आपस में एक दूसरे के ख़ानदानों को बिखेर देने की फ़िक्र में हों तो यह इस बात की निशानी है कि उनके अख़लाक़ बहुत ही ज़्यादा गिर चुके हैं।
- وَمَا هُمْ بِضَآرِّيْنَ بِهٖ...: सब से अहम यह कि अल्लाह इस बात पर ज़ोर डाल रहा है कि अल्लाह की इजाज़त व हुक्म के बग़ैर कोई भी किसी को कुछ भी तकलीफ़ नहीं पहुँचा सकता है।
- कुछ लोग आज भी जान-बूझ कर झूट बोलते हैं, धोका देते हैं, और दूसरों को तकलीफ़ देते हैं। मतलब यह है कि उन्होंने खुद अपने आप को तबाह करने का इरादा कर लिया है।
- जादू करना बहुत बड़ा जुर्म है और कुफ़्र की एक क़िस्म है और कुफ़्र का नतीजा जहन्नम है।

ह़दीसः ह़ज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु रिवायत है, रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया इबलीस अपना तख़्त पानी पर रखता है फिर अपने लश्करों को दुनिया में बिगाड़ फैलाने के लिए भेजता है। उस से रुत्बे में सब से ज़्यादा क़रीब वह होता है जो बड़ा बिगाड़ फैलाए। कोई शैतान उन में से आ कर कहता है कि मैंने फुलाँ फुलाँ काम किया तो शैतान कहता हैः तू ने कुछ भी नहीं किया। फिर कोई आ कर कहता है कि मैंने फुलाँ को उस वक़्त तक नहीं छोड़ा यहाँ तक कि उस के और उस की बीवी के दरमियान जुदाई करवा दी। तो इबलीस उस को अपने क़रीब कर लेता है और कहता है कि हाँ तू ने बड़ा काम किया है''। (मुस्लिम 2813)

ह़ज़रत अ़बदुल्लाह बिन अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा कहते हैं कि नबी अकरम ﷺ ने फ़रमाया "तुम में सब से बेहतर वह है जो अपने अहल व अ़याल के लिए बेहतर हो, और मैं अपने अहल व अ़याल के लिए तुम में सबसे बेहतर हूँ। (इब्ने माजा1977)

www.understandquran.com

अस्बाक़, दुआ और प्लानः इन आयात से कई अस्बाक़, दुआएँ और प्लान्स बनाए जा सकते हैं। नीचे बतौर मिसाल सिर्फ़ चंद का ज़िक्र है।

- शादीशुदा ज़िंदगी में मसायल पैदा करना शैतान को बहुत पसंद है। मियाँ बीवी की और बच्चों की ज़िंदगी इस से ख़राब हो जाती है, बल्कि पूरा ख़ानदान इस की वजह से बिखर जाता है।
- इस दुनिया में कोई भी चीज़, यहाँ तक कि जादू भी अल्लाह की इजाज़त और हुक्म के बग़ैर किसी को नुक़सान नहीं पहुँचा सकती।

दुआः ऐ अल्लाहः मुझे इस बात को अच्छी तरह समझने वाला बना दीजिए कि तेरी इजाज़त के बग़ैर कोई चीज़ मुझे नुक़सान नहीं पहुँचा सकती। ऐ अल्लाह हमारी हिफ़ाज़त फ़रमा।

प्लान इन्शा अल्लाह! में अपने घर के हर फ़र्द के साथ अच्छे से अच्छा सुलूक़ करने की कोशिश करूँगा और उन की ग़ल्तियों पर सब्र करूँगा।

अस्मा और अफ़्आलः इस सबक़ की आयात में आने वाले कुछ अस्मा और अफ़्आल नीचे दिए गए है।

अफ़्आलः हर फ़ेअ़ल के तह़त दिए गए तीन अफ़्आल और तीन अस्मा की **TPI** के साथ मशक़ कीजिए

मआ़नी	काम का नाम	اسم مفعول	اسم فاعل	فعل امر	فعل مضارع	فعل ماضِ	माद्दा व कोड	तकरार
इजाज़त देना	إِذْن	مَأْذُوْن	اٰذِن	اِئْذَنْ	يَأْذَنُ	أَذِنَ	أ ذ ن / سـ	60
फ़ायदा पहुँचाना	نَفْع	مَنْفُوْع	نَافِع	اِنْفَعْ	يَنْفَعُ	نَفَعَ	ن ف ع / ف	42
नुक़्सान पहुँचाना	ضَرّ	مَضْرُوْر	ضَارّ	ضُرَّ	يَضُرُّ	ضَرَّ	ض ر ر / ظ ن	50
सीखना	تَعَلُّم	مُتَعَلَّم	مُتَعَلِّم	تَعَلَّمْ	يَتَعَلَّمُ	تَعَلَّمَ	ع ل م / تد+	2
जुदाई डालना	تَفْرِيْق	مُفَرَّق	مُفَرِّق	فَرِّق	يُفَرِّقُ	فَرَّقَ	ف ر ق / عل+	10

अस्मा

मआ़नी	जमा	वाह़िद
जोड़ा	أَزْوَاج	زَوْج

www.understandquran.com

जानते बूझते बूरा सौदा (अल-बक़राः102-103)

وَلَقَدْ	عَلِمُوْا
और अलबत्ता तहक़ीक़	वह जान चुके हैं

لَمَنِ	اشْتَرٰىهُ	مَا لَهٗ	فِى الْاٰخِرَةِ	مِنْ خَلَاقٍ ؕ قف	وَلَبِئْسَ
अलबत्ता जिस ने	ख़रीदा इस (जादू को)	नहीं है उसके लिए	आख़िरत में	कोई हिस्सा,	और अलबत्ता बुरा है

مَا	شَرَوْا	بِهٖٓ	اَنْفُسَهُمْ ؕ	لَوْ	كَانُوْا يَعْلَمُوْنَ 102	وَلَوْ اَنَّهُمْ
वह जो	बेच दिया उन्होंने	उस के बदले	अपने आप को,	काश कि	वह जानते होते।	और अगर वह

اٰمَنُوْا	وَاتَّقَوْا	لَمَثُوْبَةٌ	مِّنْ عِنْدِ اللّٰهِ	خَيْرٌ ؕ	لَوْ	كَانُوْا
ईमान लाते	और परहेज़गार बन जाते	(तो) अलबत्ता ठिकाना पाते	अल्लाह के पास	बेहतर,	काश कि	वह होते

يَعْلَمُوْنَ ع 103

जानते।

मुख़्तसर शरह

- वह जान चुके थे कि वह आख़िरत से हाथ धो बैठे हैं और वह दर्दनाक अ़ज़ाब का सामना करने वाले हैं। अपने इस सौदे में वह किस को बेच रहे थे? ख़ुद अपने आप को! कितना बदतरीन सौदा किया था उन्होंने।
- अगर उन्होंने अल्लाह की किताब को छोड़ देने के बजाए उसे पढ़ा होता, समझा होता तो वह अच्छी तरह जान लेते कि ईमान और तक़्वा अल्लाह की तरफ़ से बड़े इंआ़मात का सबब बनते हैं। (لَوْ كَانُوْا يَعْلَمُوْنَ)
- ज़मीन व आसमान के पैदा करने वाले रब की जानिब से कैसी ख़ास याद दिहानी है इन क़िस्सों के ज़रिया अल्लाह तआ़ला चाहता है कि हम सबक़ लें।
- सोचिए कितना रहम करने वाला है अल्लाह! हम से उसकी मुहब्बत कितनी ज़्यादा है वह हम से यह चाह रहा है कि हम हक़ को समझें जो उस ने अपने नबी के ज़रिया हम तक भेजा है ताकि हम को ही फ़ायदा मिले।
- शैतान गुनाहों को बहुत ही पसंदीदा बना कर पेश करता है। ऐसे वक़्त हम को अल्लाह की मर्ज़ी को सामने रखते हुए उन से रुक जाने की कोशिश करना चाहिए।

हदीसः हज़रत ज़ैद बिन अरक़म रज़ियल्लाहु अन्हु रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ दुआ किया करते थेः

اَللّٰهُمَّ اٰتِ نَفْسِيْ تَقْوَاهَا، وَزَكِّهَا أَنْتَ خَيْرُ مَنْ زَكَّاهَا، أَنْتَ وَلِيُّهَا وَمَوْلَاهَا.

ऐ अल्लाह! मेरे नफ़्स को उस का तक़्वा अ़ता फ़रमा और उसे पाक फ़रमा, तूही उस का बेहतर पाक करने वाला है, तूही उस का आक़ा और मौला है। (मुस्लिमः2722)

अस्बाक़, दुआ और प्लानः इन आयात से कई अस्बाक़, दुआएँ और प्लान्स बनाए जा सकते हैं। नीचे बतौर मिसाल सिर्फ़ चंद का ज़िक्र है।

- उन्होंने अपने आप के लिए दर्दनाक अज़ाब ख़रीद लिया। उन्होंने जान-बूझ कर यह बुरा सौदा कर लिया, काश वह जानते होते। (لَوْكَانُوْا يَعْلَمُوْنَ)
- अगर उन्होंने अल्लाह की किताब को छोड़ देने के बजाए उसे पढ़ा होता तो वह अच्छी तरह जान लेते कि ईमान और तक़्वा अल्लाह की तरफ़ से बड़े इंअ़मात का सबब बनते हैं। (لَوْكَانُوْا يَعْلَمُوْنَ)

www.understandquran.com

दुआ: ऐ अल्लाह! हमें ऐसा इल्म अ़ता फ़रमा जो हमारी तुझ पर, नबियों पर, किताबों, फ़रिश्तों, आख़िरत और तक़दीर पर कामिल और मज़बूत ईमान की जानिब और तक़वा की जानिब रहनुमाई करे।

प्लान: इन्शा अल्लाह!में कुछ वक़्त निकाल कर क़ुरआन की आयात में ग़ौर व फ़िक्र करूँगा ताकि रोज़ाना मेरे इल्म और ईमान में इज़ाफ़ा होता रहे।

अस्मा और अफ़्आ़ल: इस सबक़ की आयात में आने वाले कुछ अस्मा और अफ़्आ़ल नीचे दिए गए है।

अफ़्आ़ल: हर फ़ेअ़ल के तह़त दिए गए तीन अफ़्आ़ल और तीन अस्मा की TPI के साथ मशक़ कीजिए

मआ़नी	काम का नाम	اسم مفعول	اسم فاعل	فعل امر	فعل مضارع	فعل ماضٍ	माद्दा व कोड	तकरार
जानना	عِلْم	مَعْلُوْم	عَالِم	اِعْلَمْ	يَعْلَمُ	عَلِمَ	ع ل م سـ	518
बेचना	شِرَاء	مَشْرِيّ	شَارٍ	اِشْرِ	يَشْرِي	شَرٰى	ش ر ي هد	4
होना	كَوْن	–	كَائِن	كُنْ	يَكُوْنُ	كَانَ	ك و ن قا	1358
ख़रीदना	اِشْتِرَاء	مُشْتَرًى	مُشْتَرٍ	اِشْتَرِ	يَشْتَرِيْ	اِشْتَرٰى	ش ر ي اِخـ+	21
ईमान लाना	إِيْمَان	مُؤْمَن	مُؤْمِن	اٰمِنْ	يُؤْمِنُ	اٰمَنَ	أ م ن أسـ+	818
डरना	اِتِّقَاء	مُتَّقًى	مُتَّقٍ	اِتَّقِ	يَتَّقِيْ	اِتَّقٰى	و ق ي اِخـ+	216

अस्मा

मआ़नी	जमा	वाह़िद
जान	أَنْفُس	نَفْس

www.understandquran.com

رَاعِنَا मत कहो! (अल-बक़राः104-105)

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَقُوْلُوْا رَاعِنَا

ऐ ईमान वालो!	न कहो	"رَاعِنَا"

وَقُوْلُوا انْظُرْنَا وَاسْمَعُوْا ؕ وَلِلْكٰفِرِيْنَ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿104﴾

और कहो	"اُنْظُرْنَا"	और सुनो,	और काफ़िरों के लिए	दर्दनाक अज़ाब है।

مَا يَوَدُّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ وَلَا الْمُشْرِكِيْنَ

नहीं चाहते	वह लोग जिन्होंने कुफ़्र किया	अहले किताब में से	और न मुशरिकीन

اَنْ يُّنَزَّلَ عَلَيْكُمْ مِّنْ خَيْرٍ مِّنْ رَّبِّكُمْ ؕ وَاللّٰهُ يَخْتَصُّ

कि	नाज़िल की जाए तुम पर	कोई भलाई	तुम्हारे रब की जानिब से,	और अल्लाह	ख़ास कर लेता है

بِرَحْمَتِهٖ مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَاللّٰهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيْمِ ﴿105﴾

अपनी रह़मत से	जिसे चाहता है,	और अल्लाह	बड़े फ़ज़्ल वाला है।

मुख़्तसर शरह़

- जब कभी रसूलुल्लाह ﷺ मुसलमानों से ख़िताब फ़रमाते तो यहूद दख़ल अंदाज़ी करते हुए कहतेः हमें मुआ़फ़ करना। अ़रबी ज़ुबान में इसके लिए "رَاعِنَا" (हमारा ख़्याल रखिए) का लफ़्ज़ इस्तिमाल होता है, लेकिन यहूद इस को जान-बूझ कर खींच कर अदा करते और "رَاعِيْنَا" (हमारा चरवाहा) कहते। दरअसल वह रसूलुल्लाह ﷺ की तौहीन करना और मजलिस को ख़राब करना चाहते थे। अल्लाह तआ़ला ने मुसलमानों को वह लफ़्ज़ इस्तिमाल करने से मना किया और उस के बजाए दूसरा लफ़्ज़ "اُنْظُرْنَا" (हमारी तरफ़ देखिए) दिया।
- وَاسْمَعُوْا...: अगर वह अच्छी तरह़ से सुनते तो उन्हें इस बात का सवाल करने की ज़रूरत ही न पड़ती कि दोबारा दोहराईए, क्योंकि ख़ुद रसूलुल्लाह ﷺ बहुत साफ़ साफ़ बात किया करते थे।
- काफ़िर उसे कहते हैं जो हक़ के वाज़ेह़ हो जाने के बाद भी उस का इंकार करे। ऐसे लोगों के लिए दर्द-नाक अ़ज़ाब है।
- مَا يَوَدُّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا...: मदीने के यहूद मुसलमानों से ह़सद करते थे और उनके लिए किसी भी क़िस्म की अच्छाई को पसंद नहीं करते थे। मुसलमानों की सोच यह थी कि अहले किताब अल्लाह के पैग़ाम से मुह़ब्बत रखने वाले होंगे या कम-अज़-कम रसूल का एह़तेराम तो करेंगे लेकिन ऐसा नहीं हुआ। मुशरिकीने मक्का भी मुसलमानों के दुश्मन बन गए और उन्होंने मुसलमानों को मक्का से बाहर कर दिया। इस तरह़ मदीने के यहूद और मक्का और आस पास के मुशरिकीन दोनों ने मुसलमानों के लिए ख़ैर नहीं चाहा।
- **ख़ैरः** हर अच्छी चीज़, जैसे किताब, पैग़म्बर, इस्लाम और मुसलमानों की फ़तूह़ और कोई भी माद्दी चीज़।
- अल्लाह ही है जो रह़म करता है और नेअ़मतें अ़ता करता है, बस उसी से ख़ैर की भीक माँगो कि तमाम नेअ़मतें उसी के क़बज़े में हैं। दूसरों के चालों की फ़िक्र मत करो!
- जब किसी आयत में अल्लाह के फ़ज़्ल और उसकी रह़मत का ज़िक्र हो तो हम भी फ़ौरी अल्लाह से उस की भीक माँग लें! मसलन وَاللّٰهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيْمِ पढ़ने या सुनने पर हम दुआ़ कर सकते हैं: اَللّٰهُمَّ إِنَّا نَسْئَلُكَ مِنْ فَضْلِكَ وَرَحْمَتِكَ (ऐ अल्लाह हम तुझसे सवाल करते हैं तेरे फ़ज़्ल का और तेरी रह़मत का)

www.understandquran.com

ह़दीसः क़ुरआन एक ऐसा अ़ज़ीमुश्शान और बेहतरीन तोह़फ़ा है कि उस की पैरवी कर के हम ऊँचाईयों तक पहुँच सकते हैं। ह़ज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमायाः ''बे-शक अल्लाह तआ़ला इस किताब (क़ुरआन) के ज़रिए कुछ क़ौमों को बुलंद फ़रमाता है तो कुछ क़ौमों को इस के ज़रिए गिरा देता है''। (मुस्लिमः 817)

अस्बाक़, दुआ़ और प्लानः इन आयात से कई अस्बाक़, दुआ़एँ और प्लान्स बनाए जा सकते हैं। नीचे बतौर मिसाल सिर्फ़ चंद का ज़िक्र है।

- जिन चीज़ों का दूसरों की जानिब से ग़लत इस्तिमाल होता हो उन चीज़ों के इस्तिमाल से दूर रहिए। मसलन "رَاعِنَا" को अगर कोई ग़लत इस्तिमाल करे तो ऐसे लफ़्ज़ के बजाए दूसरा लफ़्ज़ ले लिया जाए!
- जब भी रसूलुल्लाह ﷺ के तअ़ल्लुक़ से बात हो तो एह़तेराम से बात कीजिए।
- तिलावत, ख़ुतबा या दीनी ब्यान वग़ैरा को मुकम्मल तवज्जोह के साथ सुनिए ताकि उस की वज़ाहत के लिए सवालात न करने पड़ें।
- अल्लाह से उस का फ़ज़्ल माँगिए और दुश्मनों की नफ़रत और ह़सद की फ़िक्र मत कीजिए।

दुआ़ः ऐ अल्लाह! हमें रसूलुल्लाह ﷺ की ह़दीसों को सुनने और पढ़ने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमा।

प्लानः इन्शा अल्लाह! मैं ह़दीस की किसी किताब जैसे रियाज़ुस्सालिह़ीन या मिशकातुल मसाबीह़ वग़ैरा का मुतालआ़ करने का प्लान बनाऊँगा।

अफ़्आ़लः हर फ़ेअ़ल के तह़त दिए गए तीन अफ़्आ़ल और तीन अस्मा की **TPI** के साथ मशक़ कीजिए

मआ़नी	काम का नाम	اسم مفعول	اسم فاعل	فعل امر	فعل مضارع	فعل ماضٍ	माद्दा व कोड	तकरार
देखना	نَظَر	مَنْظُوْر	نَاظِر	اُنْظُرْ	يَنْظُرُ	نَظَرَ	ن ظ ر ذ	95
सुनना	سَمْع	مَسْمُوْع	سَامِع	اِسْمَعْ	يَسْمَعُ	سَمِعَ	س م ع سـ	147
कुफ़्र करना	كُفْر	مَكْفُوْر	كَافِر	اُكْفُرْ	يَكْفُرُ	كَفَرَ	ك ف ر ذ	465
बड़ा होना	عِظَم	–	عَظِيْم	اُعْظُمْ	يَعْظُمُ	عَظُمَ	ع ظ م ک	107
कहना	قَوْل	مَقُوْل	قَابِل	قُلْ	يَقُوْلُ	قَالَ	ق و ل قا	1719
दिल से चाहना	وُدّ	مَوْدُوْد	وَادّ	وَدَّ	يَوَدُّ	وَدَّ	و د د مسـ	25
चाहना	شَيْئ	مَشِيْء	شَاءٍ	شَأ	يَشَاءُ	شَاءَ	ش ي أ خا	236
ईमान लाना	إِيْمَان	مُؤْمَن	مُؤْمِن	اٰمِنْ	يُؤْمِنُ	اٰمَنَ	أ م ن أسـ+	818
शिर्क करना	إِشْرَاك	مُشْرَك	مُشْرِك	أَشْرِكْ	يُشْرِكُ	أَشْرَكَ	ش ر ك أسـ+	120
नाज़िल करना	تَنْزِيْل	مُنَزَّل	مُنَزِّل	نَزِّلْ	يُنَزِّلُ	نَزَّلَ	ن ز ل علـ+	79
ख़ास करना	اِخْتِصَاص	مُخْتَصّ	مُخْتَصّ	اِخْتَصِصْ	يَخْتَصُّ	اِخْتَصَّ	خ ص ص اِخـ+	2

अस्मा		
मआ़नी	जमा	वाह़िद
जमाअ़त	فُرَقَاء	فَرِيْقٌ

www.understandquran.com

www.understandquran.com

अ़रबी ग्रामर

(अ़रबी बोल-चाल के साथ)

www.understandquran.com

11a तआ़रूफ़ और ज़मायर (मोअन्नस)

ग्रामर पार्ट का तआ़रूफ़:

पिछले कोर्सेस में हम ने सीखा था:

- तीन हुरूफ़ वाले सेह़त मन्द अफ़्आ़ल, जैसे فَتَحَ، نَصَرَ، ضَرَبَ، سَمِعَ वग़ैरा
- तीन हुरूफ वाले कम्ज़ोर अफ़्आ़ल, जैसे هَدٰى، دَعَا، قَالَ، وَعَدَ، وَهَبَ वग़ैरा
- मज़ीद फ़ीह अफ़्आ़ल, जैसे عَلَّمَ، حَاسَبَ، أَسْلَمَ، اِخْتَلَفَ، اِسْتَغْفَرَ، أَقَامَ वग़ैरा

इस कोर्स के बीस अस्बाक़ को तीन अहम ह़िस्सों में तक़्सीम किया जा सकता है:

1. फ़ेअ़ल मोअन्नस के टेबल्स, तस्निया (दो के लिए सेग़े) और मजहूल
2. अस्मा (मकान, सिफ़ात और जमा मुकस्सर)
3. क़ैंची और हथौड़े की वजह से फ़ेअ़ल मुज़ारे में तब्दिलियाँ (आप इन को बाद में सीखेंगे)

इस सबक़ में हम मोअन्नस की ज़मायर सीखेंगे, जैसे वह, वह सब, आप, आप सब, वग़ैरा।

आप هِيَ के मुतअ़ल्लिक़ पहले ही पढ़ चुके हैं, बाक़ी अल्फ़ाज़ में होने वाली दो तब्दिलियों को अच्छी तरह़ याद रखिए:

- أَنْتُمْ और هُمْ में مْ को نَّ से बदल दीजिए
- أَنْتَ के تَ को تِ से बदल दीजिए

इन अल्फ़ाज़ की TPI के ज़रिया मशक़ करते वक़्त अपना बायाँ हाथ इस्तिमाल कीजीए।

मोअन्नस			मुज़क्कर	
वह	هِيَ		वह	هُوَ
वह सब	هُنَّ	مْ ← نَّ	वह सब	هُمْ
आप	أَنْتِ	ـَ ← ـِ	आप	أَنْتَ
मैं	أَنَا		मैं	أَنَا
आप सब	أَنْتُنَّ	مْ ← نَّ	आप सब	أَنْتُمْ
हम सब	نَحْنُ		हम सब	نَحْنُ

www.understandquran.com

۞۞۞۞अ़रबी बोलचाल۞۞۞۞

مَنْ هِيَ؟	هِيَ مُسْلِمَة
مَنْ هُنَّ؟	هُنَّ مُسْلِمَات
مَنْ أَنْتِ؟	أَنَا مُسْلِمَة
مَنْ أَنْتُنَّ؟	نَحْنُ مُسْلِمَات
هَلْ أَنْتِ بِخَيْر؟	نَعَمْ، أَنَا بِخَيْر، اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ
هَلْ أَنْتُنَّ بِخَيْر؟	نَعَمْ، نَحْنُ بِخَيْر، اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ

आईए अब उस का, उन सब का, आप का, आप सब का, वग़ैरा के लिए मोअन्नस के अल्फ़ाज़ सीखते हैं। आप पहले رَبُّهَا सीख चुके हैं। बाक़ी के अल्फ़ाज़ में दो तबदीलीयाँ होती हैं इन को याद रखिए:

- رَبُّهُمْ और رَبُّكُمْ में مْ को نَّ से बदल दीजिए
- رَبُّكَ में كَ को كِ से बदल दीजिए
- رَبّ: पालने वाला, रिज़्क़ देने वाला, ख़्याल रखने वाला

मोअन्नस			मुज़क्कर	
उसका रब	رَبُّهَا	هَا ← هٗ	उस का रब	رَبُّهٗ
उन सब का रब	رَبُّهُنَّ	نَّ ← مْ	उन सब का रब	رَبُّهُمْ
आपका रब	رَبُّكِ	ـِ ← ـَ	आप का रब	رَبُّكَ
मेरा रब	رَبِّيْ		मेरा रब	رَبِّيْ
आप सब का रब	رَبُّكُنَّ	نَّ ← مْ	आप सब का रब	رَبُّكُمْ
हम सब का रब	رَبُّنَا		हम सब का रब	رَبُّنَا

۞۞۞۞अ़रबी बोलचाल۞۞۞۞

مَنْ رَبُّهَا؟	رَبُّهَا اللّٰهُ
مَنْ رَبُّهُنَّ؟	رَبُّهُنَّ اللّٰهُ
مَنْ رَبُّكِ؟	رَبِّيَ اللّٰهُ
مَنْ رَبُّكُنَّ؟	رَبُّنَا اللّٰهُ

11b फ़ेअ़ल माज़ी, मुज़ारे, अम्र बराए मोअन्नस (3 हर्फ़ी अफ़्आ़ल)

www.understandquran.com

इस सबक़ में हम फ़ेअ़ल मोअन्नस का टेबल सीखेंगे।
बिल्कुल ज़मायर ही की तरह फ़ेअ़ल के सेग़ों में भी तबदीलीयाँ होती हैं।
فَعَلَتْ आप पहले पढ़ चुके हैं:

- فَعَلْتَ के تَ को تِ से बदल दीजिए
- فَعَلْتُمْ के مْ को نَّ से बदल दीजिए। अलबत्ता فَعَلُوْا का मुअन्नस فَعَلْنَ होगा।

याद रहे कि इन अल्फ़ाज़ की TP। के ज़रिया मशक़ करते वक़्त आप को अपना बायाँ हाथ इस्तिमाल करना है।

فِعْل مَاضِ مُذَكَّر			فِعْل مَاضِ مُؤَنَّث
فَعَلَ उस ने किया		✓ فَعَلَتْ	उस ने किया
فَعَلُوْا उन सब ने किया	وْا ← نَ	فَعَلْنَ	उन सब ने किया
فَعَلْتَ आप ने किया	ـَـ ← ـِـ	فَعَلْتِ	आप ने किया
فَعَلْتُ मैं ने किया		فَعَلْتُ	मैं ने किया
فَعَلْتُمْ आप सब ने किया	مْ ← نَّ	فَعَلْتُنَّ	आप सब ने किया
فَعَلْنَا हम सब ने किया		فَعَلْنَا	हम सब ने किया

अ़रबी बोलचाल

هَلْ فَعَلَتْ خَيْرًا؟ نَعَمْ، فَعَلَتْ خَيْرًا.
هَلْ فَعَلْنَ خَيْرًا؟ نَعَمْ، فَعَلْنَ خَيْرًا.
هَلْ فَعَلْتِ خَيْرًا؟ نَعَمْ، فَعَلْتُ خَيْرًا.
هَلْ فَعَلْتُنَّ خَيْرًا؟ نَعَمْ، فَعَلْنَا خَيْرًا.

فِعْل مُضَارِع مُذَكَّر			فِعْل مُضَارِع مُؤَنَّث
يَفْعَلُ वह करता है		✓ تَفْعَلُ	वह करती है
يَفْعَلُوْنَ वह सब करते हैं	لُوْنَ ← لْنَ	يَفْعَلْنَ	वह सब करती हैं
تَفْعَلُ आप करते हैं	لِـ ← لِينَ	تَفْعَلِيْنَ	आप करती हैं
أَفْعَلُ मैं करता हूँ		أَفْعَلُ	मैं करती हूँ
تَفْعَلُوْنَ आप सब करते हैं	لُوْنَ ← لْنَ	تَفْعَلْنَ	आप सब करती हैं
نَفْعَلُ हम सब करते हैं		نَفْعَلُ	हम सब करते हैं

अ़रबी बोलचाल

هَلْ تَفْعَلُ خَيْرًا؟ نَعَمْ، تَفْعَلُ خَيْرًا.
هَلْ يَفْعَلْنَ خَيْرًا؟ نَعَمْ، يَفْعَلْنَ خَيْرًا.
هَلْ تَفْعَلِيْنَ خَيْرًا؟ نَعَمْ، أَفْعَلُ خَيْرًا.
هَلْ تَفْعَلْنَ خَيْرًا؟ نَعَمْ، نَفْعَلُ خَيْرًا.

فِعْل أَمْر مُذَكَّر			فِعْل أَمْر مُؤَنَّث
اِفْعَلْ कर!		اِفْعَلِيْ	कर! (वाहिद मोअन्नस)
اِفْعَلُوْا करो!		اِفْعَلْنَ	करो! (जमा मोअन्नस)
لَا تَفْعَلْ मत कर!		لَا تَفْعَلِيْ	मत कर! (वाहिद मोअन्नस)
لَا تَفْعَلُوْا मत करो!		لَا تَفْعَلْنَ	मत करो! (जमा मोअन्नस)

अ़रबी बोलचाल

اِفْعَلِيْ خَيْرًا! أَفْعَلُ خَيْرًا.
اِفْعَلْنَ خَيْرًا! نَفْعَلُ خَيْرًا.

www.understandquran.com

फ़ेअ़ल माज़ी, मुज़ारे, अम्र बराए मोअन्नस
(मज़ीद फ़ीह अफ़्आ़ल)

इस सबक़ में हम मज़ीद फ़ीह के फ़ेअ़ल मोअन्नस का टेबल सीखेंगे।
फ़ेअ़ल सुलासी की तरह़ मज़ीद फ़ीह के अफ़्आ़ल के सेग़ों में भी तबदीलीयाँ होंगी।
أَسْلَمَتْ आप पहले पढ़ चुके हैं:

- أَسْلَمَتْ के تَ को تِ से बदल दीजिए।
- أَسْلَمْتُمْ के مْ को نَّ से बदल दीजिए। अलबत्ता أَسْلَمُوْا का मुअन्नस أَسْلَمْنَ होगा।

याद रखें कि इन अल्फ़ाज़ की TPI के ज़रिया मशक़ करते वक़्त आप को अपना बायाँ हाथ इस्तिमाल करना है।

فِعْل مَاضٍ مُذَكَّر			فِعْل مَاضٍ مُؤَنَّث	
أَسْلَمَ	उस ने हुक्म माना		أَسْلَمَتْ ✓	उस ने हुक्म माना
أَسْلَمُوْا	उन सब ने हुक्म माना	ـُوْا ← نَ	أَسْلَمْنَ	उन सब ने हुक्म माना
أَسْلَمْتَ	आप ने हुक्म माना	ـَ ← ـِ	أَسْلَمْتِ	आप ने हुक्म माना
أَسْلَمْتُ	मैं ने हुक्म माना		أَسْلَمْتُ	मैं ने हुक्म माना
أَسْلَمْتُمْ	आप सब ने हुक्म माना	مْ ← نَّ	أَسْلَمْتُنَّ	आप सब ने हुक्म माना
أَسْلَمْنَا	हम सब ने हुक्म माना		أَسْلَمْنَا	हम सब ने हुक्म माना

अ़रबी बोलचाल

هَلْ أَسْلَمَتْ لِلّٰهِ؟ نَعَمْ، أَسْلَمَتْ لِلّٰهِ.
هَلْ أَسْلَمْنَ لِلّٰهِ؟ نَعَمْ، أَسْلَمْنَ لِلّٰهِ.
هَلْ أَسْلَمْتِ لِلّٰهِ؟ نَعَمْ، أَسْلَمْتُ لِلّٰهِ.
هَلْ أَسْلَمْتُنَّ لِلّٰهِ؟ نَعَمْ، أَسْلَمْنَا لِلّٰهِ.

فِعْل مُضَارِع مُذَكَّر			فِعْل مُضَارِع مُؤَنَّث	
يُسْلِمُ	वह हुक्म मानता है		تُسْلِمُ	वह हुक्म मानती है
يُسْلِمُوْنَ	वह सब हुक्म मानते हैं	لُوْنَ ← لْنَ	يُسْلِمْنَ	वह सब हुक्म मानती हैं
تُسْلِمُ	आप हुक्म मानते हैं	لِـ ← لِينَ	تُسْلِمِيْنَ	आप हुक्म मानती हैं
أُسْلِمُ	मैं हुक्म मानता हूँ		أُسْلِمُ	मैं हुक्म मानती हूँ
تُسْلِمُوْنَ	आप सब हुक्म मानते हैं	لُوْنَ ← لْنَ	تُسْلِمْنَ	आप सब हुक्म मानती हैं
نُسْلِمُ	हम सब हुक्म मानते हैं		نُسْلِمُ	हम सब हुक्म मानती हैं

अ़रबी बोलचाल

هَلْ تُسْلِمُ لِلّٰهِ؟ نَعَمْ، تُسْلِمُ لِلّٰهِ.
هَلْ يُسْلِمْنَ لِلّٰهِ؟ نَعَمْ، يُسْلِمْنَ لِلّٰهِ.
هَلْ تُسْلِمِيْنَ لِلّٰهِ؟ نَعَمْ، أُسْلِمُ لِلّٰهِ.
هَلْ تُسْلِمْنَ لِلّٰهِ؟ نَعَمْ، نُسْلِمُ لِلّٰهِ.

فِعْل أَمْر مُذَكَّر		فِعْل أَمْر مُؤَنَّث	
أَسْلِمْ	हुक्म मान!	أَسْلِمِيْ	हुक्म मान!
أَسْلِمُوْا	हुक्म मानो!	أَسْلِمْنَ	हुक्म मानो!
لَا تُسْلِمْ	मत हुक्म मान!	لَا تُسْلِمِيْ	मत हुक्म मान!
لَا تُسْلِمُوْا	मत हुक्म मानो!	لَا تُسْلِمْنَ	मत हुक्म मानो!

أَسْلِمِيْ لِلّٰهِ! أُسْلِمُ لِلّٰهِ.
أَسْلِمْنَ لِلّٰهِ! نُسْلِمُ لِلّٰهِ.

www.understandquran.com

11d दो के लिए सेग़े (ज़मायर और फ़ेअ़ले माज़ी)

इस सबक़ में हम दो के लिए सेग़े (तस्निया) सीखेंगे, जैसे ''वह दोनों'', ''आप दोनों''।
दो का सेग़ा बनाने के लिए هُمْ आख़िर में अलिफ़ मद्द बढ़ा दें। जिस की वजह से यह हो जाएंगे:

هُمَا	वह दोनों
أَنْتُمَا	आप दोनों

अ़रबी में ''हम दोनों'' के लिए अलग से कोई लफ़्ज़ नहीं आता है। ''हम दोनों'' या ''हम सब'' के लिए نَحْنُ इस्तिमाल होता है।

आईए अ़रबी बोल-चाल की मशक़ करे

مَنْ هُمَا؟ هُمَا مُسْلِمَانِ. (दो मुसलमान)

مَنْ أَنْتُمَا؟ نَحْنُ مُسْلِمَانِ.

अब हम दूसरे दो अल्फ़ाज़ लेते हैं: "رَبُّهُمْ" और "رَبُّكُمْ"। इन में भी दो का सेग़ा बनाने के लिए उन के आख़िर में अलिफ़ मद्द का इज़ाफ़ा कर दीजिए।

رَبُّهُمَا	उन का रब (उन दोनों का रब)
رَبُّكُمَا	आप का रब (आप दोनों का रब)

अ़रबी में ''हम दोनों का'' के लिए अलग से कोई लफ़्ज़ नहीं आता है। ''हम दोनों का'' या ''हम सब का'' के लिए نَحْنُ ही इस्तिमाल होता है।

अ़रबी बोल-चाल की मश्क कीजिए

مَنْ رَبُّهُمَا؟ رَبُّهُمَا اللهُ.

مَنْ رَبُّكُمَا؟ رَبُّنَا اللهُ.

फ़ेअ़ल माज़ी से दो के सेग़े: आप ने فَعَلُوْا (उन सब ने किया) और فَعَلْتُمْ (आप सब ने किया) पढ़ लिया है। दो का सेग़ा बनाने के लिए وْا को उसे ـا बदल दीजिए, और अगर वहाँ न हो तो अलिफ़ मद्द बढ़ा दीजिए:

فَعَلَا	उन दोनों ने किया
فَعَلْتُمَا	तुम दोनों ने किया

अ़रबी में ''हम दोनों ने किया'' के लिए अलग से कोई लफ़्ज़ नहीं आता है। ''हम दोनों ने किया''या ''हम सब ने किया'' के लिएفَعَلْنَا ही आता है।

इन अल्फ़ाज़ को अ़रबी बोल-चाल में इस्तिमाल कीजिए

هَلْ فَعَلَا خَيْرًا؟ نَعَمْ، فَعَلَا خَيْرًا.

هَلْ فَعَلْتُمَا خَيْرًا؟ نَعَمْ، فَعَلْنَا خَيْرًا.

इस सबक़ में जो कुछ आपने सीखा, नीचे के टेबल में उसको पेश किया गया है:

			فعل ماضٍ		
			فَعَلَا उन दोनों ने किया	رَبُّهُمَا उन दोनों का रब	هُمَا वह दोनों
			فَعَلْتُمَا आप दोनों ने किया	رَبُّكُمَا आप दोनों रब	أَنْتُمَا आप दोनों

www.understandquran.com

12a दो के लिए सेग़े: فعل مضارع، أمر ونهي، اسم فاعل ومفعول

फ़ेअ़ल मुज़ारे से दो के सेग़े:

आप يَفْعَلُوْنَ (वह सब करते हैं) और تَفْعَلُوْنَ (आप सब करते हैं) पढ़ चुके हैं। दो का सेग़ा बनाने के लिए وْا की जगह ا कर दीजिए, दो का सेग़ा बन जाएगा:

वह दोनों करते हैं या करेंगे	يَفْعَلَانِ
आप दोनों करते हैं या करेंगे	تَفْعَلَانِ

अ़रबी में ''हम दोनों करते हैं'' के लिए अलग से कोई लफ़्ज़ नहीं आता है। ''हम दोनों करते हैं'' या ''हम सब करते हैं'' के लिए نَفْعَلُ ही इस्तिमाल होता है।

इन चारों सेग़ों को TP। के साथ याद रखिए: فَعَلَا، فَعَلْتُمَا، يَفْعَلَانِ، تَفْعَلَانِ

अ़रबी बोल-चाल की मश्क़ कीजिए:

هَلْ يَفْعَلَانِ خَيْرًا؟	نَعَمْ! يَفْعَلَانِ خَيْرًا.
هَلْ تَفْعَلَانِ خَيْرًا؟	نَعَمْ! نَفْعَلُ خَيْرًا.

फ़ेअ़ल अम्र व नह्य से दो का सेग़ा:

आप अम्र व नह्य के जमा के सग़े "اِفْعَلُوْا" और "لَا تَفْعَلُوْا" पढ़ चुके हैं। इन के दो के सेग़े बनाने के लिए وْا का ا से बदल दीजिए, याद रखिए कि दो के सेग़े में हमेशा ا की आवाज़ होती है।

करो (तुम दोनों)	اِفْعَلَا
मत करो (तुम दोनों	لَا تَفْعَلَا

आईए अ़रबी बोल-चाल की मश्क़ करते हैं:

اِفْعَلَا خَيْرًا!	نَفْعَلُ خَيْرًا.
لَا تَفْعَلَا شَرًّا!	لَا نَفْعَلُ شَرًّا.

इस्मे फ़ायल और इस्मे मफ़ऊल से दो का सेग़ा:

فَاعِلُوْنَ और مَفْعُوْلُوْنَ को आप पढ़ चुके हैं। इन से दो का सेग़ा बनाने के लिय وْا को ا से बदल दीजिए।

दो करने वाले	فَاعِلَانِ
दो आदमी जिन पर काम का असर पड़ा	مَفْعُوْلَانِ

www.understandquran.com

गुज़िश्ता सबक़ में और इस सबक़ में जो कुछ आप ने सीखा, नीचे के टेबल में उस को पेश किया गया है:

اسم فاعل، اسم مفعول	أمر و نهي	فعل مضارع	فعل ماضٍ		
فَاعِلَانِ दो करने वाले	اِفْعَلَا करो (तुम दोनों)	يَفْعَلَانِ वह दोनों करते हैं	فَعَلَا उन दोनों ने किया	رَبُّهُمَا उन दोनों का रब	هُمَا वह दोनों
مَفْعُولَانِ जिन दो पर असर पड़ा	لَا تَفْعَلَا मत करो (तुम दोनों)	تَفْعَلَانِ आप दोनों करते हैं	فَعَلْتُمَا आप दोनों ने किया	رَبُّكُمَا आप दोनों का रब	أَنْتُمَا आप दोनों

نَصَرَ से दो के सेग़े:

اسم فاعل، اسم مفعول	أمر و نهي	فعل مضارع	فعل ماضٍ
نَاصِرَانِ दो मदद करने वाले	اُنْصُرَا मदद करो (तुम दोनों)	يَنْصُرَانِ वह दोनों मदद करते हैं	نَصَرَا उन दोनों ने मदद की
مَنْصُوْرَانِ जिन दो की मदद की गई	لَا تَنْصُرَا मत मदद करो तुम दोनों)	تَنْصُرَانِ आप दोनों मदद करते हैं	نَصَرْتُمَا आप दोनों ने मदद की

عَلَّمَ से दो के सेग़े:

اسم فاعل، اسم مفعول	أمر و نهي	فعل مضارع	فعل ماضٍ
مُعَلِّمَانِ दो सिखाने वाले	عَلِّمَا सिखाओ (तुम दोनों)	يُعَلِّمَانِ वह दोनों सिखाते हैं	عَلَّمَا उन दोनों ने सिखाया
مُعَلَّمَانِ जिन दो को सिखाया गया	لَا تُعَلِّمَا मत सिखाओ (तुम दोनों)	تُعَلِّمَانِ आप दोनों सिखाते हैं	عَلَّمْتُمَا आप दोनों ने सिखाया

أَسْلَمَ से दो के सेग़े:

اسم فاعل، اسم مفعول	أمر و نهي	فعل مضارع	فعل ماضٍ
مُسْلِمَانِ दो हुक्म मानने वाले	اَسْلِمَا हुक्म मानो (तुम दोनों)	يُسْلِمَانِ वह दोनों हुक्म मानते हैं	أَسْلَمَا उन दोनों ने हुक्म माना
مُسْلَمَانِ जिन दो का हुक्म माना	لَا تُسْلِمَا मत हुक्म मानो (तुम दोनों)	تُسْلِمَانِ आप दोनों हुक्म मानते हैं	أَسْلَمْتُمَا आप दोनों ने हुक्म माना

नोट: होमवर्क के तौर पर आप سَمِعَ और كَذَّبَ से दो के सेग़े बना सकते हैं। आप को सूरह रह़मान में बहुत सारे दो के सेग़े मिलेंगे।

www.understandquran.com

फ़अ़्ले मजहूल

दूसरे कोर्स (Course-2) में हम نَصَرَ (उस ने मदद की) से फेअ़्ले मजहूल सीख चुके हैं। मफ़ऊल के लिए TPI का इशारा लेने वाले हाथ से होता है, नीचे दिए गए अफ़्आ़ल के लिए भी इसी इशारा को इस्तिमाल कीजिए।

فعل مضارع – مجهول		فعل ماضٍ – مجهول	
उस की मदद की जाती है	يُنْصَرُ	उस की मदद की गई	نُصِرَ
उन सब की मदद की जाती है	يُنْصَرُوْنَ	उन सब की मदद की गई	نُصِرُوْا
आप की मदद की जाती है	تُنْصَرُ	आप की मदद की गई	نُصِرْتَ
मेरी मदद की जाती है	أُنْصَرُ	मेरी मदद की गई	نُصِرْتُ
आप सब की मदद की जाती है	تُنْصَرُوْنَ	आप सब की मदद की गई	نُصِرْتُمْ
हम सब की मदद की जाती है	نُنْصَرُ	हम सब की मदद की गई	نُصِرْنَا
उस औ़रत की मदद की जाती है	تُنْصَرُ	उस औ़रत की मदद की गई	نُصِرَتْ

हम यहाँ एक दूसरा फ़ेअ़्ल लेते हैं رَزَقَ (उसने रिज़्क़ दिया)

अ़रबी बोलचाल

هَلْ رُزِقَ؟ نَعَمْ رُزِقَ.
هَلْ رُزِقُوا؟ نَعَمْ رُزِقُوا.
هَلْ رُزِقْتَ؟ نَعَمْ رُزِقْتُ.
هَلْ رُزِقْتُمْ؟ نَعَمْ رُزِقْنَا.

هَلْ يُرْزَقُ؟ نَعَمْ يُرْزَقُ.
هَلْ يُرْزَقُونَ؟ نَعَمْ يُرْزَقُونَ.
هَلْ تُرْزَقُ؟ نَعَمْ أُرْزَقُ.
هَلْ تُرْزَقُونَ؟ نَعَمْ نُرْزَقُ.

فعل مضارع – مجهول		فعل ماضٍ – مجهول	
उस को रिज़्क़ दिया जाता है	يُرْزَقُ	उस को रिज़्क़ दिया गया	رُزِقَ
उन सब को रिज़्क़ दिया जाता है	يُرْزَقُوْنَ	उन सब को रिज़्क़ दिया गया	رُزِقُوْا
आप को रिज़्क़ दिया जाता है	تُرْزَقُ	आप को रिज़्क़ दिया गया	رُزِقْتَ
मुझ को रिज़्क़ दिया जाता है	أُرْزَقُ	मुझ को रिज़्क़ दिया गया	رُزِقْتُ
आप सब को रिज़्क़ दिया जाता है	تُرْزَقُوْنَ	आप सब को रिज़्क़ दिया गया	رُزِقْتُمْ
हम सब को रिज़्क़ दिया जाता है	نُرْزَقُ	हम सब को रिज़्क़ दिया गया	رُزِقْنَا
उस औ़रत को रिज़्क़ दिया जाता है	تُرْزَقُ	उस (औ़रत) को रिज़्क़ दिया गया	رُزِقَتْ

www.understandquran.com

अगर आप फ़ेअ़ल माज़ी और फ़ेअ़ल मुज़ारे की दोनों चाबीयों को जानते हैं तो फिर आप बक़ीया सेग़े भी बा-आसानी बना सकते हैं। आईए अब हम कुछ और अफ़्आ़ल की चाबीयों से फ़ेअ़ले मजहूल के सेग़ों की मशक़ करते हैं:

سَمِعَ	←	سُمِعَ
وَعَدَ	←	وُعِدَ
قَالَ	←	قِيْلَ
هَدٰى	←	هُدِيَ

يَسْمَعُ	←	يُسْمَعُ
يَعِدُ	←	يُوْعَدُ
يَقُولُ	←	يُقَالُ
يَهْدِيْ	←	يُهْدٰى

मज़ीद फ़ीह अफ़्आ़ल से मजहूल भी इसी वज़न पर बनाए जाते हैं। मिसाल के तौर पर हम एक फ़ेअ़ल लेते हैं: عَلَّمَ

فعل ماضٍ - مجهول		فعل مضارع – مجهول	
عُلِّمَ	उस को सिखाया गया	يُعَلَّمُ	उस को सिखाया जाता है
عُلِّمُوْا	उन सब को सिखाया गया	يُعَلَّمُوْنَ	उन सब को सिखाया जाता है
عُلِّمْتَ	आप को सिखाया गया	تُعَلَّمُ	आप को सिखाया जाता है
عُلِّمْتُ	मुझ को सिखाया गया	أُعَلَّمُ	मुझ को सिखाया जाता है
عُلِّمْتُمْ	आप सब को सिखाया गया	تُعَلَّمُوْنَ	आप सब को सिखाया जाता है
عُلِّمْنَا	हम सब को सिखाया गया	نُعَلَّمُ	हम सब को सिखाया जाता है
عُلِّمَتْ	उस (औ़रत) को सिखाया गया	تُعَلَّمُ	उस (औ़रत) को सिखाया जाता है

अगर आप फ़ेअ़ले माज़ी और फ़ेअ़ल मुज़ारे की दोनों चाबीयों को जानते हैं तो फिर बक़ीया सेग़े बनाना भी आप के लिए आसान होगा। अब हम कुछ और अफ़्आ़ल की चाबीयों से फ़ेअ़ले मजहूल के सेगों की मशक़ करते हैं:

حَاسَبَ	←	حُوْسِبَ
أَنْزَلَ	←	أُنْزِلَ
أَوْحٰى	←	أُوْحِيَ
اِخْتَلَفَ	←	اُخْتُلِفَ

يُحَاسِبُ	←	يُحَاسَبُ
يُنْزِلُ	←	يُنْزَلُ
يُوْحِيْ	←	يُوْحٰى
يَخْتَلِفُ	←	يُخْتَلَفُ

www.understandquran.com

ग्रामर बराए सफ़्हा 12c — كَرُمَ، حَسِبَ का वज़्न

इस से पहले हम यह पढ़ चुके हैं कि तीन हुरूफ़ वाले सेहत-मंद अफ़आल आम तौर पर नीचे दिए गए औज़ान में से किसी एक वज़्न पर आते हैं।

فَتَحَ، نَصَرَ، ضَرَبَ، سَمِعَ

तीन हुरूफ़ वाले सेहत-मंद अफ़आल के मज़ीद दो औज़ान हैं।

كَرُمَ، يَكْرُمُ، أُكْرُمْ और حَسِبَ، يَحْسِبُ، اِحْسِبْ

अलबत्ता इन दोनों औज़ान में से पहला वज़्न ज़्यादा आम है, इस लिए हम सिर्फ़ उसी को पढ़ेंगे।

27 كَرُمَ: वह सख़ी (फ़ैयाज़) हुआ (ख़ानों के अल्फ़ाज़ में 3 अफ़आल की चाबियाँ हैं और 3 अस्मा की चाबियाँ)

فعل ماضِ		فعل مضارع		فعل أمر، نهى / اسم فاعل، اسم مفعول، काम का नाम	
كَرُمَ	वह सख़ी हो गया	يَكْرُمُ	वह सख़ी होता है	أُكْرُمْ	सख़ी हो
كَرُمُوْا	वह सब सख़ी हो गए	يَكْرُمُوْنَ	वो सब सख़ी होते हैं	أُكْرُمُوْا	सख़ी हो जाओ
كَرُمْتَ	आप सख़ी हो गए	تَكْرُمُ	आप सख़ी होते हैं	لَا تَكْرُمْ	मत सख़ी हो
كَرُمْتُ	मैं सख़ी हो गया	أَكْرُمُ	मैं सख़ी होता हूँ	لَا تَكْرُمُوْا	मत सख़ी हो जाओ
كَرُمْتُمْ	आप सब सख़ी हो गए	تَكْرُمُوْنَ	आप सब सख़ी होते हैं	كَرِيْم	सख़ी
كَرُمْنَا	हम सब सख़ी हो गए	نَكْرُمُ	हम सब सख़ी होते हैं	–	–
كَرُمَتْ	वह औरत सख़ी हो गई	تَكْرُمُ	वो औरत सख़ी होती है	كَرَم، كَرَامَة	सख़ी होना, सख़ावत

कुरआन में كَرُمَ के वज़्न पर आने वाले अफ़आल:

तकरार	فعل ماضِ	فعل مضارع	فعل أمر	اسم فاعل	اسم مفعول	काम का नाम	तर्जमा
27	كَرُمَ	يَكْرُمُ	أُكْرُمْ	كَرِيم	-	كَرَم، كَرَامَة	करीम होना, सख़ी होना
197	حَكُمَ	يَحْكُمُ	أُحْكُمْ	حَكِيم	-	حُكْم، حِكْمَة	अक़्लमंद होना
107	عَظُمَ	يَعْظُمُ	أُعْظُمْ	عَظِيم	-	عِظَم، عَظَامَة	अज़ीम होना
78	كَثُرَ	يَكْثُرُ	أُكْثُرْ	كَثِير	-	كُثْر، كَثْرَة	ज़्यादा होना
66	بَصُرَ	يَبْصُرُ	أُبْصُرْ	بَصِير	-	بَصَر، بَصَارَة	मुशाहिदा करना
58	كَبُرَ	يَكْبُرُ	أُكْبُرْ	كَبِير	-	كِبَر، كُبْر	बड़ा होना
33	بَعُدَ	يَبْعُدُ	أُبْعُدْ	بَعِيد	-	بُعْد	दूर होना

नोटः

- ऊपर दिए गए अफ़आल का कोई इस्मे मफ़ऊल नहीं होता है।
- इन के फ़ायल का नाम فَعِيْل के वज़्न पर है।
- इन में से कुछ इस्मे फ़ायल (كريم،حكيم) वग़ैरा सिफ़ात के तौर पर इस्तिमाल होते हैं। इन के बारे में आप बाद में पढ़ेंगे।

www.understandquran.com

इस्मे मकान

अ़रबी ज़बान में जगह या मुक़ाम का नाम बनाने के कई क़ायदे हैं। इस सबक़ में हम उन में से तीन क़ायदों को सीखेंगे।

क़ायदा: 1

➢ مَخْرَج की जमा مَخْرَجُوْنَ या مَخْرَجِيْنَ नहीं बल्कि مَخَارِج होगी। उसे आप जमा मुकस्सर के नाम से पहले ही सीख चुके हैं।

فَعَلَ	उस ने किया	مَفْعَل	काम करने की जगह	مَفَاعِل+
خَرَجَ	वह निकला	مَخْرَج	निकलने का रास्ता	مَخَارِج+
ذَهَبَ	वह गया	مَذْهَب	मज़हब, रास्ता	مَذَاهِب+
دَخَلَ	वह दाख़िल हुआ	مَدْخَل	दाख़िल होने की जगह	مَدَاخِل+

أَيْنَ الْمَدْخَلُ؟ اَلْمَدْخَل إِلَى الْيَمِيْنِ.

أَيْنَ الْمَخْرَجُ؟ اَلْمَخْرَج إِلَى الْيَسَارِ.

क़ायदा: 2

فَعَلَ	उस ने किया	مَفْعِل	काम करने की जगह	مَفَاعِل+
سَجَدَ	उस ने सजदा किया	مَسْجِد	सजदा करने की जगह	مَسَاجِد+
شَرَقَ	वह तलूअ़ हुआ	مَشْرِق	तलूअ़ होने की जगह	مَشَارِق+
غَرَبَ	वह गुरूब हुआ	مَغْرِب	गुरूब होने की जगह	مَغَارِب+

هَلْ صَلَّيْتَ فِي الْمَسْجِدِ؟ نَعَمْ، صَلَّيْتُ فِي الْمَسْجِدِ.

مِنْ أَيْنَ تَطْلُعُ الشَّمْسُ؟ تَطْلُعُ الشَّمْسُ مِنَ الْمَشْرِقِ.

أَيْنَ تَغْرُبُ الشَّمْسُ؟ تَغْرُبُ الشَّمْسُ فِي الْمَغْرِبِ.

क़ायदा: 3

فَعَلَ	उस ने किया	مَفْعَلَة	काम करने की जगह	مَفَاعِل+
دَرَسَ	उस ने पढ़ा	مَدْرَسَة	मुदरसा, पढ़ने की जगह	مَدَارِس+
مَلَكَ	वह मालिक हुवा	مَمْلَكَة	ममलकत	مَمَالِكُ+
كَتَبَ	उस ने लिखा	مَكْتَبَة	लाइब्रेरी	مَكَاتِبُ+

مَتٰى تَذْهَبُ إِلَى الْمَدْرَسَةِ؟ أَذْهَبُ إِلَى الْمَدْرَسَةِ فِي الصَّبَاحِ.

أَيْنَ الْمَكْتَبَةُ؟ اَلْمَكْتَبَةُ أَمَامَ الْمَدْرَسَةِ.

➢ **तीनों क़ायदों को याद रखने का आसान तरीक़ा:** मैं अपने घर के مخرج से बाहर निकल कर مسجد जाता हूँ और फिर مدرسة जाता हूँ। इन में से हर एक की जमा का वज़न एक ही है, مَخَارِج، مَسَاجِد، مَدَارِس

www.understandquran.com

13a सिफ़त, तफ़ज़ील, मुबालिग़ा के अल्फ़ाज़

इज़ाफ़ी क़वायद:

- आप فَاعِل (करने वाला) का सबक़ पहले पढ़ चुके हैं। मिसाल के तौर पर نَاصِر उसे कहेंगे जो मदद करने वाला हो; लेकिन यह ज़रूरी नहीं कि वह हमेशा ही मदद करता रहे।
- हाँ, अगर वह हमेशा मदद करता है तो गोया यह (मदद करना) उस की "सिफ़त" बन जाएगा। ऐसी सूरत में हम यह बताने के लिए कि मदद करना उस की सिफ़त है نَصِيْر का लफ़्ज़ इस्तिमाल करेंगे जो فَعِيْل के वज़न पर है।
- और अगर उस में यह सिफ़त दूसरों से ज़्यादा हो तो वह वही लफ़्ज़ أَفْعَل के वज़न पर आ जाएगा (فَعِيْل से ज़्यादा)

صِفَة		تَفْضِيْل	
كَبِيْر (كَبِيْرَة مؤنث)	बड़ा	أَكْبَر	ज़्यादा बड़ा
كَثِيْر (كَثِيْرَة مؤنث)	ज़्यादा	أَكْثَر	बहुत ज़्यादा
رَحِيْم	रहम करने वाला	أَرْحَم	ज़्यादा रहम करने वाला
عَظِيْم	अज़मत वाला	أَعْظَمُ	सबसे बड़ा
شَدِيْد	सख़्त	أَشَدّ	ज़्यादा सख़्त
عَلِيّ	बुलंद	أَعْلٰى	ज़्यादा बुलंद
عَلِيْم	जानने वाला	أَعْلَم	ज़्यादा जानने वाला
قَرِيْب	क़रीब	أَقْرَب	ज़्यादा क़रीब
قَلِيْل (قَلِيْلَة مؤنث)	कम	أَقَلّ	सब से कम
كَرِيْم	करम करने वाला	أَكْرَم	ज़्यादा करम करने वाला
حَمِيْد	क़ाबिले तारीफ़	أَحْمَد	ज़्यादा क़ाबिले तारीफ़
مَجِيْد	बुज़ुर्गी वाला	أَمْجَد	ज़्यादा बुज़ुर्गी वाला

صِفَة दीगर औज़ान

فَعِيْل (لازم)	كَرِيْم (كَرُمَ، يَكْرُمُ)، لَطِيْف (لَطُفَ، يَلْطُفُ)، حَكِيْم (حَكُمَ، يَحْكُمُ)
فَعْلَان	كَسْلَان، غَضْبَان، فَرْحَان، جَوْعَان

बाज़ मर्तबा माअ़ना की ज़्यादती को ज़ाहिर करने के लिए कुछ मख़सूस अल्फ़ाज़ इस्तिमाल किए जाते हैं, इन को صِيَغُ الْمُبَالَغَة कहा जाता है।

صِيَغُ الْمُبَالَغَة के दीगर औज़ान

فَعَّال	غَفَّار، تَوَّاب، عَلَّام
فَعِيْل (متعدي)	رَحِيْم، سَمِيْع
فَعُوْل	شَكُوْر، كَفُوْر، وَدُوْد، صَبُوْر
فَعُّوْل، فُعُّوْل	قَيُّوْم، سُبُّوْح، قُدُّوْس

www.understandquran.com

ग्रामर बराए सफ़्हा 13b

जमा तक्सीर (1)

इस सबक़ में हम जमा तकसीर सीखेंगे। अ़रबी ज़बान में जमा दो क़िस्म की होती है:

➢ **जमा सालिम** (सह़ीह़ जमा)

- मुज़क्कर के लिए "ون" या "ين" बढ़ा दीजिए, मसलनः مُسْلِم से, مُسْلِمُوْن،مُسْلِمِيْنَ।
- मोअन्नस के लिए "ة" को "ات" से बदल दीजिए, मसलन مُسْلِمَة से مُسْلِمَات।

➢ **जमा मुकस्सर** (टूटी हुई जमा)

- यह ऊपर ब्यान किए गए क़ायदे को तोड़ती है, जैसेः بَيْت से بُيُوْت (न कि بَيْتِيْن या بَيْتُوْن), इसी लिए इस को टूटी हुई जमा कहते हैं।
- ऐसे ''अनोखे'' क़ायदे हर ज़बान में होते हैं, जैसे अंग्रेज़ी में man से men (न कि ~~mans~~) Tooth से Teeth (न कि ~~Tooth's~~) ,mouse से mice (न कि ~~mouses~~)।
- इस क़िस्म के क़वायद को एक चैलेंज समझ कर इन्हें याद रखिए और अल्लाह तआ़ला से मज़ीद सवाब की उम्मीद रखें, इन्शा अल्लाह
- कोर्स-2 में आप जमा मुकस्सर पढ़ चुके हैं, यहाँ हम उस का इआ़दा करते हुए क़ुरआन में आई हुई जमा मुकस्सर की मज़ीद कुछ मिसालें सीखेंगे।
- **अहम नोटः** आप को इन मिसालों को याद करने की ज़रूरत नहीं है। आप की मालूमात के लिए नीचे टेबल में इन की दर्जा बंदी कर दी गई है। आप की पढ़ी हुई आयतों के तह़त आप इन में से काफ़ी अल्फ़ाज़ के मआ़नी भी जान चुके होंगे।

मिसालें	तर्जमा	जमा	वाह़िद	औज़ान
يُمْدِدْكُمْ رَبُّكُم بِخَمْسَةِ آلَافٍ مِّنَ الْمَلَائِكَةِ مُسَوِّمِينَ	हज़ार	اٰلَاف	اَلْف	1-أَفْعَال
☑	नाम	أَسْمَاء	اِسْم	
يُذَبِّحُوْنَ اَبْنَآءَكُمْ وَيَسْتَحْيُوْنَ نِسَآءَكُمْ	बेटा	أَبْنَاء	اِبْن	
فَتَحْنَا عَلَيْهِمْ اَبْوَابَ كُلِّ شَىْءٍ	दरवाज़ा	أَبْوَاب	بَاب	
☑	नज़र	أَبْصَار	بَصَر	
لَا فَارِضٌ وَّلَا بِكْرٌ	छोटी उम्र	أَبْكَار	بِكْر	
وَلَا تَشْتَرُوْا بِاٰيٰتِىْ ثَمَنًا قَلِيْلًا	क़ीमत	أَثْمَان	ثَمَن	
فَقُلْنَا اضْرِبْ بِّعَصَاكَ الْحَجَرَ	पत्थर	أَحْجَار	حَجَر	
مَنْ كَانَ يُرِيْدُ حَرْثَ الْاٰخِرَةِ نَزِدْ لَهٗ فِىْ حَرْثِهٖ	खेती	أَحْرَاث	حَرْث	
وَاذْكُرْ اِسْمٰعِيْلَ وَالْيَسَعَ وَذَا الْكِفْلِ ؕ وَكُلٌّ مِّنَ الْاَخْيَارِ	बेहतर	أَخْيَار	خَيْر	
☑	रब	أَرْبَاب	رَبّ	
وَيَسْـَٔلُوْنَكَ عَنِ الرُّوْحِ ؕ قُلِ الرُّوْحُ مِنْ اَمْرِ رَبِّىْ	रूहुल-कुदुस	أَرْوَاح	رُوْح	
فَاَنْزَلْنَا عَلَى الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا رِجْزًا مِّنَ السَّمَآءِ	अज़ाब	أَرْجَاز	رِجْز	

www.understandquran.com

كُلُوْا وَاشْرَبُوْا مِنْ رِّزْقِ اللهِ وَلَا تَعْثَوْا فِی الْاَرْضِ مُفْسِدِیْنَ	रिज़्क़	أَرْزَاق	رِزْق	
☑	जोड़ा	أَزْوَاج	زَوْج	
يُعَلِّمُوْنَ النَّاسَ السِّحْرَ	जादू	أَسْحَار	سِحْر	
☑	चीज़	أَشْيَاء	شَيْء	
أُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ الْجَنَّةِ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ	वाला	أَصْحَاب	صَاحِب	
☑	दुश्मन	أَعْدَاء	عَدُوّ	
☑	अमल, काम	أَعْمَال	عَمَل	
وَاللهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيْمِ	फ़ज़्ल	أَفْضَال	فَضْل	
☑	जमाअत	أَفْوَاج	فَوْج	
☑	क़लम	أَقْلَام	قَلَم	
قَوْلٌ مَّعْرُوْفٌ وَّمَغْفِرَةٌ خَيْرٌ مِّنْ صَدَقَةٍ يَّتْبَعُهَا اَذًى	बात	أَقْوَال	قَوْل	
وَاِذِ اسْتَسْقٰى مُوْسٰى لِقَوْمِهٖ فَقُلْنَا اضْرِبْ بِّعَصَاكَ الْحَجَرَ	लोग	أَقْوَام	قَوْم	
قَالُوا ادْعُ لَنَا رَبَّكَ يُبَيِّن لَّنَا مَا لَوْنُهَا	रंग	أَلْوَان	لَوْن	
☑	अक़्ल	أَلْبَاب	لُبّ	
☑	मिसाल	أَمْثَال	مَثَل	
☑	मौत	أَمْوَات	مَوْت	
اِهْبِطُوْا مِصْرًا فَاِنَّ لَكُمْ مَّا سَاَلْتُمْ	शहर	أَمْصَار	مِصْر	
☑	नहर	أَنْهَار	نَهَر	
☑	रोशनी	أَنْوَار	نُوْر	
☑	बराबर	أَنْدَاد	نِدّ	
☑	दिन	أَيَّام	يَوْم	
☑	कान	آذَان	أُذُن	

أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ خَرَجُوا مِنْ دِيَارِهِمْ وَهُمْ أُلُوفٌ حَذَرَ الْمَوْتِ	हज़ार	أُلُوْف	اَلْف	2- فُعُوْل
وَّاَنَّ اللهَ لَا يُضِيْعُ اَجْرَ الْمُؤْمِنِيْنَ	सवाब	أُجُوْر	أَجْر	
مِمَّا تُنْۢبِتُ الْاَرْضُ مِنْۢ بَقْلِهَا	तरकारी	بُقُوْل	بَقْل	
وَلٰكِنَّ الشَّيٰطِيْنَ كَفَرُوْا يُعَلِّمُوْنَ النَّاسَ السِّحْرَ	जादू	سُحُوْر	سِحْر	
☑	सीना	صُدُوْر	صَدْر	
نَبَذَ فَرِيقٌ مِّنَ الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ كِتَابَ اللهِ وَرَاءَ ظُهُورِهِمْ	पीठ	ظُهُوْر	ظَهْر	
وَاَوْفُوْا بِعَهْدِیْٓ اُوْفِ بِعَهْدِكُمْ	मुआहिदा	عُهُوْد	عَهْد	

www.understandquran.com

	عَيْن	عُيُوْن	آँख	فَانْفَجَرَتْ مِنْهُ اثْنَتَا عَشْرَةَ عَيْنًا
	عِجْل	عُجُوْل	बछड़ा	ثُمَّ اتَّخَذْتُمُ الْعِجْلَ مِنْۢ بَعْدِهٖ
	قَلْب	قُلُوْب	दिल	☑
	مَلِك	مُلُوْك	बादशाह	☑
	نَفْس	نُفُوْس	शख़्स	وَاتَّقُوْا يَوْمًا لَّا تَجْزِىْ نَفْسٌ عَنْ نَّفْسٍ شَيْـًٔا
3-فِعَال	عَبْد	عِبَاد	गुलाम	☑
	دَار	دِيَار	घर	أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ خَرَجُوا مِنْ دِيَارِهِمْ وَهُمْ أُلُوفٌ حَذَرَ الْمَوْتِ
	دَم	دِمَاء	खून	☑
	بَحْر	بِحَار	समुंद्र	وَاِذَا الْبِحَارُ سُجِّرَتْ
	مَاء	مِيَاه	पानी	وَاِنَّ مِنْهَا لَمَا يَشَّقَّقُ فَيَخْرُجُ مِنْهُ الْمَآءُ
4-فُعَلَاء	رَحِيْم	رُحَمَاء	रहम करने वाला	☑
	شَرِيْك	شُرَكَاء	साझी, शरीक	☑
	شَهِيْد	شُهَدَاء	गवाह	☑
	فَرِيْق	فُرَقَاء	फ़रीक़	وَتُخْرِجُوْنَ فَرِيْقًا مِّنْكُمْ مِّنْ دِيَارِهِمْ
	عَلِيم	عُلَمَاء	उल्मा	اِنَّمَا يَخْشَى اللهَ مِنْ عِبَادِهِ الْعُلَمٰٓؤُا
5-فُعُل	كِتَاب	كُتُب	किताब	☑
	رَسُوْل	رُسُل	रसूल	☑
	ذَلُوْل	ذُلُل	सिधी हुई	☑
6-أَفْعِلَاء	نَبِيّ	أَنْبِيَاء	नबी	☑
	غَنِيّ	أَغْنِيَاء	बेनेयाज़, मालदार	قَالُوْٓا اِنَّ اللهَ فَقِيْرٌ وَّنَحْنُ اَغْنِيَآءُ
	شَدِيْد	أَشِدَّاء	सख़्त	وَأَنَّ اللهَ شَدِيدُ الْعَذَابِ
7-فَعَل	بَصَلَة	بَصَل	प्याज़	مِنْۢ بَقْلِهَا وَقِثَّآىِٕهَا وَفُوْمِهَا وَعَدَسِهَا وَبَصَلِهَا
	بَقَرَة	بَقَر	गाय	اِنَّ الْبَقَرَ تَشٰبَهَ عَلَيْنَا
	عَدَسَة	عَدَس	दाल	مِنْۢ بَقْلِهَا وَقِثَّآىِٕهَا وَفُوْمِهَا وَعَدَسِهَا وَبَصَلِهَا
8-فُعْل	أَغْلَف	غُلْف	पर्दा, ग़िलाफ़	وَقَالُوْا قُلُوْبُنَا غُلْفٌ
	فُوْمَة	فُوْم	गन्दुम	مِنْۢ بَقْلِهَا وَقِثَّآىِٕهَا وَفُوْمِهَا وَعَدَسِهَا وَبَصَلِهَا
متفرقات	بَحْر	أَبْحُر	समुंद्र	وَاِذْ فَرَقْنَا بِكُمُ الْبَحْرَ فَاَنْجَيْنٰكُمْ

www.understandquran.com

نَفْس	أَنْفُس	जान, शख़्स	☑	
طَعَام	أَطْعِمَة	खाना	وَاِذْ قُلْتُمْ يٰمُوْسٰى لَنْ نَّصْبِرَ عَلٰى طَعَامٍ وَّاحِدٍ	
فَتَّي	فِتْيَة	नौजवान	اِنَّهُمْ فِتْيَةٌ اٰمَنُوْا بِرَبِّهِمْ وَزِدْنٰهُمْ هُدًى	
قِرْد	قِرَدَة	बंदर	فَقُلْنَا لَهُمْ كُوْنُوْا قِرَدَةً خٰسِـِٔيْنَ	
نَار	نِيْرَان	आग	مَثَلُهُمْ كَمَثَلِ الَّذِى اسْتَوْقَدَ نَارًا	
إِنْسَان	أُنَاس	इंसान	☑	
حَجَر	حِجَارَة	पत्थर	☑	
أَسِيْر	أُسَارٰى	क़ैदी	وَاِنْ يَّاْتُوْكُمْ اُسٰرٰى تُفٰدُوْهُمْ وَهُوَ مُحَرَّمٌ عَلَيْكُمْ اِخْرَاجُهُمْ	
سَنَة	سَنِيْن	साल	وَقَدَّرَهٗ مَنَازِلَ لِتَعْلَمُوْا عَدَدَ السِّنِيْنَ وَالْحِسَابَ	

www.understandquran.com

जमा तक्सीर (2)

जैसा कि आप पहले पढ़ चुके हैं कि अ़रबी ज़बान में जमा की दो क़िस्में हैं

- **जमा सालिम** (सह़ीह़ जमा)
- **जमा मुकस्सर** (टूटी हुई जमा)

अ़रबी के क़वायद के मुताबिक़ किसी चीज़ (इंसान के इलावा) की जमा मुकस्सर वाह़िद मोअन्नस के हुक्म में होती है। इस ''अनोखे'' क़ायदे को आप इस तरह़ याद रख सकते हैं कि इस लफ़्ज़ ने जमा के क़ायदे को तोड़ा, चुनांचः सज़ा के तौर पर उस की मुज़क्कर होने की सिफ़त ख़त्म हो गई और उसे मोअन्नस बना दिया गया।
आईए, इस क़ायदे को याद रखने के लिए इस की थोड़ी सी मशक़ करते हैं।

هُوَ بَيْتٌ وَفِيهِ عَبْدٌ वह एक घर है और उस में एक ग़ुलाम है।	←	هِيَ بُيُوْتٌ وَفِيْهَا عِبَادٌ वह सब घर हैं और उन में (बहुत से) ग़ुलाम हैं।
هٰذَا بَيْتٌ	←	هٰذِهٖ بُيُوْتٌ
ذٰلِكَ بَيْتٌ	←	تِلْكَ بُيُوْتٌ
اَلْبَيْتُ الَّذِيْ --- वह ख़ास घर जो	←	اَلْبُيُوْتُ الَّتِيْ --- वह सब ख़ास घर जो
أَصْبَحَ الْبَيْتُ جَدِيْدًا घर नया हो गया।	←	أَصْبَحَتِ الْبُيُوْتُ جَدِيْدَةً घर नए हो गए।
يُصْبِحُ الْبَيْتُ جَدِيدًا घर नया हो जाता है	←	تُصْبِحُ الْبُيُوْتُ جَدِيْدَةً घर नए हो जाते हैं
بَيْتٌ وَاسِعٌ	←	بُيُوْتٌ وَاسِعَةٌ

एक और लफ़्ज़ लेते हैं: كِتَاب

هُوَ كِتَابٌ وَعَلَيْهِ قَلَمٌ	←	هِيَ كُتُبٌ وَعَلَيْهَا أَقْلَامٌ
هٰذَا كِتَابٌ	←	هٰذِهٖ كُتُبٌ
ذٰلِكَ كِتَابٌ	←	تِلْكَ كُتُبٌ
اَلْكِتَابُ الَّذِيْ ---	←	اَلْكُتُبُ الَّتِيْ ---
أَصْبَحَ الْكِتَابُ قَدِيْمًا	←	أَصْبَحَتِ الْكُتُبُ قَدِيْمَةً
يُصْبِحُ الْكِتَابُ قَدِيْمًا	←	تُصْبِحُ الْكُتُبُ قَدِيْمَةً
كِتَابٌ جَدِيْدٌ	←	كُتُبٌ جَدِيْدَةٌ

टूटी हुई जमा के लिए वाह़िद मोअन्नस के अल्फ़ाज़ इस्तिमाल किए जाएंगे। जैसे कि नीचे दिए गए यह अल्फ़ाज़:

هِيَ، هَا، هٰذِهٖ، تِلْكَ، اَلَّتِيْ، فَعَلَتْ، تَفْعَلُ، فَاعِلَة

www.understandquran.com

आप पिछले सबक़ में पढ़ाए गए अल्फ़ाज़ का इस्तिमाल कर के इस क़ायदे की मशक़ कर सकते हैं। यहाँ हम क़ुरआन मजीद से तीन मिसालें लेते हैं।

زَوْجٌ مُطَهَّرٌ	أَزْوَاجٌ مُطَهَّرَةٌ
كَتَبَتْ يَدٌ	كَتَبَتْ أَيْدِيْ
يَجْرِيْ نَهْرٌ	تَجْرِيْ أَنْهَارٌ

क़ुरआनी आयात ही से मज़ीद दो मिसालें देखिए!

1. وَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنْ مَّنَعَ مَسٰجِدَ اللّٰهِ اَنْ يُّذْكَرَ فِيْهَا اسْمُهٗ وَسَعٰى فِيْ خَرَابِهَا ؕ
2. هَلْ اَتٰىكَ حَدِيْثُ الْغَاشِيَةِ ۝1 وُجُوْهٌ يَّوْمَئِذٍ خَاشِعَةٌ ۝2 عَامِلَةٌ نَّاصِبَةٌ ۝3
تَصْلٰى نَارًا حَامِيَةً ۝4 تُسْقٰى مِنْ عَيْنٍ اٰنِيَةٍ ۝5

www.understandquran.com

لَمْ+ مُضَارِع तीन हर्फ़ी अफ़्आल के साथ

इस सबक़ में हम फ़ेअ़्ल मुज़ारे में होने वाली तबदीलीयों को सीखेंगे।
इन अल्फ़ाज़ को हम पहले से जानते हैं।

मत कर!	لَا تَفْعَلْ	आप करते हैं	تَفْعَلُ
मत करो!	لَا تَفْعَلُوْا	आप सब करते हैं	تَفْعَلُوْنَ

لَا (नहीं, मत) क़ैंची वाला लफ़्ज़ है जो अपने बाद वाले फ़ेअ़्ल की आख़िरी ह़रकत को काट देता है। क़ैंची की शक्ल لَا के ऊपर बताई गई है जो تَفْعَلُ के (ـُ) पेश को काट कर उस को (ـْ) सुकून में बदल देता है। दूसरी सूरत में यह تَفْعَلُوْنَ के نَ को काट देता है जो कि जमा का सेग़ा है। यहाँ एक बात नोट करें कि समझने में आसानी की ग़र्ज़ से हम ‘‘कैंची’’ के लफ़्ज़ का इस्तिमाल कर रहे हैं।
इन क़ायदों को हम एक-एक कर के सीखेंगे। सबसे पहले हम لَمْ को लेते हैं।

لَمْ + مُضَارِع		
उस ने नहीं किया	= لَمْ يَفْعَلْ	لَمْ+يَفْعَلُ
उन सब ने नहीं किया	= لَمْ يَفْعَلُوْا	لَمْ+يَفْعَلُوْنَ
आप ने नहीं किया	= لَمْ تَفْعَلْ	لَمْ+تَفْعَلُ
मैं ने नहीं किया	= لَمْ أَفْعَلْ	لَمْ+أَفْعَلُ
आप सब ने नहीं किया	= لَمْ تَفْعَلُوْا	لَمْ+تَفْعَلُوْنَ
हम ने नहीं किया	= لَمْ نَفْعَلْ	لَمْ+نَفْعَلُ
उस (औ़रत) ने नहीं किया	= لَمْ تَفْعَلْ	لَمْ+تَفْعَلُ

अ़रबी बोलचाल

لَمْ يَفْعَلْ	أَلَمْ يَفْعَلْ؟
لَمْ يَفْعَلُوْا	أَلَمْ يَفْعَلُوْا؟
لَمْ أَفْعَلْ	أَلَمْ تَفْعَلْ؟
لَمْ نَفْعَلْ	أَلَمْ تَفْعَلُوْا؟

क़ुरआनी मिसाल

فَإِنْ لَّمْ تَفْعَلُوْا وَلَنْ تَفْعَلُوْا
पस अगर तुम न कर सको और तुम हरगिज़ न कर सकोगे

अब हम तीन हुरूफ़ वाले सेह़त-मंद अफ़्आ़ल نَصَرَ और فَتَحَ को लेते हैं:

अ़रबी बोलचाल तसव्वुर कीजिए कि हम एक बुरे आदमी की मदद के बारे में बात कर रहे हैं जो एक ग़लत काम कर रहा है		لَمْ + مُضَارِع	
لَمْ يَنْصُرْ	أَلَمْ يَنْصُرْ؟	उस ने मदद नहीं की	لَمْ يَنْصُرْ
لَمْ يَنْصُرُوْا	أَلَمْ يَنْصُرُوْا؟	उन सब ने मदद नहीं की	لَمْ يَنْصُرُوْا
لَمْ أَنْصُرْ	أَلَمْ تَنْصُرْ؟	आप ने मदद नहीं की	لَمْ تَنْصُرْ
لَمْ نَنْصُرْ	أَلَمْ تَنْصُرُوْا؟	मैं ने मदद नहीं की	لَمْ أَنْصُرْ
		आप सब ने मदद नहीं की	لَمْ تَنْصُرُوْا
		हम सब ने मदद नहीं की	لَمْ نَنْصُرْ
		उस औ़रत ने मदद नहीं की	لَمْ تَنْصُرْ

अ़रबी बोलचाल तसव्वुर कीजिए कि हम दरवाज़ा खोलने के बारे में बात कर रहे हैं		لَمْ + مُضَارِع	
لَمْ يَفْتَحْ	أَلَمْ يَفْتَحْ؟	उस ने नहीं खोला	لَمْ يَفْتَحْ
لَمْ يَفْتَحُوْا	أَلَمْ يَفْتَحُوْا؟	उन सब ने नहीं खोला	لَمْ يَفْتَحُوْا
لَمْ أَفْتَحْ	أَلَمْ تَفْتَحْ؟	आप ने नहीं खोला	لَمْ تَفْتَحْ
لَمْ نَفْتَحْ	أَلَمْ تَفْتَحُوْا؟	मैं ने नहीं खोला	لَمْ أَفْتَحْ
		आप सब ने नहीं खोला	لَمْ تَفْتَحُوْا
		हम सब ने नहीं खोला	لَمْ نَفْتَحْ
		उस औ़रत ने नहीं खोला	لَمْ تَفْتَحْ

www.understandquran.com

क़ैंची वाले अल्फ़ाज़ कमज़ोर हुरूफ़ के लिए बहुत डरावनी होते हैं, इसी लिए उन के आते ही कमज़ोर हुरूफ़ भाग जाते हैं जैसा कि नीचे बताया गया है।

अब हम एक कमज़ोर फ़ेअ़ल قَالَ को लेते हैं:

अ़रबी बोलचाल

أَلَمْ يَقُلْ؟	لَمْ يَقُلْ
أَلَمْ يَقُوْلُوْا؟	لَمْ يَقُوْلُوْا
أَلَمْ تَقُلْ؟	لَمْ أَقُلْ
أَلَمْ تَقُوْلُوْا؟	لَمْ نَقُلْ

क़ुरआनी मिसाल

لَمْ يَلِدْ وَلَمْ يُوْلَدْ

न उस ने जना और न वह जना गया

+ مُضَارع		
لَمْ+يَقُوْلُ	= لَمْ يَقُلْ	उस ने नहीं कहा
لَمْ+يَقُوْلُوْنَ	= لَمْ يَقُوْلُوْا	उन सब ने नहीं कहा
لَمْ+تَقُوْلُ	= لَمْ تَقُلْ	आप ने नहीं कहा
لَمْ+ أَقُوْلُ	= لَمْ أَقُلْ	मैं ने नहीं कहा
لَمْ+تَقُوْلُوْنَ	= لَمْ تَقُوْلُوْا	आप सब ने नहीं कहा
لَمْ+نَقُوْلُ	= لَمْ نَقُلْ	हम सब ने नहीं कहा
لَمْ+تَقُوْلُ	= لَمْ تَقُلْ	उस (औ़रत) ने नहीं कहा

अब हम तीन हुरूफ़ वाले कमज़ोर अफ़्आ़ल में هَدٰى और دَعَا को लेते हैं:

अ़रबी बोलचाल अल्लाह के इलावा कोई हिदायत देने वाला नहीं		+ مُضَارع		अ़रबी बोलचाल तसव्वुर कीजिए कि हम अल्लाह के सिवा किसी और को पुकारने के बारे में बात कर रहे हैं		+ مُضَارع	
أَلَمْ يَهْدِ؟	لَمْ يَهْدِ	لَمْ يَهْدِ	उस ने हिदायत नहीं दी	أَلَمْ يَدْعُ؟	لَمْ يَدْعُ	لَمْ يَدْعُ	उस ने नहीं पुकारा
أَلَمْ يَهْدُوْا؟	لَمْ يَهْدُوْا	لَمْ يَهْدُوْا	उन सब हिदायत नहीं दी	أَلَمْ يَدْعُوْا؟	لَمْ يَدْعُوْا	لَمْ يَدْعُوْا	उन सब ने नहीं पुकारा
أَلَمْ تَهْدِ؟	لَمْ أَهْدِ	لَمْ تَهْدِ	आप ने हिदायत नहीं दी	أَلَمْ تَدْعُ؟	لَمْ أَدْعُ	لَمْ تَدْعُ	आप ने नहीं पुकारा
أَلَمْ تَهْدُوْا؟	لَمْ نَهْدِ	لَمْ أَهْدِ	मैं ने हिदायत नहीं दी	أَلَمْ تَدْعُوْا؟	لَمْ نَدْعُ	لَمْ أَدْعُ	मैं ने नहीं पुकारा
		لَمْ تَهْدُوْا	आप सब ने हिदायत नहीं दी			لَمْ تَدْعُوْا	आप सब ने नहीं पुकारा
		لَمْ نَهْدِ	हम ने हिदायत नहीं दी			لَمْ نَدْعُ	हम ने नहीं पुकारा
		لَمْ تَهْدِ	उस औरत ने हिदायत नहीं दी			لَمْ تَدْعُ	उस औ़रत ने नहीं पुकारा

www.understandquran.com

لَمْ+ مُضَارع मज़ीद फ़ीह अफ़्आल के साथ

आप ने देखा कि तीन हुरूफ़ वाले सेह़त-मंद अफ़्आल (فَتَحَ، نَصَرَ) और कमज़ोर अफ़्आल (قَالَ، دَعَا، هَدٰى) पर क़ैंची का क्या असर होता है।

इस सबक़ में हम मज़ीद फ़ीह अफ़्आल के फ़ेअ़ल मुज़ारे (सेह़त मंद और कमज़ोर) के साथ لَمْ का इस्तिमाल करेंगे।

यहाँ नीचे मज़ीद फ़ीह का सेहत-मंद फ़ेअ़ल عَلَّمَ، يُعَلِّمُ، عَلِّمْ، مُعَلِّم، مُعَلَّم، تَعْلِيم दिया गया है।

अ़रबी बोलचाल

(तसव्वुर कीजिए कि हम बुरी आदतें सिखाने के बारे में बात कर रहे हैं)

أَلَمْ يُعَلِّمْ؟ لَمْ يُعَلِّمْ

أَلَمْ يُعَلِّمُوْا؟ لَمْ يُعَلِّمُوْا

أَلَمْ تُعَلِّمْ؟ لَمْ أُعَلِّمْ

أَلَمْ تُعَلِّمُوْ؟ لَمْ نُعَلِّمْ

لَمْ+ مُضَارع		
لَمْ+يُعَلِّمُ	= لَمْ يُعَلِّمْ	उस ने नहीं सिखाया
لَمْ+يُعَلِّمُوْنَ	= لَمْ يُعَلِّمُوْا	उन सब ने नहीं सिखाया
لَمْ+تُعَلِّمُ	= لَمْ تُعَلِّمْ	आप ने नहीं सिखाया
لَمْ+أُعَلِّمُ	= لَمْ أُعَلِّمْ	मैं ने नहीं सिखाया
لَمْ+تُعَلِّمُوْنَ	= لَمْ تُعَلِّمُوْا	आप सब ने नहीं सिखाया
لَمْ+نُعَلِّمُ	= لَمْ نُعَلِّمْ	हम सब ने नहीं सिखाया
لَمْ+تُعَلِّمُ	= لَمْ تُعَلِّمْ	उस औ़रत ने नहीं सिखाया

अब हम मज़ीद फ़ीह का एक और सेह़त मंद फ़ेअ़ल लेते हैं: أَسْلَمَ، يُسْلِمُ، أَسْلِمْ، مُسْلِم، مُسْلَم، إِسْلَام ।

अ़रबी बोलचाल

هَلْ أَسْلَمَ؟ لَمْ يُسْلِمْ.

هَلْ أَسْلَمُوْا؟ لَمْ يُسْلِمُوْا.

هَلْ أَسْلَمْتَ؟ لَمْ أُسْلِمْ.

هَلْ أَسْلَمْتُمْ؟ لَمْ نُسْلِمْ.

क़ुरआनी मिसाल

ءَاَنْذَرْتَهُمْ اَمْ لَمْ تُنْذِرْهُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ

ख़ाह आप उन्हें डराएँ या न डराएँ उन्हें (वह) नहीं ईमान लाएंगे

لَمْ+ مُضَارع		
لَمْ+يُسْلِمُ	= لَمْ يُسْلِمْ	उस ने हुक्म नहीं माना
لَمْ+يُسْلِمُوْنَ	= لَمْ يُسْلِمُوْا	उन सब ने हुक्म नहीं माना
لَمْ+تُسْلِمُ	= لَمْ تُسْلِمْ	आप ने हुक्म नहीं माना
لَمْ+أُسْلِمُ	= لَمْ أُسْلِمْ	मैं ने हुक्म नहीं माना
لَمْ+تُسْلِمُوْنَ	= لَمْ تُسْلِمُوْا	आप सब ने हुक्म नहीं माना
لَمْ+نُسْلِمُ	= لَمْ نُسْلِمْ	हम ने हुक्म नहीं माना
لَمْ+تُسْلِمُ	= لَمْ تُسْلِمْ	उस औ़रत ने हुक्म नहीं माना

www.understandquran.com

आईए अब हम मज़ीद फ़ीह का एक कमज़ोर फ़ेअ़ल लेते हैं: أَرَادَ، يُرِيْدُ، أَرِدْ، مُرِيْد، مُرَاد، إِرَادَة

कमज़ोर हुरूफ़ के लिए कैंची वाले अल्फ़ाज़ बहुत डरावने होते हैं य इस लिए कमज़ोर हुरूफ़ फ़ौरन भाग जाते हैं जैसा कि नीचे बताया गया है।

لَمْ + مُضَارِع		
لَمْ+يُرِيْدُ = لَمْ يُرِدْ	उस ने इरादा नहीं किया	
لَمْ+يُرِيْدُوْنَ = لَمْ يُرِيْدُوْا	उन सब ने इरादा नहीं किया	
لَمْ+تُرِيْدُ = لَمْ تُرِدْ	आप ने इरादा नहीं किया	
لَمْ+أُرِيْدُ = لَمْ أُرِدْ	मैं ने इरादा नहीं किया	
لَمْ+تُرِيْدُوْنَ = لَمْ تُرِيْدُوْا	आप सब ने इरादा नहीं किया	
لَمْ+نُرِيْدُ = لَمْ نُرِدْ	हम सब ने इरादा नहीं किया	
لَمْ+تُرِيْدُ = لَمْ تُرِدْ	उस औ़रत ने इरादा नहीं किया	

अ़रबी बोलचाल

أَلَمْ يُرِدْ؟ لَمْ يُرِدْ

أَلَمْ يُرِيْدُوْا؟ لَمْ يُرِيْدُوْا

أَلَمْ تُرِدْ؟ لَمْ أُرِدْ

أَلَمْ تُرِيْدُوْا؟ لَمْ نُرِدْ

क़ुरआनी मिसाल

لَمْ يُرِدِ اللهُ اَنْ يُّطَهِّرَ قُلُوْبَهُمْ

(नहीं अल्लाह ने चाहा कि पाक करे उनके दिल)

पिछले दो अस्बाक़ में हम ने देखा कि لَمْ की वजह से फ़ेअ़ल मुज़ारे मैं किस क़िस्म की तबदीलीयाँ होती हैं, जैसेः

لَمْ + يَفْعَلُوْنَ = لَمْ يَفْعَلُوْا

لَمْ + تَفْعَلُوْنَ = لَمْ تَفْعَلُوْا

इसी तरह़ दो के सेग़ों (तस्निया) और और मोअन्नस के सेग़े के आख़िर से भी ن गिर जाता है, जैसेः

لَمْ + يَفْعَلَانِ = لَمْ يَفْعَلَا

لَمْ + تَفْعَلَانِ = لَمْ تَفْعَلَا

لَمْ + تَفْعَلِيْنَ = لَمْ تَفْعَلِيْ

कैंची वाला लफ़्ज़ इन पाँचों अफ़्आ़ल में आख़िर के ن को गिराता है, ऐसे अफ़्आ़ल को أَفْعَال خَمْسَة (पाँच अफ़्आ़ल) कहते हैं। ऊपर ब्यान की गई तबदीलीयों को आसानी से याद रखने के लिए इन पाँच अफ़्आ़ल को इस तरह़ से जहन में रखिएः

يَفْعَلَانِ، يَفْعَلُوْنَ، تَفْعَلَانِ، تَفْعَلُوْنَ، تَفْعَلِيْنَ

أَفْعَال خَمْسَة (पाँच अफ़्आ़ल) की मज़ीद मिसालेंः

يَقُوْلَانِ، يَقُوْلُوْنَ، تَقُوْلَانِ، تَقُوْلُوْنَ، تَقُوْلِيْنَ

يُكَذِّبَانِ، يُكَذِّبُوْنَ، تُكَذِّبَانِ، تُكَذِّبُوْنَ، تُكَذِّبِيْنَ

नोट: यहाँ इस बात को भी याद रखिए कि ''हथौड़े वाले अल्फ़ाज़'' भी इन पाँचों अफ़्आ़ल के आख़िर से ن को गिरा देते हैं, इन्शा अल्लाह हम उन्हें अगले अस्बाक़ में पढ़ेंगे।

www.understandquran.com

शर्तिया अल्फ़ाज़: إِنْ، مَنْ، مَا، तीन ह़र्फ़ी अफ़्आ़ल के साथ

इस सबक़ में हम सीखेंगे कि तीन ह़र्फ़ी सेहत-मंद और कमज़ोर अफ़्आ़ल के साथ शर्तिया अल्फ़ाज़ (إِنْ، مَنْ، مَا) आएँ तो क्या तबदीली होती है।

शर्तिया जुमले:

अगर आप करोगे, तो मैं करूँगा	إِنْ تَفْعَلْ أَفْعَلْ
जो भी (इस को) करेगा, कामयाब होगा	مَنْ يَّفْعَلْ، يَنْجَحْ
जो कुछ आप करोगे, मैं करूँगा	مَا تَفْعَلْ، أَفْعَلْ

إِنْ और इस जैसे अल्फ़ाज़ फ़ेअ़ल मुज़ारे के शर्तिया जुमलों में "दो कैंची" की तरह़ काम करते हैं, यानी इन में शर्त के जवाब पर भी असर पड़ता है।

नीचे दी गई मिसालों को देखिए:

	कटे हुए	
	يَفْعَلْ يَفْعَلُوْا	يَفْعَلُ يَفْعَلُوْنَ
إِنْ تَفْعَلْ أَفْعَلْ अगर आप करोगे, तो मैं करूँगा	تَفْعَلْ أَفْعَلْ	تَفْعَلُ أَفْعَلُ
إِنْ تَفْعَلُوْا نَفْعَلْ अगर आप सब करेंगे, तो हम भी करेंगे	تَفْعَلُوْا نَفْعَلْ	تَفْعَلُوْنَ نَفْعَلُ
	تَفْعَلْ	تَفْعَلُ

आईए कुछ और मिसालें ले कर उस की मशक़ करते हैं:

	कटे हुए			कटे हुए	
	يَنْصُرْ يَنْصُرُوْا	يَنْصُرُ يَنْصُرُوْنَ		يَفْتَحْ يَفْتَحُوْا	يَفْتَحُ يَفْتَحُوْنَ
إِنْ تَنْصُرْ أَنْصُرْ अगर आप मदद करेंगे, तो में भी मदद करूँगा	تَنْصُرْ أَنْصُرْ	تَنْصُرُ أَنْصُرُ	إِنْ تَفْتَحْ أَفْتَحْ अगर आप खोलोगे, तो में भी खोलूँगा	تَفْتَحْ أَفْتَحْ	تَفْتَحُ أَفْتَحُ
إِنْ تَنْصُرُوْا نَنْصُرْ अगर आप सब मदद करेंगे, तो हम भी मदद करेंगे	تَنْصُرُوْا نَنْصُرْ	تَنْصُرُوْنَ نَنْصُرُ	إِنْ تَفْتَحُوْا نَفْتَحْ अगर आप सब खोलेंगे, तो हम भी खोलेंगे	تَفْتَحُوْا نَفْتَحْ	تَفْتَحُوْنَ نَفْتَحُ
	تَنْصُرْ	تَنْصُرُ		تَفْتَحْ	تَفْتَحُ

www.understandquran.com

	कटे हुए	
	يَضْرِبُ يَضْرِبُوْنَ	يَضْرِبْ يَضْرِبُوْا
إِنْ تَضْرِبْ أَضْرِبْ अगर आप मारेंगे, तो में भी मारूँगा	تَضْرِبُ أَضْرِبُ	تَضْرِبْ أَضْرِبْ
إِنْ تَضْرِبُوْا نَضْرِبْ अगर आप सब मारेंगे, तो हम भी मारेंगे	تَضْرِبُوْنَ نَضْرِبُ	تَضْرِبُوْا نَضْرِبْ
	تَضْرِبُ	تَضْرِبْ

अब हम तीन हुरूफ़ वाले कमज़ोर अफ़्आल में से कुछ मिसालें लेते हैं:

	कटे हुए		कटे हुए		
	يَعِدُ يَعِدُوْنَ	يَعِدْ يَعِدُوْا		يَقُوْلُ يَقُوْلُوْنَ	يَقُلْ يَقُوْلُوْا
إِنْ تَعِدْ أَعِدْ अगर आप वादा करेंगे तो मैं वादा करूँगा	تَعِدُ أَعِدُ	تَعِدْ أَعِدْ	إِنْ تَقُلْ أَقُلْ अगर आप कहेंगे तो मैं कहूँगा	تَقُوْلُ أَقُوْلُ	تَقُلْ أَقُلْ
إِنْ تَعِدُوْا نَعِدْ अगर आप सब वादा करेंगे, तो हम सब वादा करेंगे	تَعِدُوْنَ نَعِدُ	تَعِدُوْا نَعِدْ	إِنْ تَقُوْلُوْا نَقُلْ अगर आप सब कहेंगे तो हम सब कहेंगे	تَقُوْلُوْنَ نَقُوْلُ	تَقُوْلُوْا نَقُلْ
	تَعِدُ	تَعِدْ		تَقُوْلُ	تَقُلْ

	कटे हुए	
	يَدْعُوْ يَدْعُوْنَ	يَدْعُ يَدْعُوْا
إِنْ تَدْعُ أَدْعُ अगर आप पुकारेंगे तो मैं पुकारूँगा	تَدْعُوْ أَدْعُوْ	تَدْعُ أَدْعُ
إِنْ تَدْعُوْا نَدْعُ अगर आप सब पुकारेंगे तो हम सब पुकारेंगे	تَدْعُوْنَ نَدْعُوْ	تَدْعُوْا نَدْعُ
	تَدْعُوْ	تَدْعُ

www.understandquran.com

शर्तिया ह़ालत को ब्यान करने के लिए दूसरे अफ़्आ़ल भी इस्तिमाल किए जा सकते हैं, जैसेः

وَمَا تَفْعَلُوْا مِنْ خَيْرٍ يَّعْلَمْهُ اللّٰهُ और जो कुछ नेकी तुम करोगे तो अल्लाह उसे जानता है	जो कुछ भी	مَا
مَنْ يَّعْمَلْ سُوْٓءًا يُّجْزَ بِهٖ जो कोई बुराई करेगा तो उसकी सज़ा पाएगा	कौन	مَنْ

शर्तिया ह़ालत के लिए कुछ अल्फ़ाज़ और भी हैं जो फ़ेअ़ल माज़ी पर आते हैं लेकिन फ़ेअ़ल माज़ी में किसी तरह़ की तबदीली नहीं होती, जैसेः

اِذَا جَاءَ نَصْرُ اللّٰهِ وَالْفَتْحُ जब आ जाए अल्लाह की मदद और फ़तह़	जब	اِذَا
وَاَنَّا لَمَّا سَمِعْنَا الْهُدٰٓى اٰمَنَّا بِهٖ और यह कि जब हमने सुना हिदायत को तो हम उस पर ईमान लाए	जब	لَمَّا

शर्तिया अल्फ़ाज़: إِنْ، مَنْ، مَا، मज़ीद फ़ीह अफ़्आल के साथ

इस सबक़ में हम सीखेंगे कि मज़ीद फ़ीह के अफ़्आल (सेह़त-मंद और कमज़ोर) के साथ शर्तिया अल्फ़ाज़ (إِنْ، مَنْ، مَا) आएँ तो क्या तबदीली होती है।

नीचे दिया गया मज़ीद फ़ीह फ़ेअ़ल देखिए:

	कटे हुए			कटे हुए	
	يُحَاسِبُ	يُحَاسِبْ		يُعَلِّمُ	يُعَلِّمْ
	يُحَاسِبُوْنَ	يُحَاسِبُوا		يُعَلِّمُوْنَ	يُعَلِّمُوْا
إِنْ تُحَاسِبْ يُحَاسِبْ अगर आप मुह़ासिबा करेंगे तो वह मुह़ासिबा करेगा	تُحَاسِبُ	تُحَاسِبْ	إِنْ تُعَلِّمْ أُعَلِّمْ अगर आप सिखाएंगे तो मैं सिखाऊँगा	تُعَلِّمُ	تُعَلِّمْ
	أُحَاسِبُ	أُحَاسِبْ		أُعَلِّمُ	أُعَلِّمْ
إِنْ تُحَاسِبُوْا يُحَاسِبُوْا अगर आप सब मुह़ासिबा करेंगे तो वह सब मुह़ासिबा करेंगे	تُحَاسِبُوْنَ	تُحَاسِبُوْا	إِنْ تُعَلِّمُوْا نُعَلِّمْ अगर आप सब सिखाएंगे तो हम सब सिखाएंगे	تُعَلِّمُوْنَ	تُعَلِّمُوْا
	نُحَاسِبُ	نُحَاسِبْ		نُعَلِّمُ	نُعَلِّمْ
	تُحَاسِبُ	تُحَاسِبْ		تُعَلِّمُ	تُعَلِّمْ

मज़ीद फ़ीह के कुछ और अफ्आ़ल नीचे दिए गए हैं:

	कटे हुए			कटे हुए	
	يَخْتَلِفُ	يَخْتَلِفْ		يُسْلِمُ	يُسْلِمْ
	يَخْتَلِفُوْنَ	يَخْتَلِفُوْا		يُسْلِمُوْنَ	يُسْلِمُوْا
إِنْ تَخْتَلِفْ أَذْهَبْ अगर आप इख़्तिलाफ़ करते हैं मैं चला जाऊँगा	تَخْتَلِفُ	تَخْتَلِفْ	إِنْ تُسْلِمْ يُسْلِمْ अगर आप हुक्म मानते हैं तो वह हुक्म मानेगा	تُسْلِمُ	تُسْلِمْ
	أَخْتَلِفُ	أَخْتَلِفْ		أُسْلِمُ	أُسْلِمْ
إِنْ تَخْتَلِفُوْا نَذْهَبْ अगर आप सब इख़्तिलाफ़ करते हैं तो हम सब चले जाएंगे	تَخْتَلِفُوْنَ	تَخْتَلِفُوْا	إِنْ تُسْلِمُوْا يُسْلِمُوْا अगर आप सब हुक्म मानते हैं तो वह सब हुक्म मानेंगे	تُسْلِمُوْنَ	تُسْلِمُوْا
	نَخْتَلِفُ	نَخْتَلِفْ		نُسْلِمُ	نُسْلِمْ
	تَخْتَلِفُ	تَخْتَلِفْ		تُسْلِمُ	تُسْلِمْ

www.understandquran.com

अब हम मज़ीद फ़ीह का एक कमज़ोर फ़ेअ़ल लेते हैं: اِتَّقٰى، يَتَّقِيْ، اِتَّقِ، مُتَّقٍ، مُتَّقًى، اِتِّقَاء । (اِتَّقٰى: वह डरा)

	कटे हुए	
	يَتَّقِ يَتَّقُوْا	يَتَّقِيْ يَتَّقُوْنَ
إِنْ تَتَّقِ اللهَ تُفْلِحْ अगर आप अल्लाह से डरते हैं तो आप कामयाब हो जाएंगे	تَتَّقِ أَتَّقِ	تَتَّقِيْ أَتَّقِيْ
إِنْ تَتَّقُوْا اللهَ تُفْلِحُوْا अगर आप सब अल्लाह से डरते हैं तो आप सब कामयाब हो जाएंगे	تَتَّقُوْا نَتَّقِ	تَتَّقُوْنَ نَتَّقِيْ
	تَتَّقِ	تَتَّقِيْ

कुछ कुरआनी मिसालें:

وَاِنْ تُؤْمِنُوْا وَتَتَّقُوْا يُؤْتِكُمْ اُجُوْرَكُمْ وَلَا يَسْأَلْكُمْ اَمْوَالَكُمْ

अगर तुम ईमान ले आओगे और तक़्वा इख़्तियार करोगे तो अल्लाह तुम्हें तुम्हारे अज्र देगा और वह तुम से तुम्हारे माल नहीं माँगता

وَمَنْ يَّتَّقِ اللهَ يَجْعَل لَّهُ مَخْرَجًا

और जो शख़्स अल्लाह से डरता है अल्लाह उस के लिए छुटकारे की शक्ल निकाल देता है

فَمَنْ يُّرِدِ اللهُ أَنْ يَّهْدِيَهُ يَشْرَحْ صَدْرَهُ لِلْاِسْلَامِ

सो जिस शख़्स को अल्लाह तआ़ला हिदायत देना चाहे उस के सीने को इस्लाम के लिए कुशादा कर देता है

कभी कभी शर्तिया जुमले के दूसरे हिस्से में फ़ेअ़ल मुज़ारे नहीं होता है, जैसे:

وَمَنْ يَّتَوَكَّلْ عَلَى اللهِ فَهُوَ حَسْبُهُ

और जो शख़्स अल्लाह पर भरोसा करेगा अल्लाह उसे काफ़ी होगा

وَاِنْ تَنْتَهُوْا فَهُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ

और अगर तुम बाज़ आ जाओ तो यह तुम्हारे लिए निहायत बेहतर है

www.understandquran.com

फ़ेअ़ल मुज़ारे के साथ "ل" की क़िस्में

अगर आप अ़रबी ज़बान में यूँ कहना चाहते हों कि फुलाँ को यह काम "करना चाहिए", तो आप फ़ेअ़ले मुज़ारे के शुरूअ़ में "لِ" बढ़ा दीजिए। ऐसी सूरत में "لِ" क़ैंची की तरह़ काम करेगा (यानी फ़ेअ़ल मुज़ारे के आख़िरी ह़र्फ़ को जज़्म दे देगा)। आ़म तौर से इस "لِ" से पहले "فَ" और "وَ" जुड़ कर आता है, यानी "فَلْ" (पस चाहिए...) और "وَلْ" (और चाहिए) होगा। फ़ेअ़ल मुज़ारे के साथ यह लाम (ل) की पहली क़िस्म है। इस को لَامُ الْأَمْر कहते हैं। नीचे فَلْ के साथ फ़ेअ़ल मुज़ारे की एक मिसाल दी जा रही है।

मशक़ के तौर पर नीचे के अल्फ़ाज़ का तर्जमा देखिए		+ مُضَارع		
और उस को लिखना चाहिए	وَلْيَكْتُبْ	पस उस को करना चाहिए	= فَلْيَفْعَلْ	فَلْـ+يَفْعَلُ
और उन सब को सवाल करना चाहिए	وَلْيَسْأَلُوْا	पस उन सब को करना चाहिए	= فَلْيَفْعَلُوْا	فَلْـ+يَفْعَلُوْنَ
पस उस को रोज़ा रखना चाहिए	فَلْيَصُمْ	पस आप को करना चाहिए	= فَلْتَفْعَلْ	فَلْـ+تَفْعَلُ
पस उन सब को इबादत करनी चाहिए	فَلْيَعْبُدُوْا	पस मुझे करना चाहिए	= فَلْأَفْعَلْ	فَلْـ+أَفْعَلُ
		पस आप सब को करना चाहिए	= فَلْتَفْعَلُوْا	فَلْـ+تَفْعَلُوْنَ
		पस हम सब को करना चाहिए	= فَلْنَفْعَلْ	فَلْـ+نَفْعَلُ
		पस उस (औ़रत) को करना चाहिए	= فَلْتَفْعَلْ	فَلْـ+تَفْعَلُ

कुरआनी मिसालें

فَلْيَعْبُدُوْا رَبَّ هٰذَا الْبَيْتِ

पस चाहिए कि वह सब इबादत करें इस घर के रब की

फ़ेअ़ल मुज़ारे के साथ लाम (ل) की दूसरी क़िस्म को "لَامُ التَّعْلِيْل" कहा जाता है। इसके लिए हम ने हथौड़ी की अ़लामत को इस्तिमाल किया है गोया यह हथौड़ी يَفْعَلُ، تَفْعَلُ वग़ैरा के आख़िर में मौजूद पेश को ज़बर से बदल देती है और يَفْعَلُوْنَ और تَفْعَلُوْنَ के आख़िर के नून (ن) का भी यही ह़ाल करती है कि वह अलिफ़ बन जाता है। हथौड़ी के लफ़्ज़ को सिर्फ़ इस नुक्ते को याद रखने के लिए इस्तिमाल किया गया है। यह ज़ेहन में रखिए कि يَفْعَلُوْنَ और تَفْعَلُوْنَ पर क़ैंची और हथौड़ी का असर एक जैसा होता है।

मशक़ के तौर पर नीचे के अल्फ़ाज़ का तर्जमा देखिए		+ مُضَارع		
ताकि वह बनाए	لِيَجْعَلَ	ताकि वह करे	= لِيَفْعَلَ	لِـ+يَفْعَلُ
ताकि आप सब खाएँ	لِتَأْكُلُوْا	ताकि वह सब करें	= لِيَفْعَلُوْا	لِـ+يَفْعَلُوْنَ
ताकि हम जान लें	لِنَعْلَمَ	ताकि आप करें	= لِتَفْعَلَ	لِـ+تَفْعَلُ
ताकि मैं हो जाऊँ	لِأَكُوْنَ	ताकि मैं करूँ		لِـ+أَفْعَلُ= لِأَفْعَلَ
		ताकि आप सब करें	= لِتَفْعَلُوْا	لِـ+تَفْعَلُوْنَ
		ताकि हम सब करें	= لِنَفْعَلَ	لِـ+نَفْعَلُ
		ताकि वह (औ़रत) करे	= لِتَفْعَلَ	لِـ+تَفْعَلُ

कुरआनी मिसालें

وَكَذٰلِكَ جَعَلْنَاكُمْ أُمَّةً وَسَطًا لِّتَكُونُوا شُهَدَاءَ عَلَى النَّاسِ

हमने इसी तरह़ तुम्हें आ़दिल उम्मत बनाया है ताकि तुम लोगों पर गवाह हो जाओ

www.understandquran.com

फ़ेअ़्ल मुज़ारे के साथ लाम "لَ" की तीसरी क़िस्म है: نُوْنُ التَّاكِيْد+لَام

	لَـ + يَفْعَلُ+ ـنَّ		
वह ज़रूर ज़रूर करेगा	لَيَفْعَلَنَّ	=	لَـ+يَفْعَلُ+ـنَّ
वह सब ज़रूर ज़रूर करेंगे	لَيَفْعَلُنَّ	=	لَـ+يَفْعَلُوْنَ+ـنَّ
आप ज़रूर ज़रूर करेंगे	لَتَفْعَلَنَّ	=	لَـ+تَفْعَلُ+ـنَّ
मैं ज़रूर ज़रूर करूँगा	لَأَفْعَلَنَّ	=	لَـ+أَفْعَلُ+ـنَّ
आप सब ज़रूर ज़रूर करेंगे	لَتَفْعَلُنَّ	=	لَـ+تَفْعَلُوْنَ+ـنَّ
हम सब ज़रूर ज़रूर करेंगे	لَنَفْعَلَنَّ	=	لَـ+نَفْعَلُ+ـنَّ
वह ज़रूर ज़रूर करेगी	لَتَفْعَلَنَّ	=	لَـ+تَفْعَلُ+ـنَّ

मशक़ के तौर पर नीचे के अल्फ़ाज़ का तर्जमा देखिए:

वह ज़रूर ज़रूर मदद करेगा	لَيَنْصُرَنَّ
हम सब ज़रूर ज़रूर हो जाएंगे	لَنَكُوْنَنَّ
आप सब ज़रूर ज़रूर दाख़िल होंगे	لَتَدْخُلُنَّ
मैं ज़रूर ज़रूर माफ़ी माँगूंगा	لَأَسْتَغْفِرَنَّ

कुरआनी मिसालें وَالَّذِيْنَ جَاهَدُوْا فِيْنَا لَنَهْدِيَنَّهُمْ سُبُلَنَا

और जो लोग हमारी राह में मशक़्क़तें बर्दाश्त करते हैं हम उन्हें अपनी राहें ज़रूर दिखा देंगे

फ़ेअ़्ल मुज़ारे में होने वाली तब्दीलीयाँ			
لَ – نَّ (ज़रूर ज़रूर)	لَنْ، أَنْ، أَلَّا، لِـ	لَمْ، لَمَّا،… شرط: إِنْ، مَنْ، مَا، لِـ، فَلْـ، وَلْـ	فَعْل مُضَارِع (عام حالت)
لَيَفْعَلَنَّ	يَفْعَلَ	يَفْعَلْ	يَفْعَلُ
لَيَفْعَلُنَّ	يَفْعَلُوْا	يَفْعَلُوْا	يَفْعَلُوْنَ
لَتَفْعَلَنَّ	تَفْعَلَ	تَفْعَلْ	تَفْعَلُ
لَأَفْعَلَنَّ	أَفْعَلَ	أَفْعَلْ	أَفْعَلُ
لَتَفْعَلُنَّ	تَفْعَلُوْا	تَفْعَلُوْا	تَفْعَلُوْنَ
لَنَفْعَلَنَّ	نَفْعَلَ	نَفْعَلْ	نَفْعَلُ
لَتَفْعَلَنَّ	تَفْعَلَ	تَفْعَلْ	تَفْعَلُ

www.understandquran.com

क़ैंची और हथौड़ी वाले अल्फ़ाज़ और उन की वजह से फ़ेअ़ल मुज़ारे (वाहिद) मैं होने वाली तबदीलीयों को आप इन जुमलों की मदद से याद रख सकते हैं:

	لَا تَفْعَلْ شَرًّا	
बुरा काम मत कर	لَمْ يَفْعَلْ خَيْرًا	لَمْ، لَمَّا
उसने अच्छा काम नहीं किया	إِنْ يَّفْعَلْ، يَكْسِبْ أَجْرًا	إِنْ، مَنْ، مَا
अगर वह कर लेता तो अजूर कमा लेता	فَلْيَفْعَلْ خَيْرًا	فَلْ، وَلْ
पस चाहिए कि वह नेक काम करे		

उस ने

لِيَفْعَلَ خَيْرًا (ताकि वह नेक काम करे)	इंसान को पैदा किया गया है	لِ
لَيَفْعَلَنَّ خَيْرًا (ज़रूर ज़रूर नेक काम करेगा)	एक अच्छा आदमी	لَ --- نَّ
لَنْ يَّفْعَلَ خَيْرًا (हरगिज़ नेक काम नहीं करेगा)	और एक बुरा आदमी	لَنْ، أَنْ، حَتّٰى

यही जुमले जमा के सेग़े की शक्ल में इस तरह़ आएंगे।

لَا تَفْعَلُوْا شَرًّا	
لَمْ يَفْعَلُوْا خَيْرًا	لَمْ، لَمَّا
إِنْ يَّفْعَلُوْا، يَكْسِبُوْا أَجْرًا	إِنْ، مَنْ، مَا
فَلْيَفْعَلُوْا خَيْرًا	فَلْ، وَلْ

जिन लोगो ने

لِيَفْعَلُوْا خَيْرًا	لِ
لَيَفْعَلُنَّ خَيْرًا	لَ --- نَّ
لَنْ يَّفْعَلُوْا خَيْرًا	لَنْ، أَنْ، حَتّٰى

www.understandquran.com

15a तीन हर्फ़ी अफ़्आल के साथ لن+مضارع

इस सबक़ में हम तीन हर्फ़ी अफ़्आल (सेहत-मंद और कमज़ोर) के साथ "لَنْ" सीखेंगे। "لَنْ" हथौड़ी की तरह काम करता है, हम ने गुज़िश्ता सबक़ में देखा कि "لَنْ" ने फ़ेअ़ल मुज़ारे के आख़िर में मौजूद पेश को ज़बर में बदल दिया, नीज़ يَفْعَلُوْنَ और تَفْعَلُوْنَ के आख़िर के नून (ن) का भी यह हाल करती है कि वह अलिफ़ बन जाता है। यह ज़ेहन में रखिए कि يَفْعَلُوْنَ और تَفْعَلُوْنَ पर क़ैंची और हथौड़ी का असर एक जैसा होता है।

यहाँ हम तीन हुरूफ़ वाला सेहत-मंद फ़ेअ़ल "يَفْعَلُ" को लेकर मशक़ करते हैं:

अरबी बोलचाल

هَلْ يَفْعَلُ؟	لَنْ يَّفْعَلَ
هَلْ يَفْعَلُوْنَ؟	لَنْ يَّفْعَلُوْا
هَلْ تَفْعَلُ؟	لَنْ أَفْعَلَ
هَلْ تَفْعَلُوْنَ؟	لَنْ نَّفْعَلَ

لَنْ + مُضَارِع		
لَنْ+يَفْعَلُ	= لَنْ يَّفْعَلَ	वह हरगिज़ नहीं करेगा
لَنْ+يَفْعَلُوْنَ	= لَنْ يَّفْعَلُوْا	वह सब हरगिज़ नहीं करेंगे
لَنْ+تَفْعَلُ	= لَنْ تَفْعَلَ	आप हरगिज़ नहीं करेंगे
لَنْ+أَفْعَلُ	= لَنْ أَفْعَلَ	मैं हरगिज़ नहीं करूँगा
لَنْ+تَفْعَلُوْنَ	= لَنْ تَفْعَلُوْا	आप सब हरगिज़ नहीं करेंगे
لَنْ+نَفْعَلُ	= لَنْ نَّفْعَلَ	हम हरगिज़ नहीं करेंगे
لَنْ+تَفْعَلُ	= لَنْ تَفْعَلَ	वह औ़रत हरगिज़ नहीं करेगी

यहाँ यह बात याद रखिए कि يَفْعَلُوْنَ और تَفْعَلُوْنَ पर क़ैंची और हथौड़ी का असर यकसाँ होता है जैसा कि नीचे दी गई पहली क़ुरआनी मिसाल में ज़ाहिर है।

فَإِنْ لَّمْ تَفْعَلُوْا وَلَنْ تَفْعَلُوْا	وَإِذْ قُلْتُمْ يٰمُوْسٰى لَنْ نَّصْبِرَ عَلٰى طَعَامٍ وَّاحِدٍ
पस अगर न कर सको और तुम हरगिज़ न कर सकोगे	और जब तुम लोगों ने कहा ऐ मूसा अलैस्सिलाम हम एक खाने पर सब्र हरगिज़ नहीं करेंगे

अब हम एक दुसरा तीन हुरूफ़ वाला सेहत-मंद फ़ेअ़ल लेते है: "يَسْمَعُ"

अरबी बोलचाल

(तसव्वुर कीजिए कि बुरी बात कहने के बारे में बात हो रही है)

هَلْ يَسْمَعُ؟	لَنْ يَّسْمَعَ
هَلْ يَسْمَعُوْنَ؟	لَنْ يَّسْمَعُوْا
هَلْ تَسْمَعُ؟	لَنْ أَسْمَعَ
هَلْ تَسْمَعُوْنَ؟	لَنْ نَّسْمَعَ

+ مُضَارِع	
لَنْ يَّسْمَعَ	वह हरगिज़ नहीं सुनेगा
لَنْ يَّسْمَعُوْا	वह सब हरगिज़ नहीं सुनेंगे
لَنْ تَسْمَعَ	आप हरगिज़ नहीं सुनेंगे
لَنْ أَسْمَعَ	मैं हरगिज़ नहीं सुनूँगा
لَنْ تَسْمَعُوْا	आप सब हरगिज़ नहीं सुनेंगे
لَنْ نَّسْمَعَ	हम सब हरगिज़ नहीं सुनेंगे
لَنْ تَسْمَعَ	वह हरगिज़ नहीं सुनेगी

www.understandquran.com

अब हम एक तीन ह़र्फ़ी कमज़ोर फ़ेअ़ल "يَقُوْلُ" लेते हैं:

अ़रबी बोलचाल

(तसव्वुर कीजिए कि बुरी बात कहने के बारे में बात हो रही है)

هَلْ يَقُوْلُ؟	لَنْ يَّقُوْلَ
هَلْ يَقُوْلُوْنَ؟	لَنْ يَّقُوْلُوْا
هَلْ تَقُوْلُ؟	لَنْ أَقُوْلَ
هَلْ تَقُوْلُوْنَ؟	لَنْ نَّقُوْلَ

لَنْ + فِعْل مُضَارِع	
لَنْ+يَقُوْلُ = لَنْ يَّقُوْلَ	वह हरगिज़ नहीं कहेगा
لَنْ+يَقُوْلُوْنَ= لَنْ يَّقُوْلُوْا	वह सब हरगिज़ नहीं कहेंगे
لَنْ+تَقُوْلُ = لَنْ تَقُوْلَ	आप हरगिज़ नहीं कहेंगे
لَنْ+ أَقُوْلُ = لَنْ أَقُوْلَ	मैं हरगिज़ नहीं कहूँगा
لَنْ+ تَقُوْلُوْنَ = لَنْ تَقُوْلُوْا	आप सब हरगिज़ नहीं कहेंगे
لَنْ+ نَقُوْلُ = لَنْ نَّقُوْلَ	हम सब हरगिज़ नहीं कहेंगे
لَنْ+تَقُوْلُ = لَنْ تَقُوْلَ	वह औ़रत हरगिज़ नहीं कहेगी

لَنْ،اَنْ की मिसालें कुरआने करीम से:

اَحَسِبَ النَّاسُ اَنْ يُّتْرَكُوْا اَنْ يَّقُوْلُوْا اٰمَنَّا وَهُمْ لَا يُفْتَنُوْنَ

क्या लोगों ने यह गुमान कर रखा है कि वह छोड़ दिए जाएंगे सिर्फ़ इस लिए कि वह कह दें हम ईमान लाए हैं और वह आज़माए नहीं जाएंगे

وَاَنَّا ظَنَنَّا اَنْ لَّنْ تَقُوْلَ الْاِنْسُ وَالْجِنُّ عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا

और हमने गुमान किया कि इंसान और जिन्नात अल्लाह के बारे में हरगिज़ झूट नहीं बोलेंगे

अब हम एक दूसरा तीन ह़र्फ़ी कमज़ोर फ़ेअ़ल लेते हैं "يَأْتِيْ"। (أَتٰى: वह आया, أَتٰى بِـ: वह लाया)

لَنْ + فِعْل مُضَارِع	
لَنْ+يَأْتِيْ = لَنْ يَّأْتِيَ	वह हरगिज़ नहीं आएगा
لَنْ+يَأْتُوْنَ = لَنْ يَّأْتُوْا	वह सब हरगिज़ नहीं आएंगे
لَنْ+تَأْتِيْ = لَنْ تَأْتِيَ	आप हरगिज़ नहीं आएंगे
لَنْ+ اٰتِيْ = لَنْ اٰتِيَ	मैं हरगिज़ नहीं आऊँगा
لَنْ+ تَأْتُوْنَ = لَنْ تَأْتُوْا	आप सब हरगिज़ नहीं आएंगे
لَنْ+ نَأْتِيْ = لَنْ نَّأْتِيَ	हम सब हरगिज़ नहीं आएंगे
لَنْ+تَأْتِيْ = لَنْ تَأْتِيَ	वह औ़रत हरगिज नहीं आएगी

أَنْ की मिसाल कुरआन से

هَلْ يَنْظُرُوْنَ اِلَّآ اَنْ تَاْتِيَهُمُ الْمَلٰٓئِكَةُ اَوْ يَاْتِيَ رَبُّكَ اَوْ يَاْتِيَ بَعْضُ اٰيٰتِ رَبِّكَ

क्या वो लोग इंतिज़ार करते हैं सिर्फ़ इसका कि आएँ उन के पास फ़रिश्ते या आ जाए उन के पास आप का रब या आप के रब की कुछ निशानीयाँ

www.understandquran.com

لن+مضارع मज़ीद फ़ीह अफ़्आल के साथ

इस सबक़ में हम मज़ीद फ़ीह के सेह़त-मंद अफ़्आल और कमज़ोर अफ़्आल के मुज़ारे के साथ “لَنْ” का इस्तिमाल सीखेंगे। यहाँ हम मज़ीद फ़ीह का सेह़त-मंद फ़ेअ़ल “يُسْلِمُ” लेते हैं:

अ़रबी बोलचाल

هَلْ يُسْلِمُ؟	لَنْ يُّسْلِمَ
هَلْ يُسْلِمُوْنَ؟	لَنْ يُّسْلِمُوْا
هَلْ تُسْلِمُ؟	لَنْ أُسْلِمَ
هَلْ تُسْلِمُوْنَ؟	لَنْ نُّسْلِمَ

فِعل مُضَارِع + لَنْ		
لَنْ+يُسْلِمُ	= لَنْ يُّسْلِمَ	वह हरगिज़ हुक्म नहीं मानेगा
لَنْ+يُسْلِمُوْنَ	= لَنْ يُّسْلِمُوْا	वह सब हरगिज़ हुक्म नहीं मानेंगे
لَنْ+تُسْلِمُ	= لَنْ تُسْلِمَ	आप हरगिज़ हुक्म नहीं मानेंगे
لَنْ+أُسْلِمُ	= لَنْ أُسْلِمَ	मैं हरगिज़ हुक्म नहीं मानूँगा
لَنْ+تُسْلِمُوْنَ	= لَنْ تُسْلِمُوْا	आप सब हरगिज़ हुक्म नहीं मानेंगे
لَنْ+نُسْلِمُ	= لَنْ نُّسْلِمَ	हम हरगिज़ हुक्म नहीं मानेंगे
لَنْ+تُسْلِمُ	= لَنْ تُسْلِمَ	वह (औ़रत) हरगिज़ हुक्म नहीं मानेगी

لَنْ और حَتّٰى के लिए कुरआनी मिसालें:

قَالَ لَنْ أُرْسِلَهُ مَعَكُمْ
उस ने कहा मैं हरगिज़ तुम्हारे साथ न भेजूँगा उसे

لَنْ تَنَالُوا الْبِرَّ حَتّٰى تُنْفِقُوْا مِمَّا تُحِبُّوْنَ
तुम हरगिज़ भलाई न पाओगे उस वक़्त तक जब तक तुम ख़र्च न करो अपनी पसंदीदा चीज़

अब हम एक मज़ीद फ़ीह का एक और सेह़त-मंद फ़ेअ़ल “يَخْتَلِفُ” को लेंगे।

अ़रबी बोलचाल

هَلْ يَخْتَلِفُ؟	لَنْ يَّخْتَلِفَ
هَلْ يَخْتَلِفُوْنَ؟	لَنْ يَّخْتَلِفُوْا
هَلْ تَخْتَلِفُ؟	لَنْ أَخْتَلِفَ
هَلْ تَخْتَلِفُوْنَ؟	لَنْ نَّخْتَلِفَ

فِعل مُضَارِع + لَنْ		
لَنْ+يَخْتَلِفُ	= لَنْ يَّخْتَلِفَ	वह हरगिज़ इख़्तिलाफ़ नहीं करेगा
لَنْ+يَخْتَلِفُوْنَ	= لَنْ يَّخْتَلِفُوْا	वह सब हरगिज़ इख़्तिलाफ़ नहीं करेंगे
لَنْ+تَخْتَلِفُ	= لَنْ تَخْتَلِفَ	आप हरगिज़ इख़्तिलाफ़ नहीं करेंगे
لَنْ+أَخْتَلِفُ	= لَنْ أَخْتَلِفَ	मैं हरगिज़ इख़्तिलाफ़ नहीं करूँगा
لَنْ+تَخْتَلِفُوْنَ	= لَنْ تَخْتَلِفُوْا	आप सब हरगिज़ इख़्तिलाफ नहीं करेंगे
لَنْ+نَخْتَلِفُ	= لَنْ نَّخْتَلِفَ	हम सब हरगिज़ इख़्तिलाफ़ नहीं करेंगे
لَنْ+تَخْتَلِفُ	= لَنْ تَخْتَلِفَ	वो औरत हरगिज इख़्तिलाफ़ नहीं करेगी

www.understandquran.com

अब हम एक मज़ीद फ़ीह का एक कमज़ोर फ़ेअ़ल "يُؤْتِيْ" को ले कर मशक़ करते हैं:

अ़रबी बोलचाल

هَلْ يُؤْتِيْ؟	لَنْ يُّؤْتِيَ
هَلْ يُؤْتُوْنَ؟	لَنْ يُّؤْتُوْا
هَلْ تُؤْتِيْ؟	لَنْ أُوْتِيَ
هَلْ تُؤْتُوْنَ؟	لَنْ نُّؤْتِيَ

اَنْ की मिसालें कुरआने करीम से:

مَا كَانَ لِبَشَرٍ اَن يُّؤْتِيَهُ اللهُ الْكِتَابَ وَالْحُكْمَ وَالنُّبُوَّةَ ثُمَّ يَقُوْلَ لِلنَّاسِ كُوْنُوْا عِبَادًا لِّيْ مِنْ دُوْنِ اللهِ

किसी ऐसे इंसान के लिए मुनासिब नहीं जिसे अल्लाह तआ़ला किताब व हिकमत और नबुव्वत दे फिर वह लोगों से कहे कि तुम अल्लाह तआ़ला को छोड कर मेरे बंदे बन जाओ

لَنْ + فِعْل مُضَارِع	
لَنْ+يُؤْتِيْ = لَنْ يُّؤْتِيَ	वह हरगिज़ नहीं देगा
لَنْ+يُؤْتُوْنَ = لَنْ يُّؤْتُوْا	वह सब हरगिज़ नहीं देंगे
لَنْ+تُؤْتِيْ = لَنْ تُؤْتِيَ	आप हरगिज़ नहीं देंगे
لَنْ+أُوْتِيْ = لَنْ أُوْتِيَ	मैं हरगिज़ नहीं दूँगा
لَنْ+تُؤْتُوْنَ = لَنْ تُؤْتُوْا	आप सब हरगिज़ नहीं देंगे
لَنْ+نُؤْتِيْ = لَنْ نُّؤْتِيَ	हम सब हरगिज़ नहीं देंगे
لَنْ+تُؤْتِيْ = لَنْ تُؤْتِيَ	वह औ़रत हरगिज़ नहीं देगी

फ़ेअ़ल मुज़ारे में होने वाली तबदीलीयों से मुतअ़ल्लिक़ जो कुछ हम ने गुज़िश्ता अस्बाक़ में पढ़ा है, नीचे उसका खुलासा दिया गया है।

فَعْل مُضَارِع (आ़म ह़ालत)	لَمْ، لَمَّا،... شرط: إِنْ، مَنْ، مَا، لِـ، فَلْـ، وَلْـ	لَنْ، أَنْ، أَلَّا، لِـ	لَ – نَّ (ज़रूर ज़रूर)
يَفْعَلُ	يَفْعَلْ	يَفْعَلَ	لَيَفْعَلَنَّ
يَفْعَلُوْنَ	يَفْعَلُوْا	يَفْعَلُوْا	لَيَفْعَلُنَّ
تَفْعَلُ	تَفْعَلْ	تَفْعَلَ	لَتَفْعَلَنَّ
أَفْعَلُ	أَفْعَلْ	أَفْعَلَ	لَأَفْعَلَنَّ
تَفْعَلُوْنَ	تَفْعَلُوْا	تَفْعَلُوْا	لَتَفْعَلُنَّ
نَفْعَلُ	نَفْعَلْ	نَفْعَلَ	لَنَفْعَلَنَّ
تَفْعَلُ	تَفْعَلْ	تَفْعَلَ	لَتَفْعَلَنَّ

www.understandquran.com

15c जुमला इस्मिाया (मुज़क्कर)

अ़रबी ग्रामर को दो अहम हिस्सों में तक़सीम किया जाता है: सर्फ़ "صرف" और नहव "نحو"। इन की आसान सी तारीफ़ कुछ इस तरह से होगी:

- **सर्फ़** "صرف" हुरूफ़ से लफ़्ज़ कैसे बनाया जाता है (आम तौर पर तीन हुरूफ़ से एक लफ़्ज़ बनता) है और
- **नहव** "نحو" जोड़ियाँ और जुमले बनाने के लिए अल्फ़ाज़ कैसे जोड़े जाते हैं।

इस सबक़ में हम एक सादा सा जुमला बनाना सीखेंगे जो इस्म से शुरूअ़ होता हो, ऐसे जुमले को जुमला इस्मिाया (جمله اسميه) कहा जाता है। मिसाल के तौर पर:

اَلْبَيْتُ	كَبِيْرٌ
वह (ख़ास घर)	बड़ा है।
• जुमले में यह पहला "इस्म" है • जिस घर के बारे में बात हो रही है उसे आप जानते हैं, इसी लिए "اَلْبَيْتُ" इस्तिमाल हुआ है।	• यह लफ़्ज़ ख़बर दे रहा है कि घर बड़ा है। • इस लिए इस को "خبر" कहते हैं। • इस के शुरूअ़ में "اَلْ" नहीं होता है।

अ़रबी ज़बान में इस्म की असल हालत पेश (ـُ) या दो पेश (ـٌ) के साथ होती है, गोया कि वह काम करने के लिए हमेशा तैयार रहता है।

जैसे: اَللّٰهُ، خَالِدٌ، اَلْبَيْتُ वग़ैरा।

- इस ह़ालत को रफ़ा "رفع" की ह़ालत कहते हैं। TPI के ज़रिए हम इस का इशारा यूँ कर सकते हैं कि दाएं हाथ की उंगली से ऊपर की तरफ़ इशारा करें।

- जुमला इस्मिाया (جمله اسميه) में इस्म और ख़बर दोनों की ह़ालत रफ़ा "رفع" की ह़ालत होती है।

नीचे दिए गए जुमलों की मदद से जुमला इस्मिाया (جمله اسميه) का तर्जमा करना सीखिए:

اَللّٰهُ غَفُوْرٌ	अल्लाह बख़्शने वाला है
اَلْبَيْتُ كَبِيرٌ	घर बड़ा है
اَلْمُسْلِمُ صَادِقٌ	मुस्लिम सच्चा है
اَلْمُسْلِمُوْنَ صَادِقُوْنَ	मुसलमान सच्चे हैं

اَلْمُؤْمِنُ صَالِحٌ	ईमान वाला नेक है
اَلْمُؤْمِنُوْنَ صَالِحُونَ	ईमान वाले नेक हैं
اَلْمُنَافِقُ فَاسِقٌ	मुनाफ़िक़ फ़ासिक़ है
اَلْمُنَافِقُوْنَ فَاسِقُوْنَ	मुनाफ़िक़ीन फ़ासिक़ हैं

नीचे दिए गए जुमलों की मदद से जमा बनाना सीखिए:

اَلْمُسْلِمُ صَادِقٌ	اَلْمُسْلِمُوْنَ صَادِقُوْنَ
اَلْمُؤْمِنُ صَالِحٌ	اَلْمُؤْمِنُوْنَ صَالِحُونَ
اَلْمُنَافِقُ فَاسِقٌ	اَلْمُنَافِقُوْنَ فَاسِقُوْنَ

मख़सूस नाम से पहले اَلْ लगाने की ज़रूरत नहीं, क्योंकि नाम ख़ुद बताता है कि हम किसी मख़सूस शख़्स के बारे में बात कर रहे हैं, जैसे:

مُحَمَّدٌ رَسُوْلٌ	मोह़म्मद ﷺ रसूल हैं
هُوْدٌ نَبِيٌّ	हूद अ़लैहिस्सलाम नबी हैं
زَيْدٌ صَغِيْرٌ	ज़ैद छोटा है
سَعْدٌ كَبِيْرٌ	साद बड़ा है

ग्रामर बराए सफ़्हा 15d — जुमला इस्मिया (मोअन्नस)

www.understandquran.com

इस सबक़ में हम मोअन्नस अल्फ़ाज़ पर मुश्तमिल जुमला इस्मिया (جمله اسميه) बनाना सीखेंगे। यहाँ हम चंद मोअन्नस अल्फ़ाज़ की मिसालें लेते हैं:

اَلْمَدْرَسَةُ كَبِيْرَةٌ	मदरसा बड़ा है
اَلْمُسْلِمَةُ صَادِقَةٌ	मुस्लिम औरत सच्ची है
اَلْمُسْلِمَاتُ صَادِقَاتٌ	मुस्लिम औ़रतें सच्ची हैं

यहाँ इस बात को ज़ेहन में रखिए कि अ़रबी ज़बान में मदरसा"مَدْرَسَة" मोअन्नस लफ़्ज़ है; क्योंकि इस के आख़िर में गोल ता (ة) है।

नीचे दिए गए जुमलों की मदद से जुमला इस्मिाया (جمله اسميه) का तर्जमा करना सीखिए:

اَلْمُؤْمِنَةُ صَالِحَةٌ	मोमिन औ़रत नेक है
اَلْمُؤْمِنَاتُ صَالِحَاتٌ	मोमिन औ़रतें नेक हैं
اَلْمُنَافِقَةُ فَاسِقَةٌ	मुनाफ़िक़ औ़रत फ़ासिक़ है
اَلْمُنَافِقَاتُ فَاسِقَاتٌ	मुनाफ़िक़ औ़रतें फ़ासिक़ हैं

नीचे के जुमलों की मदद से आप मुज़क्कर से मोअन्नस बनाना सीख सकते हैं।

اَلْمُسْلِمُ صَادِقٌ	اَلْمُسْلِمَةُ صَادِقَةٌ
اَلْمُؤْمِنُ صَالِحٌ	اَلْمُؤْمِنَةُ صَالِحَةٌ
اَلْمُنَافِقُ فَاسِقٌ	اَلْمُنَافِقَةُ فَاسِقَةٌ

इस से पहले ग्रामर के एक सबक़ (**13c**) में आप यह बात अच्छी तरह़ जान चुके हैं कि जमा तकसीर वाहि़द मोअन्नस के हुक्म में होती है। मिसाल के तौर पर بَيْت، بُيُوْت، مَسْجِد، مَسَاجِد، جَبَل، جِبَال वग़ैरह।

नीचे के जुमलों में अ़रबी अल्फ़ाज़ और उनका तर्जुमा देखिए:

اَلْمَسَاجِدُ قَدِيْمَةٌ	मस्जिदें पुरानी हैं
اَلْبُيُوْتُ جَدِيْدَةٌ	घर नए हैं
اَلْجِبَالُ كَبِيْرَةٌ	पहाड़ बड़े हैं

नीचे के जुमलों की मदद से आप जुमलों को वाहि़द से जमा की शक्ल में बनाना सीख सकते हैं:

اَلْمَسْجِدُ قَدِيْمٌ	اَلْمَسَاجِدُ قَدِيْمَةٌ
اَلْبَيْتُ جَدِيْدٌ	اَلْبُيُوْتُ جَدِيْدَةٌ
اَلْجَبَلُ كَبِيْرٌ	اَلْجِبَالُ كَبِيْرَةٌ

www.understandquran.com

www.understandquran.com

वर्कबुक

www.understandquran.com

कुरआन सफ़्हा 11a तआ़रूफ़, अन-पढ़ और पढ़े लिखों का ह़ाल
(अल-बक़रा:77:79)

सवाल-1: इशारे **(pointer)** से मुतअ़ल्लिक़ कोई पैग़ाम, दुआ़, अ़मली मन्सूबा, (इन्फ़िरादी या इज्तिमाई) मुख़्तसर तौर पर लिखिए।
जवाब:

सवाल-2: बनीइसराईल अपने बारे में किस तरह़ के ख़्यालात रखते थे?
जवाब:

सवाल-3: फ़ेक़रों **(Phrases)** के मआ़नी लिखिए?

जवाब: مَا يُسِرُّوْنَ .....

يَكْتُبُوْنَ الْكِتٰبَ .....

مِّمَّا يَكْسِبُوْنَ .....

सवाल-4: नीचे दिए गए अस्मा व अफ़्आ़ल के टेबल को मुकम्मल कीजिए:

मआ़नी	काम का नाम	اسم مفعول	اسم فاعل	فعل امر	فعل مضارع	فعل ماضٍ	माद्दा व कोड	तकरार
						عَلِمَ	ع ل م / سـ	518
						كَتَبَ	ك ت ب / ذ	57
						كَسَبَ	ك س ب / ضـ	62
						ظَنَّ	ظ ن ن / ظذ	68
						قَالَ	ق و ل / قا	1719
						قَلَّ	ق ل ل / ضـلـ	72
						أَسَرَّ	س ر ر / أسـ+	20
						أَعْلَنَ	ع ل ن / أسـ+	12
						اِشْتَرٰى	ش ر ي / اِخـ+	21

वाह़िद	जमा	मआ़नी
أُمِّيّ		
كِتَاب		
	أَمَانِيّ	
أَيْدِي		
ثَمَن		

www.understandquran.com

आग सिर्फ़ चंद दिन (अल-बक़राः80)

सवाल-1: इशारे **(pointer)** से मुतअ़ल्लिक़ कोई पैग़ाम, दुआ़, अ़मली मन्सूबा, (इन्फ़िरादी या इज्तिमाई) मुख़्तसर तौर पर लिखिए।
जवाबः

सवाल-2: इमाम मालिक बन अनस रह़मतुल्लाहि अ़लैह के क़िस्से से हमें क्या सबक़ मिलता है?
जवाबः

सवाल-3: फ़ेक़रों **(Phrases)** के मआ़नी लिखिए?

जवाबः لَنْ تَمَسَّنَا النَّارُ.....

اِلَّآ اَيَّامًا مَّعْدُوْدَةً.....

فَلَنْ يُّخْلِفَ اللّٰهُ عَهْدَهٗٓ .....

सवाल-4: नीचे दिए गए अस्मा व अफ़्आ़ल के टेबल को मुकम्मल कीजिएः

मआ़नी	काम का नाम	اسم مفعول	اسم فاعل	فعل امر	فعل مضارع	فعل ماضٍ	माद्दा व कोड	तकरार
						عَهِدَ	ع ه د / سـ	35
						عَلِمَ	ع ل م / سـ	518
						قَالَ	ق و ل / قا	1719
						مَسَّ	م س س / مسـ	58
						عَدَّ	ع د د / ظن	17
						اِتَّخَذَ	أ خ ذ / اِخـ+	128
						أَخْلَفَ	خ ل ف	15

मआ़नी	जमा	वाह़िद
	أَيَّام	
	عُهُوْد	

www.understandquran.com

क़ायदा आग और जन्नत का (अल-बक़राः81-82)

सवाल-1: इशारे **(pointer)** से मुतअ़ल्लिक़ कोई पैग़ाम, दुआ़, अ़मली मन्सूबा, (इन्फ़िरादी या इज्तिमाई) मुख़्तसर तौर पर लिखिए।
जवाबः

सवाल-2: बुरे काम करने वाला बुराई का अंजाम जानते हुए भी क्यों बुराई करता है?
जवाबः

सवाल-3: फ़ेक़रों **(Phrases)** के मआ़नी लिखिए?

जवाबः مَنْ كَسَبَ سَيِّئَةً .....

وَّاَحَاطَتْ بِهٖ خَطِيْٓـَٔتُهٗ .....

सवाल-4: नीचे दिए गए अस्मा व अफ़्आ़ल के टेबल को मुकम्मल कीजिएः

तकरार	माद्दा व कोड	फ़अ़ल माज़ी	फ़अ़ल मुज़ारे	फ़अ़ल अम्र	इस्म फ़ाअ़िल	इस्म मफ़्अ़ूल	काम का नाम	मआ़नी
62	ك س ب / ض	كَسَبَ						
319	ع م ل / س	عَمِلَ						
83	خ ل د / ن	خَلَدَ						
28	ح و ط / أسـ+	أَحَاطَ						
818	أ م ن / أسـ+	اٰمَنَ						

वाहिद	जमा	मआ़नी
	سَيِّئَات	
	خَطِيْئَات	
صَاحِب		
جَنَّة		

www.understandquran.com

कुरआन सफ़्हा 11d मीसाक़े बनीइसराईल (अल–बक़रा:83)

सवाल-1: इशारे **(pointer)** से मुतअ़ल्लिक़ कोई पैग़ाम, दुआ़, अ़मली मन्सूबा, (इन्फ़िरादी या इज्तिमाई) मुख़्तसर तौर पर लिखिए।
जवाबः

सवाल-2: अल्लाह तआ़ला ने बनीइसराईल से आठ चीज़ों का अ़ह्द लिया था, वह आठ चीज़ें कौन सी हैं? लिखिए।
जवाबः

सवाल-3: फ़ेक़रों **(Phrases)** के मआ़नी लिखिए?
जवाबः وَّذِى الْقُرْبٰى وَالْيَتٰمٰى وَالْمَسٰكِيْنِ ....

وَقُوْلُوْا لِلنَّاسِ حُسْنًا..

وَاَنْتُمْ مُّعْرِضُوْنَ ....

सवाल-4: नीचे दिए गए अस्मा व अफ़्आ़ल के टेबल को मुकम्मल कीजिए:

मआ़नी	काम का नाम	اسم مفعول	اسم فاعل	فعل امر	فعل مضارع	فعل ماضِ	मादा व कोड	तकरार
						عَبَدَ	ع ب د / ذ	143
						حَسُنَ	ح س ن / ک	66
						أَخَذَ	أ خ ذ / ذ	135
						قَالَ	ق و ل / قا	1719
						قَلَّ	ق ل ل / ضل	72
						أَحْسَنَ	ح س ن / أسـ+	74
						أَقَامَ	ق و م / أسـ+	71
						اٰتٰى	أ ت ي / أسـ+	274
						تَوَلّٰى	و ل ي / تد+	78
						أَعْرَضَ	ع ر ض / أسـ+	53

मआ़नी	जमा	वाहिद
		وَالِد
		يَتِيْم
		مِسْكِيْن
		صَلَاة

कुरआन सफ़्हा 12a — मीसाके़ ख़ुन (अल–बक़रा:84)

www.understandquran.com

सवाल-1: इशारे **(pointer)** से मुतअ़ल्लिक़ कोई पैग़ाम, दुआ़, अ़मली मन्सूबा, (इन्फ़िरादी या इज्तिमाई) मुख़्तसर तौर पर लिखिए।
जवाबः

सवाल-2: इस सबक़ में पढ़ाई गई आयात की रोशनी में बताईए कि अल्लाह तआ़ला ने बनीइसराईल से क्या वादा या अ़ह्द लिया था?
जवाबः

सवाल-3: फ़ेक़रों **(Phrases)** के मआ़नी लिखिए?
जवाबः وَلَا تُخْرِجُوْنَ اَنْفُسَكُمْ مِّنْ دِيَارِكُمْ..

ثُمَّ اَقْرَرْتُمْ..

सवाल-4: नीचे दिए गए अस्मा व अफ़्आ़ल के टेबल को मुकम्मल कीजिएः

मआ़नी	काम का नाम	اسم مفعول	اسم فاعل	فعل امر	فعل مضارع	فعل ماضِ	माद्दा व कोड	तकरार
						أَخَذَ	أ خ ذ / ذ	135
						سَفَكَ	س ف ك / ضِ	2
						شَهِدَ	ش ه د / سَ	90
						أَخْرَجَ	خ ر ج / أسـ+	112
						أَقَرَّ	ق ر ر / أسـ+	4

मआ़नी	जमा	वाहिद
	مَوَاثِيْق	
	دِمَاء	
	أَنْفُس	
	دِيَار	

www.understandquran.com

कुरआन सफ़्हा 12b — क़त्ल व इख़्राज (अल–बक़रा:85)

सवाल-1: इशारे **(pointer)** से मुतअ़ल्लिक़ कोई पैग़ाम, दुआ़, अ़मली मन्सूबा, (इन्फ़िरादी या इज्तिमाई) मुख़्तसर तौर पर लिखिए।
जवाबः

सवाल-2: इस सबक़ में बनीइसराईल की किस ख़राब आ़दत को ब्यान किया गया है, और इस में हमारे लिए क्या सबक़ है?
जवाबः

सवाल-3: फ़ेक़रों **(Phrases)** के मआ़नी लिखिए?

जवाबः تَظٰهَرُوْنَ عَلَيْهِمْ بِالْاِثْمِ وَالْعُدْوَانِ ....

يَّاْتُوْكُمْ اُسٰرٰى تُفٰدُوْهُمْ وَاِنْ ....

وَهُوَ مُحَرَّمٌ عَلَيْكُمْ اِخْرَاجُهُمْ..

सवाल-4: नीचे दिए गए अस्मा व अफ़्आ़ल के टेबल को मुकम्मल कीजिए:

मआ़नी	काम का नाम	اسم مفعول	اسم فاعل	فعل امر	فعل مضارع	فعل ماضٍ	माद्दा व कोड	तकरार
						قَتَلَ	ق ت ل / ذ	93
						عَدَا	ع د و / دع	20
						أَتٰى	أ ت ي / هد	275
						أَخْرَجَ	خ ر ج / أس+	112
						تَظَاهَرَ	ظ ه ر / تدا+	3
						فَادٰى	ف د ي / حا+	1
						حَرَّمَ	ح ر م / عل+	44

मआ़नी	जमा	वाहिद
	أَنْفُس	
	فُرَقَاء	
	دِيَار	
		إِثْم
		أَسِير

www.understandquran.com

कुरआन सफ़्हा 12c बाज़ किताब पर ईमान? (अल-बक़राः85-86)

सवाल-1: इशारे **(pointer)** से मुतअ़ल्लिक़ कोई पैग़ाम, दुआ़, अ़मली मन्सूबा, (इन्फ़िरादी या इज्तिमाई) मुख़्तसर तौर पर लिखिए।
जवाबः

सवाल-2: बनीइसराईल ने किताब के बाज़ हिस्सों पर अ़मल क्यों नहीं किया?
जवाबः

सवाल-3: फ़ेक़रों **(Phrases)** के मआ़नी लिखिए?
जवाबः اِلَّا خِزْیٌ فِی الْحَیٰوةِ الدُّنْیَا .....
فَلَا یُخَفَّفُ عَنْهُمُ الْعَذَابُ .....

सवाल-4: नीचे दिए गए अस्मा व अफ़्आ़ल के टेबल को मुकम्मल कीजिएः

मआ़नी	काम का नाम	اسم مفعول	اسم فاعل	فعل امر	فعل مضارع	فعل ماضٍ	माद्दा व कोड	तकरार
						كَفَرَ	ك ف ر / ذ	465
						فَعَلَ	ف ع ل / ف	105
						غَفَلَ	غ ف ل / ذ	34
						عَمِلَ	ع م ل / سـ	319
						نَصَرَ	ن ص ر / ذ	94
						جَزٰى	ج ز ي / هد	116
						رَدَّ	ر د د / ظن	44
						اٰمَنَ	أ م ن / أسـ+	818
						اِشْتَرٰى	ش ر ي / إخ+	21
						خَفَّفَ	خ ف ف / عل+	9

मआ़नी	जमा	वाहिद
	أَيَّام	
	مَخْزَاة	
	أَشَدّ ↑	

www.understandquran.com

कुरआन सफ़्हा 12d मूसा व ईसा عليهما السلام और रसूलों से सुलूक? (अल–बक़रा:87-88)

सवाल-1: इशारे (pointer) से मुतअ़ल्लिक़ कोई पैग़ाम, दुआ़, अ़मली मन्सूबा, (इन्फ़िरादी या इज्तिमाई) मुख़्तसर तौर पर लिखिए।
जवाब:

सवाल-2: ह़ज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम के बाद ह़ज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम का ख़ास तौर पर ज़िक्र क्यों किया गया?
जवाब:

सवाल-3: फ़ेक़रों (Phrases) के मआ़नी लिखिए?
जवाब: وَقَفَّيْنَا مِنْۢ بَعْدِهٖ بِالرُّسُلِ ....
لَا تَهْوٰٓى اَنْفُسُكُمُ..
وَقَالُوْا قُلُوْبُنَا غُلْفٌ ....

सवाल-4: नीचे दिए गए अस्मा व अफ़्आ़ल के टेबल को मुकम्मल कीजिए:

मआ़नी	काम का नाम	اسم مفعول	اسم فاعل	فعل امر	فعل مضارع	فعل ماضٍ	माद्दा व कोड	तकरार
						قَتَلَ	ق ت ل ذ	93
						لَعَنَ	ل ع ن ف	27
						كَفَرَ	ك ف ر ذ	465
						جَاءَ	ج ي أ زا	277
						هَوِيَ	ه و ي رض	13
						قَالَ	ق و ل قا	1719
						قَلَّ	ق ل ل ضل	72
						اٰتٰى	أ ت ي أس+	274
						قَفّٰى	ق ف و عل+	4
						أَيَّدَ	أ ي د عل+	9
						اِسْتَكْبَرَ	ك ب ر اِس+	48
						كَذَّبَ	ك ذ ب عل+	198
						اٰمَنَ	أ م ن أس+	818

मआ़नी	जमा	वाहिद
	كُتُب	
	رُسُل	
	بَيِّنَات	
		نَفْس
	قُلُوْب	
	غُلْف	

www.understandquran.com

कुरआन सफ़्हा 13a किताब आने पर इंकार (अल-बक़राः89)

सवाल-1: इशारे **(pointer)** से मुतअ़ल्लिक़ कोई पैग़ाम, दुआ़, अ़मली मन्सूबा, (इन्फ़िरादी या इज्तिमाई) मुख़्तसर तौर पर लिखिए।
जवाबः

सवाल-2: जब कभी मदीना में मौजूद यहूदीयों की मुशरिकीन से लड़ाई होती तो वो क्या दुआ़ माँगा करते थे?
जवाबः

सवाल-3: फ़ेक़रों **(Phrases)** के मआ़नी लिखिए?

जवाबः يَسْتَفْتِحُوْنَ عَلَى الَّذِيْنَ كَفَرُوْا .....

مَّا عَرَفُوْا كَفَرُوْا بِهٖ.....

सवाल-4: नीचे दिए गए अस्मा व अफ़्आ़ल के टेबल को मुकम्मल कीजिएः

मआ़नी	काम का नाम	اسم مفعول	اسم فاعل	فعل امر	فعل مضارع	فعل ماضٍ	मादा व कोड	तकरार
						كَفَرَ	ك ف ر ذ	465
						عَرَفَ	ع ر ف ضـ	59
						جَاءَ	ج ي أ زا	277
						كَانَ	ك و ن قا	1358
						صَدَّقَ	ص د ق عل+	31
						اِسْتَفْتَحَ	ف ت ح اِس+	3

मआ़नी	जमा	वाहिद
	كُتُب	

www.understandquran.com

कुरआन सफ़्हा 13b बुरा सौदा कुफ़्र का (अल-बक़राः90)

सवाल-1: इशारे **(pointer)** से मुतअ़ल्लिक़ कोई पैग़ाम, दुआ़, अ़मली मन्सूबा, (इन्फ़िरादी या इज्तिमाई) मुख़्तसर तौर पर लिखिए।
जवाबः

सवाल-1: जिन लोगों ने कुफ़्र किया उन्होंने अपनी ज़िंदगियों को कुफ़्र के ह़वाले क्यों कर दिया?
जवाबः

सवाल-3: फ़ेक़रों **(Phrases)** के मआ़नी लिखिए?

जवाबः بِئْسَمَا اشْتَرَوْا بِهٖٓ اَنْفُسَهُمْ.....

بَغْيًا اَنْ يُّنَزِّلَ اللّٰهُ .....

فَبَآءُوْ بِغَضَبٍ عَلٰى غَضَبٍ.....

وَلِلْكٰفِرِيْنَ عَذَابٌ مُّهِيْنٌ .....

सवाल-4: नीचे दिए गए अस्मा व अफ़्आ़ल के टेबल को मुकम्मल कीजिएः

मआ़नी	काम का नाम	اسم مفعول	اسم فاعل	فعل امر	فعل مضارع	فعل ماضٍ	माद्दा व कोड	तकरार
						كَفَرَ	ك ف ر / ذ	465
						غَضِبَ	غ ض ب / سـ	23
						بَغٰى	ب غ ي / هد	22
						شَاءَ	ش ي أ / خا	236
						بَاءَ	ب و أ / قا	6
						اِشْتَرٰى	ش ر ي / اِخ+	21
						أَنْزَلَ	ن ز ل / أسـ+	190
						نَزَّلَ	ن ز ل / عل+	79
						أَهَانَ	ه و ن / أسـ+	16

मआ़नी	जमा	वाह़िद
		نَفْس
		فَضْل

www.understandquran.com

कुरआन सफ़्हा 13c ईमान लाओ (अल–बक़रा:91-92)

सवाल-1: इशारे **(pointer)** से मुतअ़ल्लिक़ कोई पैग़ाम, दुआ़, अ़मली मन्सूबा, (इन्फ़िरादी या इज्तिमाई) मुख़्तसर तौर पर लिखिए।
जवाबः

सवाल-2: तौरात पर सच्चा ईमान रखने का दावा करने वाले बनीइसराईल को क़ुरआन पर भी क्यों ईमान लाना चाहिए था?
जवाबः

सवाल-3: फ़ेक़रों **(Phrases)** के मआ़नी लिखिए?
जवाबः وَيَكْفُرُوْنَ بِمَا وَرَآءَهٗ ....
تَقْتُلُوْنَ اَنْبِيَآءَ اللّٰهِ فَلِمَ ....

सवाल-4: नीचे दिए गए अस्मा व अफ़्आ़ल के टेबल को मुकम्मल कीजिए:

मआ़नी	काम का नाम	اسم مفعول	اسم فاعل	فعل امر	فعل مضارع	فعل ماضٍ	माद्दा व कोड	तकरार
						كَفَرَ	ك ف ر ذ	465
						قَتَلَ	ق ت ل ذ	93
						ظَلَمَ	ظ ل م ض	266
						قَالَ	ق و ل قا	1719
						حَقَّ	ح ق ق ضل	270
						كَانَ	ك و ن قا	1358
						جَاءَ	ج ي أ زا	277
						اٰمَنَ	أ م ن أس+	818
						أَنْزَلَ	ن ز ل أس+	190
						صَدَّقَ	ص د ق عل+	31
						اِتَّخَذَ	أ خ ذ إخ+	128

मआ़नी	जमा	वाहिद
		نَبِيّ
		بَيِّنَة
		عِجْل

www.understandquran.com

मिसाक़, तूर उठा कर (अल-बक़राः93)

सवाल-1: इशारे (pointer) से मुतअ़ल्लिक़ कोई पैग़ाम, दुआ़, अ़मली मन्सूबा, (इन्फ़िरादी या इज्तिमाई) मुख़्तसर तौर पर लिखिए।
जवाबः

सवाल-2: ''जो कुछ हम ने तुम को दिया है उसे मज़बूती से पकड़ो'' इस जुमले से क्या मूराद है?
जवाबः

सवाल-3: फ़ेक़रों (Phrases) के मआ़नी लिखिए?

जवाबः وَرَفَعْنَا فَوْقَكُمُ الطُّوْرَ.....

خُذُوْا مَآ اٰتَيْنٰكُمْ بِقُوَّةٍ وَّاسْمَعُوْا.....

قُلُوْبِهِمُ الْعِجْلَ وَاُشْرِبُوْا فِيْ .....

सवाल-4: नीचे दिए गए अस्मा व अफ़्आ़ल के टेबल को मुकम्मल कीजिएः

तकरार	माद्दा व कोड	फ़अ़ल माज़ी	फ़अ़ल मुज़ारे	फ़अ़ल अम्र	इस्म फ़ाअ़िल	इस्म मफ़्अ़ूल	काम का नाम	मआ़नी
135	أ خ ذ / ذ	أَخَذَ						
28	ر ف ع / ف	رَفَعَ						
147	س م ع / سـ	سَمِعَ						
465	ك ف ر / ذ	كَفَرَ						
231	أ م ر / ذ	أَمَرَ						
40	ق و ى / رضـ	قَوِيَ						
1719	ق و ل / قا	قَالَ						
32	ع ص ي / هد	عَصٰى						
274	أ ت ي / أسـ+	اٰتٰى						
1	ش ر ب / أسـ+	أَشْرَبَ						
818	أ م ن / أسـ+	اٰمَنَ						

वाहिद	जमा	मआ़नी
	مَوَاثِيْق	
	قُلُوْب	
	عِجْل	

www.understandquran.com

कुरआन सफ़्हा 14a आख़िरत सिर्फ़ तुम्हारी (अल-बक़रा:94-95)

सवाल-1: इशारे **(pointer)** से मुतअ़ल्लिक़ कोई पैग़ाम, दुआ़, अ़मली मन्सूबा, (इन्फ़िरादी या इज्तिमाई) मुख़्तसर तौर पर लिखिए।
जवाब:

सवाल-2: अल्लाह तआ़ला ने बनीइसराईल को क्या चैलेंज किया और क्यों किया?
जवाब:

सवाल-3: फ़ेक़रों **(Phrases)** के मआ़नी लिखिए?

जवाब: خَالِصَةً مِّنْ دُوْنِ النَّاسِ .....

فَتَمَنَّوُا الْمَوْتَ .....

وَلَنْ يَّتَمَنَّوْهُ اَبَدًا .....

قَدَّمَتْ اَيْدِيْهِمْ .....

सवाल-4: नीचे दिए गए अस्मा व अफ़्आ़ल के टेबल को मुकम्मल कीजिए:

तकरार	माद्दा व कोड	फ़ेल माज़ी	फ़ेल मुज़ारे	फ़ेल अम्र	इस्म फ़ाइल	इस्म मफ़ऊल	काम का नाम	मआ़नी
8	خ ل ص / ذ	خَلَصَ						
90	ص د ق / ذ	صَدَقَ						
266	ظ ل م / ضـ	ظَلَمَ						
1719	ق و ل / قا	قَالَ						
1358	ك و ن / قا	كَانَ						
115	م و ت / قا	مَاتَ						
9	م ن ي / تد+	تَمَنّٰى						
27	ق د م / عل+	قَدَّمَ						

वाहिद	जमा	मआ़नी
دِيَار		
أَمْوَات		
أَيْدِي		

www.understandquran.com

कुरआन सफ़्हा 14b ज़िंदगी भी प्यारी (अल-बक़रा:96)

सवाल-1: इशारे **(pointer)** से मुतअ़ल्लिक़ कोई पैग़ाम, दुआ़, अ़मली मन्सूबा, (इन्फ़िरादी या इज्तिमाई) मुख़्तसर तौर पर लिखिए।
जवाब:

सवाल-1: हम बा-इ़ज़्ज़त ज़िंदगी किस तरह़ गुज़ार सकते हैं?
जवाब:

सवाल-3: फ़ेक़रों **(Phrases)** के मआ़नी लिखिए?

जवाब: وَلَتَجِدَنَّهُمْ اَحْرَصَ النَّاسِ .....

وَمِنَ الَّذِيْنَ اَشْرَكُوْا.....

يَوَدُّ اَحَدُهُمْ لَوْ يُعَمَّرُ اَلْفَ سَنَةٍ.....

وَاللّٰهُ بَصِيْرٌ بِمَا يَعْمَلُوْنَ.....

सवाल-4: नीचे दिए गए अस्मा व अफ़्आ़ल के टेबल को मुकम्मल कीजिए:

मआ़नी	काम का नाम	اسم مفعول	اسم فاعل	فعل امر	فعل مضارع	فعل ماضٍ	माद्दा व कोड	तकरार
						بَصُرَ	ب ص ر / ک	66
						عَمِلَ	ع م ل / س	319
						وَجَدَ	و ج د / وع	107
						وَدَّ	و د د / مس	25
						أَشْرَكَ	ش ر ك / أس+	120
						عَمَّرَ	ع م ر / عل+	6

मआ़नी	जमा	वाह़िद
		حَرِيْص
		أَلْف

www.understandquran.com

कुरआन सफ़्हा 14c जिब्रील अ़लैहिस्सलाम से दुश्मनी (अल–बक़रा:97-99)

सवाल-1: इशारे **(pointer)** से मुतअ़ल्लिक़ कोई पैग़ाम, दुआ़, अ़मली मन्सूबा, (इन्फ़िरादी या इज्तिमाई) मुख़्तसर तौर पर लिखिए।
जवाबः

सवाल-1: बनीइसराईल हज़रत जिब्रील अ़लैहिस्सलाम से क्यों दुश्मनी रखते थे।
जवाबः

सवाल-3: फ़ेक़रों **(Phrases)** के मआ़नी लिखिए?

जवाबः وَّبُشْرٰى لِلْمُؤْمِنِيْنَ..

सवाल-4: नीचे दिए गए अस्मा व अफ़्आ़ल के टेबल को मुकम्मल कीजिएः

मआ़नी	काम का नाम	اسم مفعول	اسم فاعل	فعل امر	فعل مضارع	فعل ماضٍ	माद्दा व कोड	तकरार
						أَذِنَ	أ ذ ن سـ	60
						فَسَقَ	ف س ق ذ	54
						نَزَّلَ	ن ز ل علا+	79
						صَدَّقَ	ص د ق علا+	31
						اٰمَنَ	أ م ن أسـ+	818
						أَنْزَلَ	ن ز ل أسـ+	190

मआ़नी	जमा	वाहिद
		عَدُوّ
		قَلْب
	مَلَائِكَة	
	رُسُل	
	اٰيَات	
	بَيِّنَات	

www.understandquran.com

कुरआन सफ़्हा 14d अ़हद व किताब को फेंका (अल-बक़राः100-101)

सवाल-1: इशारे **(pointer)** से मुतअ़ल्लिक़ कोई पैग़ाम, दुआ़, अ़मली मन्सूबा, (इन्फ़िरादी या इज्तिमाई) मुख़्तसर तौर पर लिखिए।
जवाबः

सवाल-1: किताब को पीठ के पीछे फेंकने का क्या मतलब है?
जवाबः

सवाल-3: फ़ेक़रों **(Phrases)** के मआ़नी लिखिए?

जवाबः عٰهَدُوْا عَهْدًا .....

نَّبَذَهٗ فَرِيْقٌ مِّنْهُمْ .....

كِتٰبَ اللّٰهِ وَرَآءَ ظُهُوْرِهِمْ .....

सवाल-4: नीचे दिए गए अस्मा व अफ़्आ़ल के टेबल को मुकम्मल कीजिएः

तकरार	माद्दा व कोड	फ़ेल माज़ी	फ़ेल मुज़ारे	फ़ेल अम्र	इस्म फ़ाइल	इस्म मफ़ऊल	काम का नाम	मआ़नी
35	ع ه د / سـ	عَهِدَ						
10	ن ب ذ / ضـ	نَبَذَ						
518	ع ل م / سـ	عَلِمَ						
277	ج ي أ / زا	جَاءَ						
11	ع ه د / حا+	عَاهَدَ						
818	أ م ن / أسـ+	اٰمَنَ						
31	ص د ق / علـ+	صَدَّقَ						
274	أ ت ي / أسـ+	اٰتٰى						

वाहिद	जमा	मआ़नी
عَهْد		
فُرَقَاء		
كُتُب		
ظُهُوْر		

www.understandquran.com

कुरआन सफ़्हा 15a शयातीन की पैरवी (अल-बक़राः102)

सवाल-1: इशारे **(pointer)** से मुतअ़ल्लिक़ कोई पैग़ाम, दुआ़, अ़मली मन्सूबा, (इन्फ़िरादी या इज्तिमाई) मुख़्तसर तौर पर लिखिए।
जवाबः

सवाल-2: ह़ज़रत सुलैमान अ़लैहिस्सलाम के ज़माने में कौन सी चीज़ आ़म हो चुकी थी और ह़ज़रत सुलैमान अ़लैहिस्सलाम ने उसे किस तरह़ ख़त्म फ़रमाया था?
जवाबः

सवाल-3: फ़ेक़रों **(Phrases)** के मआ़नी लिखिए?

जवाबः وَاتَّبَعُوْا مَا تَتْلُوا الشَّيٰطِيْنُ.....

يُعَلِّمُوْنَ النَّاسَ السِّحْرَ ۚ .....

وَمَآ اُنْزِلَ عَلَى الْمَلَكَيْنِ بِبَابِلَ.....

सवाल-4: नीचे दिए गए अस्मा व अफ़्आ़ल के टेबल को मुकम्मल कीजिएः

तकरार	माद्दा व कोड	फ़अ़ल माज़ी	फ़अ़ल मुज़ारे	फ़अ़ल अम्र	इस्म फ़ाअ़िल	इस्म मफ़्अ़ूल	काम का नाम	मआ़नी
97	م ل ك ض	مَلَكَ						
465	ك ف ر ذ	كَفَرَ						
49	س ح ر ف	سَحَرَ						
59	ف ت ن ض	فَتَنَ						
63	ت ل و دع	تَلَا						
1719	ق و ل قا	قَالَ						
140	ت ب ع اِخ+	اِتَّبَعَ						
42	ع ل م عل+	عَلَّمَ						
190	ن ز ل أس+	أَنْزَلَ						

वाह़िद	जमा	मआ़नी
شَيْطَان		
سِحْر		
مَلَك		
فِتْنَة		

www.understandquran.com

जोड़ों में जूदाई (अल-बक़राः102)

सवाल-1: इशारे **(pointer)** से मुतअ़ल्लिक़ कोई पैग़ाम, दुआ़, अ़मली मन्सूबा, (इन्फ़िरादी या इज्तिमाई) मुख़्तसर तौर पर लिखिए।
जवाबः

सवाल-2: फ़रिश्तों की जानिब से तन्बीह के बावजूद बनीइसराईल ने किस चीज़ को सीखना पसंद किया?
जवाबः

सवाल-3: फ़ेक़रों **(Phrases)** के मआ़नी लिखिए?

जवाबः يُفَرِّقُوْنَ بِهٖ بَيْنَ الْمَرْءِ وَزَوْجِهٖ .....

وَمَا هُمْ بِضَآرِّيْنَ بِهٖ .....

وَيَتَعَلَّمُوْنَ مَا يَضُرُّهُمْ وَلَا يَنْفَعُهُمْ .....

सवाल-4: नीचे दिए गए अस्मा व अफ़्आ़ल के टेबल को मुकम्मल कीजिएः

मआ़नी	काम का नाम	اسم مفعول	اسم فاعل	فعل امر	فعل مضارع	فعل ماضٍ	माद्दा व कोड	तकरार
						أَذِنَ	أ ذ ن / سـ	60
						نَفَعَ	ن ف ع / ف	42
						ضَرَّ	ض ر ر / ظ ن	50
						تَعَلَّمَ	ع ل م / تد+	2
						فَرَّقَ	ف ر ق / عل+	10

मआ़नी	जमा	वाहिद
		زَوْج

www.understandquran.com

जानते बूझते बूरा सौदा (अल-बक़राः102-103)

सवाल-1: इशारे **(pointer)** से मुतअ़ल्लिक़ कोई पैग़ाम, दुआ़, अ़मली मन्सूबा, (इन्फ़िरादी या इज्तिमाई) मुख़्तसर तौर पर लिखिए।
जवाबः

सवाल-1: ईमान और तक़्वा किस चीज़ का सबब बनते हैं।
जवाबः

सवाल-3: फ़ेक़रों **(Phrases)** के मआ़नी लिखिए?

जवाबः مَا لَهٗ فِى الْاٰخِرَةِ مِنْ خَلَاقٍ .....

شَرَوْا بِهٖٓ اَنْفُسَهُمْ ط .....

اللّٰهِ خَيْرٌ ط لَّمَثُوْبَةٌ مِّنْ عِنْدِ .....

सवाल-4: नीचे दिए गए अस्मा व अफ़्आ़ल के टेबल को मुकम्मल कीजिएः

मआ़नी	काम का नाम	اسم مفعول	اسم فاعل	فعل امر	فعل مضارع	فعل ماضٍ	माद्दा व कोड	तकरार
						عَلِمَ	ع ل م / سـ	518
						شَرٰى	ش ر ي / هد	4
						كَانَ	ك و ن / قا	1358
						اِشْتَرٰى	ش ر ي / اِخ+	21
						اٰمَنَ	أ م ن / أسـ+	818
						اِتَّقٰى	و ق ي / اِخ+	216

मआ़नी	जमा	वाहिद
		نَفْس

www.understandquran.com

कुरआन सफ़्हा 15d رَاعِنَا मत कहो! (अल-बक़रा:104-105)

सवाल-1: इशारे **(pointer)** से मुतअ़ल्लिक़ कोई पैग़ाम, दुआ, अ़मली मन्सूबा, (इन्फ़िरादी या इज्तिमाई) मुख़्तसर तौर पर लिखिए।
जवाबः

सवाल-2: इस सबक़ में यहूदीयों की किस बद-अख़लाक़ी का ज़िक्र किया गया है।
जवाबः

सवाल-3: फ़ेक़रों **(Phrases)** के मआ़नी लिखिए?

जवाबः لَا تَقُوْلُوْا رَاعِنَا ....

وَاللّٰهُ يَخْتَصُّ بِرَحْمَتِهٖ مَنْ يَّشَآءُ..

सवाल-4: नीचे दिए गए अस्मा व अफ़आ़ल के टेबल को मुकम्मल कीजिए:

मआ़नी	काम का नाम	اسم مفعول	اسم فاعل	فعل امر	فعل مضارع	فعل ماضِ	माद्दा व कोड	तकरार
						نَظَرَ	ن ظ ر / ذ	95
						سَمِعَ	س م ع / سـ	147
						كَفَرَ	ك ف ر / ذ	465
						عَظُمَ	ع ظ م / ک	107
						قَالَ	ق و ل / قا	1719
						وَدَّ	و د د / مسـ	25
						شَاءَ	ش ي أ / خا	236
						اٰمَنَ	أ م ن / أسـ+	818
						أَشْرَكَ	ش ر ك / أسـ+	120
						نَزَّلَ	ن ز ل / علـ+	79
						اِخْتَصَّ	خ ص ص / إخـ+	2

मआ़नी	जमा	वाहिद
		فَرِيْقٌ

www.understandquran.com

वर्कबुक–सबक़: 11a तआ़रूफ़ और ज़मायर (मोअन्नस)

सवाल-1: गुज़िश्ता कोर्सेस में हम ने ग्रामर के तह़त क्या सीखा था और इस कोर्स में हम क्या सीखेंगे?
जवाब:

सवाल-2: أَنْتُمْ और का هُمْ का मुअ़न्नस क्या होगा?
जवाब:

सवाल-3: ''उन सब औ़रतों का रब'' की अ़रबी क्या होगी?
जवाब:

सवाल-4: नीचे दिए गए टेबल को मुकम्मल कीजिए:

رَبُّنَا		رَبِّيْ			رَبُّهَا

वर्कबुक–सबक़: 11b फ़ेअ़ल माज़ी, माज़ी, मुज़ारे, अम्र बराए मोअन्नस (3 हर्फ़ी अफ़्आ़ल)

सवाल-1: नीचे दिए गए सवालात के जवाबात लिखिए:

- अ़रबी बनाईए — क्या तुम सब औ़रतों ने भलाई की?
- हिंदी में तर्जमा कीजिए — نَعَمْ، أَفْعَلُ خَيْرًا
- अ़रबी में (हाँ) में जवाब दें — هَلْ تَفْعَلِيْنَ خَيْرًا؟

सवाल-1: "فَعَلَ" से फ़ेअ़ल मोअन्नस का पूरा टेबल लिखिए।

فعل ماضٍ (مؤنث)	فعل مضارِع (مؤنث)	فعل أَمر، فعل نهي (مؤنث)

www.understandquran.com

वर्कबुक–सबक़: 11c फ़ेअ़ल माज़ी, माज़ी, मुज़ारे, अम्र बराए मोअन्नस (मज़ीद फ़ीह अफ़्आ़ल)

सवाल-1: नीचे दिए गए सवालात के जवाबात लिखिए:

- अ़रबी बनाईए — क्या उन सब औ़रतों ने अल्लाह का हुक्म माना?
- हिंदी में तर्जमा कीजिए — نَعَمْ، يُسْلِمْنَ لِلّٰهِ
- अ़रबी में जवाब दें — هَلْ تُسْلِمْنَ لِلّٰهِ؟

सवाल-1: " أَسْلَمَ " से फ़ेअ़ल मोअन्नस का पूरा टेबल लिखिए।

فعل ماضٍ (مؤنث)	فعل مضارِع (مؤنث)	فعل أمر، فعل نهي (مؤنث)

वर्कबुक–सबक़: 11d दो के लिए सेग़े (ज़मायर और फ़ेअ़ले माज़ी)

सवाल-1: नीचे दिए गए सवालात के जवाबात लिखिए:

- अ़रबी बनाईए: उन दोनों का रब अल्लाह है
- हिंदी में तर्जमा कीजिए: مَنْ رَبُّكُمَا؟
- अ़रबी में (हाँ) में जवाब दें: هَلْ فَعَلْتُمَا خَيْرًا؟

सवाल-2: नीचे दिए गए टेबल में ख़ाली जगहों में मुनासिब हिंदी या अ़रबी लफ़्ज़ लिख कर उन्हें पुर कीजिए:

	वह दोनों
	رَبُّهُمَا
	आप दोनों ने किया
	أَنْتُمَا
	فَعَلَا
	आप दोनों का रब

www.understandquran.com

वर्कबुक–सबक़: 12a   दो के लिए सेग़े: فعل مضارع، أمر ونهي، اسم فاعل ومفعول

सवाल-1: नीचे दिए गए सवालात के जवाबात लिखिए:

- अ़रबी बनाईए: क्या वह दोनों नेक काम करते हैं?
- हिंदी में तर्जमा कीजिए: نَعَمْ! نَفْعَلُ خَيْرًا.
- अ़रबी में (हाँ) में जवाब दें:   هَلْ أَنْتُمَا نَاصِرَانِ؟

सवाल-2: فَعَلَ से दो सेग़े लिखिए।

اسم فاعل ومفعول	فعل أمر ونهى	فعل مضارع

वर्कबुक–सबक़: 12b   फ़अ़ले मजहूल

सवाल-1: नीचे दिए गए सवालात के जवाबात लिखिए:

- अ़रबी बनाईए: क्या तुम लोगों को रिज़्क़ दिया जाता है?
- हिंदी में तर्जमा कीजिए: نَعَمْ رُزِقْتُ
- अ़रबी में (हाँ) में जवाब दें:   هَلْ رُزِقْتُمْ؟

सवाल-2: سَمِعَ और أَنْزَلَ से फ़ेअ़ले मजहूल का मुकम्मल टेबल लिखिए।

فعل مجهول (مزيد فيه فعل)		فعل مجهول (تين حرفى فعل)	
يُنْزَلُ	أُنْزِلَ	يُسْمَعُ	سُمِعَ

www.understandquran.com

वर्कबुक–सबक़: 12c   كَرُمَ، حَسِبَ का वज़न

सवाल-1: नीचे टेबल में कुछ अफ़आल दिए गए हैं, उनकी छः चाबीयाँ और तर्जमा लिखिए:

तर्जमा	काम का नाम	اسم مفعول	اسم فاعل	فعل أمر	فعل مضارع	فعل ماضٍ
						حَكُمَ
						بَصُرَ
						بَعُدَ

सवाल-2: كَرُمَ ही की तरह عَظُمَ (वह अ़ज़ीम हुआ) का पूरा टेबल लिखिए और फिर उसकी छः चाबीयों पर दायरा लगाईए। तर्जमा लिखने की ज़रूरत नही।

فعل أمر، نهى **اسم فاعل، اسم مفعول،** काम का नाम
عِظَم، عَظَامَة

فعل مضارِع	**فعل ماضٍ**
	عَظُمَ

वर्कबुक–सबक़: 12d   इस्मे मकान

सवाल-1: नीचे दिए गए सवालात के जवाबात लिखिए:

- इस्मे मकान के तीनों क़वायद (औज़ान) कौन कौन से हैं?
- इस्मे मकान की जमा किस वज़न पर आती है?
- इस्मे मकान के तीनों वज़न को याद रखने का आसान सा तरीक़ा क्या है?

सवाल-2: नीचे कुछ अफ़्आल दिए गए हैं, इन का ‘‘इस्मे मकान’’ जमा के साथ लिखिए।

जमा	इस्मे मकान	अफ़्आल
		ذَهَبَ
		دَخَلَ
		شَرَقَ
		سَجَدَ
		دَرَسَ
		مَلَكَ

www.understandquran.com

वर्कबुक–सबक़ः 13a सिफ़त, तफ़ज़ील, मुबालिग़ा के अल्फ़ाज़

सवाल-1: अगर कोई काम करना किसी की सिफ़त ही बन जाए तो उस को बताने के लिए किस वज़न पर लफ़्ज़ आएगा, मिसाल के साथ बताईए।

जवाब:

सवाल-2: अगर किसी के अंदर कोई सिफ़त दूसरों के मुक़ाबले में ज़्यादा हो तो उसके लिए कौन सा वज़न इस्तिमाल होगा, कोई एक मिसाल भी दीजिए।

जवाब:

सवाल-3: नीचे कुछ अल्फ़ाज़ दिए गए हैं, निशान लगा कर बताएँ कि वह लफ़्ज़ क्या है?

تَوَّاب	صِفَة	تَفْضِيْل	مُبَالَغَة	شَكُوْر	صِفَة	تَفْضِيْل	مُبَالَغَة
لَطِيْف	صِفَة	تَفْضِيْل	مُبَالَغَة	فَرِحَان	صِفَة	تَفْضِيْل	مُبَالَغَة
أَمْجَد	صِفَة	تَفْضِيْل	مُبَالَغَة	قُدُّوْس	صِفَة	تَفْضِيْل	مُبَالَغَة

वर्कबुक–सबक़ः 13b जमा तक्सीर (1)

सवाल-1: अ़रबी ज़बान में जमा कितनी क़िस्म की होती है? उन का नाम लिखिए।

जवाब:

सवाल-2: जमा मुकस्सर के चंद औज़ान लिखिए।

जवाब:

सवाल-3: नीचे टेबल में दिए गए अल्फ़ाज़ में से जो वाहिद है उस की जमा लिखिए और जो जमा है उस का वाहिद लिखिए और तर्जमा भी लिखिए।

तर्जमा	वाहिद/जमा	अफ़्आ़ल
		نَفْس
		أَخْيَار
		زَوْج
		قِرْد
		قُلُوْب
		عَهْد
		نِيْرَان
		رَسُوْل
		شُرَكَاء
		عَبْد

www.understandquran.com

वर्कबुक–सबक़: 13c जमा तक्सीर (2)

सवाल-1: अ़रबी में इंसान के अलावा दूसरी चीज़ों की जमा मुकस्सर किस के हुक्म में होती है?
जवाब:

सवाल-2: नीचे कुरआन की चंद आयतें दी गई हैं, इन में टूटी हुई जमा वाले अल्फ़ाज़ और वाहिद मोअन्नस के फ़ेअ़ल के नीचे लाईन लगाइए।

هَلْ اَتٰىكَ حَدِيْثُ الْغَاشِيَةِ ۝1 وُجُوْهٌ يَّوْمَىِٕذٍ خَاشِعَةٌ ۝2 عَامِلَةٌ نَّاصِبَةٌ ۝3

تَصْلٰى نَارًا حَامِيَةً ۝4 تُسْقٰى مِنْ عَيْنٍ اٰنِيَةٍ ۝5

सवाल-3: नीचे दिए गए जुमलों को वाहिद से जमा में तबदील कीजिए:

	بَيْتٌ وَاسِعٌ
	كِتَابٌ جَدِيْدٌ
	اَلْبَيْتُ الَّذِيْ---
	هٰذَا كِتَابٌ
	اَلْكِتَابُ الَّذِيْ ---

वर्कबुक–सबक़: 13d لَمْ+ مُضَارِع तीन हर्फ़ी अफ़्आल के साथ

सवाल-1: नीचे दिए गए सवालात के जवाबात लिखिए:

- अ़रबी बनाईए: क्या तुम ने नही किया?
- हिंदी में तर्जमा कीजिए: فَاِنْ لَّمْ تَفْعَلُوْا وَلَنْ تَفْعَلُوْا
- अ़रबी में (नहीं) में जवाब दें: أَلَمْ يَقُوْلُوْا؟

सवाल-2: नीचे दिए गए टेबल को मुकम्मल कीजिए:

لَمْ يَهْدِ	لَمْ يَقُلْ	لَمْ يَنْصُرْ	لَمْ يَفْتَحْ

www.understandquran.com

वर्कबुक–सबक़: 14a لَمْ+ مُضَارع मज़ीद फ़ीह अफ़्आल के साथ

सवाल-1: नीचे दिए गए सवालात के जवाबात लिखिए:

- अ़रबी बनाईए: क्या हम ने नहीं सिखाया?
- हिंदी में तर्जमा कीजिए: ءَاَنْذَرْتَهُمْ اَمْ لَمْ تُنْذِرْهُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ
- अ़रबी में (नही) में जवाब दें: أَلَمْ يُرِيْدُوْا؟

सवाल-2: أَفْعَال خَمْسَة कौन कौन से हैं?

जवाब:

सवाल-3: नीचे दिए गए टेबल को मुकम्मल कीजिए:

لَمْ يُرِدْ	لَمْ يُسْلِمْ

वर्कबुक–सबक़: 14b शर्तिया अल्फ़ाज़: إِنْ، مَنْ، مَا، तीन हर्फ़ी अफ़्आल के साथ

सवाल-1: फ़ेअ़ल मुज़ारे के शर्तिया जुमलों में शर्तिया अल्फ़ाज़ की वजह से क्या असर होता है?

जवाब:

सवाल-2: इस जुमले की अ़रबी बनाईए ''अगर आप सब वादा करेंगे तो हम सब वादा करेंगे''।

जवाब:

सवाल-3: इस जुमले का अ़रबी तर्जमा कीजिए ''अगर आप वादा करेंगे तो मैं वादा करूँगा''।

जवाब:

सवाल-4: इस जुमले का हिंदी में तर्जमा कीजिए "إِنْ تَدْعُ أَدْعُ"।

जवाब:

www.understandquran.com

वर्कबुक–सबक़: 14c शर्तिया अल्फ़ाज़: إِنْ، مَنْ، مَا، मज़ीद फ़ीह अफ़आल के साथ

सवाल-1: हिंदी में तर्जमा कीजिए: "إِنْ تَتَّقِ اللهَ تُفْلِحْ"
जवाब:

सवाल-2: इस जुमले की अ़रबी बनाईए: ''अगर आप इख़्तिलाफ़ करेंगे तो मैं चला जाऊँगा''।
जवाब:

सवाल-3: क्या शर्तिया जुमलों के दूसरे हिस्से में फ़ेअ़ल मुज़ारे का आना ज़रूरी है?
जवाब:

वर्कबुक–सबक़: 14d फ़ेअ़ल मुज़ारे के साथ "ل" की क़िसमें

सवाल-1: इस सबक़ में लाम की कितनी क़िस्में ब्यान की गई हैं ? उन के नाम बताईए।
जवाब:

सवाल-2: हिंदी में तर्जमा कीजिए: "لَيَنْصُرَنَّ"

जवाब:

सवाल-3: नीचे दिए गए टेबल को मुकम्मल कीजिए। आप की आसानी के लिए पहला लफ़्ज़ लिख दिया गया है।

يَفْعَلُ	لَمْ يَفْعَلْ	لَنْ يَّفْعَلَ	لَيَفْعَلَنَّ

www.understandquran.com

वर्कबुक–सबक़: 15a لن+مضارع तीन ह़र्फ़ी अफ़्आल के साथ

सवाल-1: ''يَفْعَلُوْنَ'' और ''تَفْعَلُوْنَ'' पर ''لَنْ'' के आने से किस तरह़ की तबदीली होती है?

जवाब:

सवाल-2: नीचे दिए गए अफ़्आ़ल के शुरूअ़ में ''لَنْ'' बढ़ा कर उन में होने वाली तबदीलीयों के साथ लिखिए:

لَنْ के साथ	फ़ेअ़ल की असल ह़ालत
	يَقُوْلُوْنَ
	نَأْتِيْ
	تَسْمَعُ
	تَفْعَلُوْنَ
	نَقُوْلُ

वर्कबुक–सबक़: 15b لن+مضارع मज़ीद फ़ीह अफ़्आल के साथ

सवाल-1: नीचे दिए गए अफ़्आ़ल के टेबल को मुकम्मल कीजिए:

لَنْ يَّخْتَلِفَ	لَنْ يُّؤْتِيَ

सवाल-2: क़ैंची और हथौड़ी वाले अल्फ़ाज़ (जो फ़ेअ़ल मुज़ारे के आख़िरी ह़र्फ़ को ज़बर या जज़्म देते हैं) नीचे दिए गए हैं, उन्हें उन के मुनासिब ख़ाने में लिखिए:

हथौड़ी वाले अल्फ़ाज़	क़ैंची वाले अल्फ़ाज़	अल्फ़ाज़
		لِـ، لَـمْ، أَنْ، لَـمَّا، إِنْ، لَ – نَّ، أَلَّا، وَلِـ، مَنْ، مَا، فَلِـ، لَنْ، لِـ

www.understandquran.com

वर्कबुक–सबक़: 15c जुमला इस्माया (मुज़क्कर)

सवाल-1: नह्व और सर्फ़ की आसान सी तारीफ़ लिखिए:
जवाब:

सवाल-2: जुमला इस्मीया (جمله اسميه) किसे कहते हैं, मिसाल के साथ लिखिए:
जवाब:

सवाल-3: इस्म की असल ह़ालत क्या होती है और उस में किस बात का इशारा होता है?
जवाब:

सवाल-4: नीचे के जुमलों का हिंदी में तर्जमा कीजिए।

	اَلْمُسْلِمُ صَادِقٌ
	اَلْمُؤْمِنُ صَالِحٌ

	اَللّٰهُ غَفُوْرٌ
	اَلْبَيْتُ كَبِيرٌ

वर्कबुक–सबक़: 15d जुमला इस्माया (मोअन्नस)

सवाल-1: नीचे के जुमलों को मोअन्नस बना कर लिखिए।

	اَلْمُسْلِمُ صَادِقٌ
	اَلْمُؤْمِنُ صَالِحٌ
	اَلْمُنَافِقُ فَاسِقٌ

सवाल-2: नीचे दिए गए जुमलों का तर्जमा लिखिए:

	اَلْجِبَالُ كَبِيْرَةٌ
	اَلْمَسْجِدُ قَدِيْمٌ
	اَلْمُؤْمِنَاتُ صَالِحَاتٌ
	اَلْبَيْتُ جَدِيْدٌ
	اَلْمَسَاجِدُ قَدِيْمَةٌ

www.understandquran.com

www.understandquran.com

सर्फ़ के अस्बाक़

	فعل ماضٍ	فعل مضارع	فعل أمر	فعل نهي	اسم فاعل	اسم مفعول
मुअन्नस के सेग़े (هِيَ وَرَبُّهَا) (3 हुरूफ़ वाले व मज़ीद फ़ीह)	فَعَلَتْ	تَفْعَلُ	اِفْعَلِي	لَا تَفْعَلِي	فَاعِلَة	مَفْعُوْلَة
	أَسْلَمَتْ	تُسْلِمُ	أَسْلِمِي	لَا تُسْلِمِي	مُسْلِمَة	مُسْلَمَة
दो के सेग़े (هُمَا، رَبُّهُمَا)	فَعَلَا	يَفْعَلَان	اِفْعَلَا	لَا تَفْعَلَا	فَاعِلَانِ	مَفْعُوْلَان
मजहूल के सेग़े (3 हुरूफ़ वाले व मज़ीद फ़ीह)	سُمِعَ	يُسْمَعُ				
	أُنْزِلَ	يُنْزَلُ				
كَرُمَ के सेग़े	كَرُمَ	يَكْرُمُ	أُكْرُمْ	لَا تَكْرُمْ	كَرِيم	–

إِسْم مكَان			إِسْم صِفَة		إِسْم تَفْضِيل	إِسْم مُبَالَغَة			جَمْع تَكْسِير			
مَفْعَل	مَفْعِل	مَفْعَلَة	فَعِيْل	فَعْلَان	فَعِيْل ← أَفْعَل	فَعَّال	فَعُول	فَعُّول	أَفْعَال	فُعُوْل	فُعَلَاء	فُعُل
مَخْرَج	مَسْجِد	مَدْرَسَة	كَرِيْم	كَسْلَان	كَبِيْر ← أَكْبَر	غَفَّار	شَكُوْر	قَيُّوم	أَسْمَاء	قُلُوْب	شُرَكَاء	رُسُل

नहव के अस्बाक़ (फ़ेअ्ले मुज़ारे की तब्दीलियाँ)

لَمْ وَشَرْط، لـ - امَات وَلَن

यह तो आप को मालूम है: **لَا تَفْعَلْ شَرًّا**

जो कोई **لَمْ يَفْعَلْ خَيْرًا** — لَمْ، لَمَّا، لَا (نَاهِية)، ...

إِنْ يَّفْعَلْ، يَكْسِبْ أَجْرًا — إِنْ، مَنْ، مَا، ...

فَلْيَفْعَلْ خَيْرًا — لْـ

لَامَات: لْـ ، لِـ ، لَـ

इंसान को पैदा किया गया **لِيَفْعَلَ خَيْرًا** — لِـ

एक अच्छा इंसान **لَيَفْعَلَنَّ خَيْرًا** — لَـ

और एक बुरा इंसान **لَنْ يَّفْعَلَ خَيْرًا** — لَنْ، أَنْ، حَتّٰى، ...

www.understandquran.com

आओ कुरआन पढ़ें - आसान तरीक़े से

(बच्चों और बड़ों के लिए)

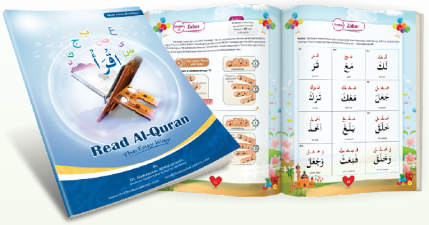

- अ़रबी हुरूफ़, ह़रकात और उसूले तज्वीद (क़वायद) की तालीम तख़लीक़ी अंदाज़ में
- मसरूफ़ लोगों के लिए कम वक़्त में सीखने का बेहतरीन मौक़ा
- जदीद साइंसी अंदाज़ को इस्तेमाल करते हुए मुशकिल नज़रियात की आसान तालीम

आओ कुरआन समझें - आसान तरीक़े से

(निहायत दिलचस्प और आसान तर्ज़े तालीम)

कोर्स: 1	(20 घण्टे) आओ कुरआन समझें (7 सूरतें और नमाज़ के अज़्कार)	ज़मायर, हुरूफ़े जर और फ़ेअ़ल सुलासी सह़ीह़	50% कुरआनी अल्फ़ाज़*
कोर्स: 2	(20 घण्टे) – अल-बक़रा (आयात: 1-37)	फ़ेअ़ल सुलासी मोअ़तल	80% कुरआनी अल्फ़ाज़*
कोर्स: 3	(20 घण्टे) – अल-बक़रा (आयात: 38-76)	फ़ेअ़ल सुलासी मज़ीद फ़ीह	90% कुरआनी अल्फ़ाज़*
कोर्स: 4	(20 घण्टे) – अल-बक़रा (आयात: 77-105)	इज़ाफ़ी सर्फ़ और नह्व का तआ़रूफ़	90% से ज़ायद*
कोर्स: 5	(20 घण्टे) – अल-बक़रा (आयात: 106-141)	नह्व के बुनियादी क़वायद	90% से ज़ायद*

*फ़ीसद की यह तक़सीम उस वक़्त दुरूस्त शुमार होगी जब कि सूरतुल बक़रा और उसके बाद वाली सूरतों की तालीम जारी रखी जाए।

स्कूली निसाब

- दुनिया भर के बहुत से स्कूलों में दाख़िले निसाब
- तक़रीबन दो लाख से ज़ायद मुस्तफ़ीद तलबा
- नर्सरी से दसवीं जमाअ़त तक का निसाब

कुरआन की ऑनलाइन पर्सनल क्लासेस

घर बैठे आसानी के साथ कुरआन सीखने का बेहतरीन मौक़ा

- इंग्लिश, उर्दू, तमिल, और बंगाली वग़ैरह ज़ुबानों में पढ़ाने के लिए मुस्तनद और क़ाबिल असातिज़ा मौजूद
- आसान निसाब और सहूलत बख़्श शेड्यूल
- साइंसी तरीक़ों के इस्तेमाल और याद-दाश्त के लिए मुफ़ीद तकनीक के साथ
- तदरीस के लिए मुआ़विन चीज़ों का इस्तेमाल
- तलबा की रोज़ाना की कारकर्दगी का जायज़ा और फ़ीडबैक
- कोर्स की तकमील पर सनद

100+ से ज़ायद ट्रेनर्स

2000+ से ज़ायद रजिस्टर्ड तलबा

50000+ से ज़ायद क्लासेस की तकमील

मुअल्लिफ़ के बारे में

डा० अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ अ़ब्दुर्रहीम ने अपनी 25 साला तह़क़ीक़ात व तजर्बात की बुनियाद पर कुरआनी निसाब की एक सीरीज़ "आओ कुरआन पढ़े आसान तरीक़े से और तज्वीद के साथ" और "आओ कुरआन समझें आसान तरीक़े से" तैयार की है जो दुनिया भर के बहुत से स्कूलों में दाख़िले निसाब है। यह किताब बड़ी उम्र के लोगों के मेयार के मुताबिक़ भी तैयार की गई है। उन्होंने इन कोर्सेज़ को अब तक 10 मुल्कों मे पेश किया है और इन के प्रोग्राम नेशनल व इण्टरनेशनल टीवी पर भी नश्र किए जाते हैं। इन किताबों का 20 से ज़ायद ज़ुबानों में तर्जमा किया जा चुका है।

Plot No. 13-6-434/B/41, 2nd Floor, Omnagar, Langar House, Hyderabad - 500 008. Telangana - INDIA
Phone Nos: +91- 9652 430 971 /+91-40-2351 1371
Website: www.understandquran.com I Email: info@understandquran.com

INR 99/-